मेरी टाइमपास आत्मकथा

जियो तो बिंदास जियो

भाग-1 (2012)

लेखक

दिनश सोलंकी

प्रिय पाठक प्रकाशन

71, माल रोड, महू छावनी (आंबेडकर नगर), जिला इंदौर (म.प्र.)

₹ 100

प्रथम संस्करण : अप्रैल, 2012
पृष्ठ : 108

मेरी टाइम पास आत्मकथा

जियो तो बिंदास जियो

प्रिय पाठक प्रकाशन
71, माल रोड, महू छावनी (आंबेडकर नगर), जिला इंदौर (म.प्र.)
फोनः 07324-277555, मोबा. 9826013941

मुद्रकः **अरणा पेपर एण्ड प्रिंटर्स,** 350/5, नेहरू नगर, इंदौर (म.प्र.)

डिजाइनः राहुल ग्राफिक्स, इंदौर (म.प्र.), मोबा. 9926700795

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के संबंध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा, जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे-खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे।

अनुक्रमणिका

संक्षिप्त परिचय

नाम	**दिनेश सोलंकी**
पिता	श्री मूलचंद सोलंकी
पता	71, माल रोड, महू (मध्यप्रदेश)
जन्म	30 जुलाई 1957, स्थानः महू मध्यप्रदेश
शिक्षा	एम. काम., एलएल.बी.
वैवाहिक स्थिति	एक पत्नि, दो बेटे
वर्तमान	सम्पादक/प्रकाशक साप्ताहिक प्रिय पाठक, स्वतंत्र पत्रकार भागीदार-मॉडर्न लॉण्ड्री, इंदौर संयोजक, महू सांस्कृतिक मंच, महू

अनुभव

1. अभिनय
- रंगमंच पर 1978 से सक्रिय, कई नाटकों का मंचन, निर्देशन, लेखन, अभिनय।
- रेडियो पर केजुअल अनाउंसर एवं बी ग्रेड आर्टिस्ट की पात्रता।
- टीवी पर दो सीरियल जी हॉरर शो व सास बड़ी या बहू में अभिनय।
- फीचर फिल्म सावधान 1991 और गुनाहगार 1996 में अभिनय।

2. पत्रकारिता ।
- 1979 से लगातार पत्र-पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखन।
- दैनिक भास्कर, नवभारत, फ्री प्रेस, आदि में महू संवाददाता रहे।
- फेसबुक पर सक्रियता।

3. महाविद्यालय स्तर पर दस से अधिक रासेयो शिविरों में भाग
   हस्तलिखित अखबार का प्रकाशन।
4. फोटोग्राफर, कवि, गायक और चित्रकार (सभी शौकियाना)।
5.टेनिस और कैरम खिलाड़ी।

उपलब्धि
- श्रेष्ठ पत्रकारिता में कई बार पुरस्कृत।
- हास्य नाटकों की किताब '21 वीं सदी की पुलिस' का प्रकाशन 1998 में।
- श्रेष्ठ फोटोग्राफी का पुरस्कार।
- विदेश यात्रा पूरे एक साल सैशल्स आयलैन्ड पर।
- फेसबुक पर 1500 से अधिक मित्रगण।
- अब अपनी आत्मकथा पुस्तक 'जियो तो बिंदास जियो' का प्रकाशन।

पात्रता
- राज्य स्तरीय अधिमान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार।
- सदस्यः इंदौर प्रेस क्लब, इंदौर।

जीवन के पसंदीदा विषय
- क्राइम, सोशल, इंटरटेनमेंट और स्पेशल रिपोर्टिंग।
- अभिनय में हास्य और व्यंग्य को प्राथमिकता।
- ग्रामीण परिवेश।

मेरी बात

लेखक
दिनेश सोलंकी

अक्सर वे लोग आत्मकथाएं लिखते हैं जो अपने जीवन को महत्वपूर्ण अंदाज में जीते हैं। वो लोग भी लिखते है जो जीवन के कटु अनुभव दूसरों को बताकर अपने भीतर के अंतर्द्वंद को बाहर निकालने का प्रयास करते हैं। लेकिन मैं थोड़ा लीक से हटकर इस आत्मकथा को लिख रहा हूं। मैं महसूस करता हूं कि मैंने अब तक का अपना जीवन बिंदास जिया है जिसमें उम्र का कभी भी अहसास नहीं हुआ। मैं इस समय 55 पार कर रहा हूं। हांलाकि अभी उम्र नहीं हुई है कि आत्मकथा लिखूं लेकिन मन हो रहा है कि अब तक के तमाम अनुभवों और खट्टे मीठे जीवन के रंग को आपके समक्ष रखूं। हो सकता है कि मेरे अच्छे अनुभव आपके भी काम आ सके। इसलिये मैंने सोचा कि क्यों न मैं भी एक आत्मकथा का पहला भाग लिखूं.... इसका दूसरा भाग वाकई ढलती उम्र में ही लिखूंगा यदि ईश्वर की कृपा रही तो।

फारेस्ट के महू एसडीओपी ओ पी शर्मा एक दिन मेरे घर पर चाय पीने पहली बार आए, बातों ही बातों में जब मैंने कहा कि मैं आत्मकथा लिख रहा हूं तो वे हैरान होकर बोले–अभी तुम्हारी उम्र नहीं है आत्मकथा लिखने की। जब मैंने उन्हें अपनी उम्र बताई तो वे चौंक गए। कहने लगे सच बताओ 53 या 35 ? मैं हंस दिया। मन ही मन खुशी भी हुई कि मुझसे उम्र में 5–7 साल बड़े श्री शर्मा मुझे अपने से कितना छोटा समझ रहे हैं। अक्सर जब कार से इन्दौर जाता हूं तो रास्ते में विद्यार्थियों को मैं कभी–कभार लिफ्ट दे देता हूं। उनसे उनकी पढ़ाई और पारिवारिक जानकारी लेने के बाद मैं रास्ते भर मनोरजंन बतौर वार्तालाप करता हूं। जब कभी मैं उनसे अपनी उम्र पूछता हूं तो अधिकांश विद्यार्थी मुझे 35 से 40 के बीच पाते हैं। फिर मैं मुस्कराकर उन्हें अपनी सही उम्र बताकर हैरान करता हूं। यह भी टिप्स देता हूं कि यदि जीवन में तनाव से जिओगे तो उम्र समय से पहले बूढ़ा बना देगी। इसलिये हमेशा मस्त और तनाव मुक्त जीवन जिओ, स्वस्थ रहो, मनोरंजन मे रहो और बिंदास जीने की आदत डालो।

मैं जानता हूं कि आज के व्यस्त जमाने में किसे क्या पड़ी है जो दूसरों की आत्मकथा को पढ़ने में बेवजह का टाईम बर्बाद करे, इसलिये मैंने अपनी आत्मकथा में उन सभी 56 मसालों की चाट भी शामिल की है जो सत्य घटनाओं पर आधारित है और मनोरंजन के कारण दिलों में गुदगुदी भी करती है। आज भी उन अच्छी घटनाओं और वाकयों को याद करते वक्त मन मेरा प्रसन्न हो जाता है। लेकिन मनोरंजन के साथ साथ जीवन की उन घटनाओं को भी समेटा है जिन्होंने मुझे कडुआ अहसास दिया है और जीने का सबक सिखाया है। पाठकों का टाईमपास हो सके और मनोरंजन के साथ–साथ वें जीवन जीने का मजा भी अनुभव कर सके, ये मेरी आत्मकथा पुस्तक का मकसद है।

54 बसंत पूर्ण करने के बाद का आधा जीवन (यदि मैं 100

साल का जीवन मानूं तो) नई पीढ़ी के साथ कितना आधुनिक और उन्नति का परिचायक होगा या फिर ग्लोबल वार्मिंग के खतरों के चलते कितना भयानक होगा, इसे अनुभव करने की बहुत इच्छा रखता हूं। हरेक के जीवन में दुःख और सुख दो पहलू होते हैं, मेरे जीवन में दुःख सुख के साथ 'घात' भी रहा और 'ठाठ' भी रहा। 'टेंशन' और 'नो टेंशन' दोनों ही एक साईकल के पहिये की तरह साथ चल रहे हैं। जिन्दगी में भले ही मैं पैसों वाला नहीं बन पाया मगर दिलदार जरूर रहा। मुझे पैसा उतना ही मिला जितनी मैंने मेहनत की। आज भी मुझे लगता है कि मैं रोज कुआ खोदता हूं और रोज पानी पीता हूं। मगर मुझे इसका मलाल भी कभी नहीं रहा। संतुष्टी रही, मन को कि कोई गलत कार्य करके पैसा नहीं कमाया। मुट्ठी भर दुश्मन अथवा ईर्ष्यालु प्रतिस्पर्धियों से कहीं ज्यादा मेरे असली प्रशंसक मेरे पाठक, मेरे स्नेही दोस्त और दर्शक समुदाय रहे हैं और रहेंगे। मेरे पास ऐसे दोस्त और हमदर्द भी रहे हैं जो मुझसे अगाध स्नेह रखते हैं और मुझे कठिन समय में मदद करते हैं। स्कूल लाईफ में किशोर खण्डेलवाल, गोविंद सोनी और जुगल अग्रवाल निकटतम दोस्तों में से रहे तो कॉलेज लाइफ में अशोक पंवार, हरजीतसिंह छाबड़ा, योगेश यादव और राबर्ट भारती (अब स्वर्गीय) ही मेरे नजदीकी मित्र रहे। हमारी मित्रता की वजह रंगमंच ही था जिसने हमें एक दूसरे के करीब ला खड़ा कर दिया था। योगेश से दोस्ती रिश्ते में बदल गई। मेरे रंगमंच के दिनों में अच्छे दोस्तों, स्नेहियों में, राजेश बंसल, राजेश शर्मा, संजीव सालोमन, नरेश पाठक, अरूण सोलंकी, आदि रहे हैं। मेरा एक दोस्त राबर्ट फरवरी 2009 में भाजपा नेता अशोक पाटीदार के बालक के विवाह में नाचते हुए दिल का दौरा आने से चल बसा। उसके साथ रंगमंच पर मैंने और योगेश ने कई नाटक किये और अक्सर साथ दिन गुजारे। गोविन्द अभी भी दोस्ती को तवज्जो देता है, मुसीबत में साथ भी देता है। श्री प्रकाश जाजू अशोक पाटीदार, जगदीश यादव डॉ सुरेश यादव, डॉ कुलवंतसिंह शेहरी, श्री मोहनलाल शर्मा, दीपक जाजू नवीन सैनी, विजय सोडानी, महेश माहेश्वरी, राजेश जिन्दल, राकेश अग्रवाल, ओमप्रकाश सांघी, कमल वर्मा, जैसे मेरे कई स्नेहियों की सूची लम्बी है। वरिष्ठ पत्रकारों में आशीर्वाददाता और मित्र भी हैं जिनमें श्री रोमेश जोशी, प्रकाश हिन्दुस्तानी, प्रशांतराय चौधरी, अर्जुन राठौर, कमल दीक्षित, विद्याधर शुक्ला, कीर्ति राणा, चंदा बारगल, नवनीत शुक्ला, आदि स्नेही रहे हैं। 35 साल की पत्रकारिता जिंदगी में कई मित्र और स्नेही बने हैं। नईदुनिया के श्री अभय छजलानी, और (स्व.) शाहिद मिर्जा आशीर्वाददाता के रूप में रहे हैं। इसके अलावा भी मेरे कई प्रशसंक हैं जिन्हें मैं अचानक याद नहीं कर पा रहा हूं, कई मेरे सच्चे हितैषी रहे हैं। दोस्ती में चंद नाम गिनाकर मैं किसी को नाराज करना नहीं चाहता। क्योंकि मैं निश्चित रूप से कुछ अपने मित्रों का नाम लेना भूल रहा हूं जिसका मुझे अफसोस रहेगा। महिला मित्रों में अर्चना, नीति, तापुशी, आभा, रेखा, पम्मी, आदि रहे हैं जो मेरी पत्नी अनुराधा की सहेलियां भी रही हैं। पत्नि हमेशा मार्गदर्शक और हर कदम पर सहयोगी रही है। हमारे भरे पूरे परिवार में मुझे मेरी बहनों निर्मला जीजी, रेखा, अनु, कांता, कुसुम और मीना ने खूब तवज्जो दी। आज भी मैं सभी बहनों की राखी सहर्ष अपनी कलाई पर बांधता हूं। मेरे दो छोटे भाई, दो बहुएं और उनके बच्चे हैं। मेरी दो भाभियां हैं और उनका परिवार है। साथ ही राऊ में रहने वाले अंकल–आंटी और उनका परिवार है। स्नेही मां नहीं रही मगर उनका आशीर्वाद हमेशा साथ रहता है। पिता बूढ़े हो चले हैं मगर उनका स्नेह और सानिध्य भी बना रहता है।

मैं इस आत्मकथा से संदेश देना चाहता हूं कि–
''***बुजदिली से कभी जिया नहीं जाता,***
उदास, निराश और हताश होने से मरा नहीं जाता,
तूफान तो आते जाते रहते हैं,
इन्हें हंसकर भी सहा और आगे है बढ़ा जाता''
आशा है मेरी टाईमपास आत्मकथा आपको पसंद आएगी।

मेरी बात

मंत्री, म.प्र. शासन

कैलाश विजयवर्गीय

सफलता के पीछे पत्नी का हाथ

दिनेश जी को मैं बहुत पहले से जानता हूँ। 'दैनिक भास्कर' के समय से मैंने इन्हें जुझारु पत्रकार के रुप में पाया है। महू में रहते हुए इन्होंने पत्रकारिता का विशेष परचम फहराया है। 'प्रिय पाठक' नाम से जिस समाचार पत्र का प्रकाशन किया है वह महू के लोगों की आवाज बन गया है। महू में रहकर एक स्तरीय अखबार का प्रकाशन करना दिनेशजी की काबिलियत का प्रमाण है। दिनेशजी बहुआयामी प्रतिभा के धनी है। ये पत्रकार हैं, लेखक हैं, गायक हैं, कलाकार हैं और न जाने क्या- क्या है। एक व्यक्ति में इतनी खूबियां बहुत कम मिलती है। जैसा कि कहते हैं कि हर सफल पुरुष के पीछे किसी महिला का हाथ होता है मैं मानकर चलता हूँ कि दिनेश के पीछे उनकी एकमात्र पत्नी अनुराधाजी का ही हाथ हो सकता है। इन शुभकामनाओं के साथ कि प्रकाशित पुस्तक पठनीय हो, लोकप्रिय हो।

- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, म.प्र. शासन एवं विधायक, महू विधानसभा क्षेत्र

स्नेही कलम

वरिष्ठ पत्रकार
रोमेश जोशी

पाठक की नब्ज से जुड़ा पत्रकार

पत्रकारिता की चरम स्थिति है पत्रकार का पूरे अखबार को अपने अन्दर जीना। पत्रकार दिनेश सोलंकी और 'प्रिय पाठक' पर यह उक्ति पूरी तरह लागू होती है। दिनेश से पिछले 28 साल से परिचित हूँ और 'प्रिय पाठक' का करीब दो साल से नियमित पाठक और प्रशंसक हूँ। पढ़कर सतत महसूस हुआ है कि सन् 1983–84 के जिज्ञासु पत्रकार युवा दिनेश को दैनिक भास्कर स्कूल ने पत्रकार के रूप में जो संस्कार दिए, समाज के प्रति जिम्मेदारी और पाठक के प्रति अपनत्व की जो घुट्टी उन प्रारम्भिक दिनों में पिलाई थी, वह आज पूर्ण विकसित होकर दिनेश को ऐसा सफल और जिम्मेदार पत्रकार बना चुकी है, जो एक पूरे शहर की जागरूक होकर सेवा कर रहा है, पाठकों का प्रिय है और समय की नब्ज को पारदर्शी संवेदनशीलता के साथ पहचानता है।

जरा एक क्षण के लिए आँख मूँदकर दिनेश को याद कीजिए, एक मुस्कुराता हुआ चेहरा ही सामने आएगा। ये मुस्कान और कई मोर्चों पर पूरी ऊर्जा के साथ भागीदारी दिनेश सोलंकी को सबसे अलग और विशेष बनाती है। खिलाड़ी है, गायक है, रंगमंच से जुड़ने को सदा तैयार है, फिल्मों में भी एक्टिंग करने के साथ एक जिम्मेदार पिता, समर्पित पति आदि आदि जाने कितने गुण हैं, जिनके कारण बरसों पहले दिनेश सोलंकी नामक लड़के से मेरी जो पहचान हुई वह जाने कब दिली दोस्ती में बदल गई।

दोस्ती के कारण नहीं, प्रिय पाठक की गुणवत्ता के कारण मैं इस अखबार का प्रशंसक हुआ। पत्रकार संघ से जुड़ा होने के कारण कई बार मुझे अखबारों की समस्याओं पर चर्चा करनी होती है। आज की विकट

परिस्थिति में डूबते साप्ताहिक अखबारों की जब–जब बात निकली है, तो मैंने हर बार 'प्रिय पाठक' का उदाहरण उनके सामने रखा है। प्रिय पाठक के सम्पादक को मालूम है कि उसके पाठक कौन हैं? क्या अपेक्षा रखते हैं? किस बात का उसे समर्थन और किसका विरोध करना चाहिए? और कुल मिलाकर अखबार की हर पंक्ति रचते हुए यह ध्यान रखना कि वह पूरे देश के लिए नहीं केवल महू की जरूरतों की पूर्ति करने के लिए अखबार प्रकाशित कर रहा है। यही सब है जो प्रिय पाठक और दिनेश को छोटे अखबारों की पाठ्य पुस्तक का महत्वपूर्ण अध्याय बनाते हैं।

मैं आगामी समय में दिनेशजी की और उनकी प्रगति की कामना करता हूँ, इस शर्त के साथ कि भाई दिनेश, ऐसे ही अच्छे गुणों से खुद को जोड़े रखना। शुभकामनाएँ।

–वरिष्ठ पत्रकार, स्वतंत्र लेखक, पूर्व सम्पादकः नवभारत, दैनिक लोकस्वामी

– 51, रूपराम नगर, इंदौर (म प्र)
मोबा. 9406606660

स्नेही कलम

दिल और दर्द की दास्तां है यह किताब

''दुनिया ने तजुर्बात ओ हवादिस की शक्ल में जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हूँ मैं''

'जियो तो बिंदास जियो' सचमुच एक बिंदास और जिंदास आदमी की जिंदगी के सफर का दर्द और खुशियों भरा दस्तावेज है। इसके लेखक श्री दिनेश सोलंकी ने अपने अतीत के अफसानों को अनोखे अंदाज में बयान किया है। इस पुस्तक को पढ़कर महसूस होता है कि पीड़ा के इस राजकुमार ने जीवन भर संघर्ष किया है और खुद को वक्त की आग में तपाया है। किताब के हर पृष्ठ से लेखक के जुझारू और जीवट भरे किरदार के दर्शन होते हैं। जिंदगी में मिले जज्बातों और जख्मों को जिगर में छुपाए मुस्कराते हुए जीना आज की दुनिया में आसान नहीं होता है। परन्तु अपनी हर ठोकर से मंजिल को चुनौति देने वाले इस मुसाफिर ने आज तक कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा है, यह बड़ी बात है। लेखक के लफ्जों से उसके बुलंद इरादों का अहसास होता है। लगता है मानो वह कह रहा है 'जलजला ऊँची इमारत को गिरा सकता है, मैं तो बुनियाद का पत्थर हूँ, मुझे खौफ नहीं'।

गीत और दर्द से भरी इस किताब से जिंदगी को मजबूती मिलती है और हर हाल में जीने का हौंसला पैदा होता है। महसूस होता है कि लेखक कह रहा है

'जहर मिलता रहा,
जहर पीते रहे,
यूं ही मरते रहे,
यूं ही जीते रहे,
जिंदगी भी हमें आजमाती रही,
और हम भी उसे आजमाते रहे'

एडव्होकेट
मोहनलाल शर्मा

अपने कॉलेज जीवन से ही श्री दिनेश सोलंकी क्रांतिकारी विचारक, अभिनेता, लेखक और गायक रहे हैं। इस पुस्तक में उन्होंने अपने तजुर्बों को ताबिज की तरह प्रस्तुत किया है। यह उनकी ईमानदारी है कि उन्होंने गुजरे हुए हादसों, हर्षों और हालातों को बिना किसी लाग लपेट के ज्यौं का त्यौं लिखा है। आज भी बुलंदगी के साथ वे पत्रकारिता के क्षेत्र में 'अंगद के पैर' की तरह जमे हुए हैं। ऐसा लगता है कि इस बिंदास इंसान ने दुनिया से जो पाया है उसे एक ऐसी तस्वीर के रूप में जमाने के सामने रखा है जिससे आवाज आ रही है कि

'पाया है जमाने से वो ही मैंने दिया है
खुद अपने ही हाथों से दिल का खून किया है
तुम प्यार करो या मुझे ठुकरा दो मेरे दोस्त
ये वो दर्द है जो मैंने हंस हंस के पिया है'

यह लेखक की महानता है कि उसने कभी भी सच्चाई की कीमत पर समय से समझौता नहीं किया है। आखिर में लेखक के जमीर भरे जज्बे को सलाम करते हुए इस किताब की कामयाबी के लिये दुआएं करता हूँ।

—920, छोटा बाजार, महू छावनी
मोबा. 94248 84740

स्नेही कलम

वरिष्ठ पत्रकार

प्रकाश हिन्दुस्तानी

बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं दिनेश

दिनेश सोलंकी बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति हैं। संगीत, रंगकर्म, पत्रकारिता, सामाजिक कार्य और थोड़ी बहुत राजनीति उनके कर्मक्षेत्र हैं। उनकी खूबी यह है कि वे अलग - अलग क्षेत्रों में कार्य करते रहते हैं और कभी भी अपनी लगन, उत्साह, जुझारूपन और पैनेपन को कम नहीं होने देते। ये अलग - अलग क्षेत्र उनके जीवन को विभिन्न रंगों को प्रतिबिंबित करते हैं। इसीलिये विश्वास है कि दिनेश सोलंकी की आत्मकथा दिलचस्प होगी, जिसमें अनेक कहानियां, उप कहानियां और उप कहानियों की भी उप-कहानियां मिलेंगी। बड़ी संख्या में लोग उन कहानियों से खुद को भी जोड़कर देखेंगे।

हार्दिक शुभकामनाएं।

- पूर्व ब्यूरो चीफ, सहारा समय मध्यप्रदेश
रीजनल प्रमुख डीजी न्यूज
मोबा. 98930 51400

स्नेही कलम

केन्द्र प्रबंधक ज्ञानवाणी
डॉ. सुरेश यादव

गुण गिनवाए नहीं जाते

जैसे पानी के कई रूप होते हैं, कभी बिल्कुल ठहरा सा, कभी सतह पर हलचल और अंदर गहरे में एक खामोशी, कभी अंदर गहरी हलचल और ऊपर बिलकुल शांत, और कभी निर्मल, चंचल, अठखेलियां कर लगातार प्रवाहमान कोई विकृति उसके साथ बह ही नहीं पाती। दूर छिटक कर किनारे पर चली जाती है, ऐसे ही मनुष्य भी है। लेकिन इन सब रूपों को एक साथ धारण करने वाले लोग बिरले ही होते हैं। समय के प्रवाह से टकराते टकराते कुछ पत्थर शंकर हो जाते हैं और कुछ बालू में बदल जाते हैं। समय को मथते मथते दिनेश भी शंकर की कोटि में आ गए हैं। बचपन तो नहीं, युवावस्था से देखा है उसे बहुत करीब पाया है। और कई जो करीब होते हैं उनके गुण गिनवाए नहीं जाते, महसूस किये जाते हैं। दिनेश की ये पुस्तक जिन्दगी से लड़ने की नई समझ पैदा करने में कामयाब हो, यही शुभकामनाएं।

—आकाशवाणी इंदौर,
पूर्व हिन्दी सम्भाग सम्पादक
मोबा. 9425410521

स्नेही कलम

दिनेश ने अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया एनएसएस से

दिनेश का जीवन निःसंदेह राष्ट्रीय सेवा योजना में पदार्पण से हुआ था। मैंने उसके मुख से ही ये बात एनएसएस शिविर के दौरान सुनी। दिनेश कॉलेज में आते ही उद्दण्ड विद्यार्थियों की गिनती में आ गया था। रोडवेज की बसों पर चढ़ना, मस्ती करना, मावा निकालकर चुराना जैसी कई हरकतें वह करता था। राष्ट्रीय सेवा योजना में वह एक दीवार अखबार को बनाने में चर्चित हुआ। एनएसएस समाचार पत्र से वह कॉलेज की और एनएसएस की गतिविधियां प्रकाशित किया करता था। बाद में एनएसएस में एक कर्मठ और सेवाभावी विद्यार्थी बना जिसके चलते उसने कॉलेज का पहला प्रतिष्ठापूर्ण चुनाव भी जीत लिया। मैंने उसे 'नाटक भोलाराम का जीव' में अभिनय बतौर चुना था जहां से दिनेश की अभिनय यात्रा शुरू हुई। एनएसएस समन्वयक बतौर दिनेश को मैंने बहुत नजदीक से एक बेहतर छात्र के रूप में पाया। कॉलेज लाईफ में ही इस छात्र ने शायद अपना भविष्य तय कर लिया था। अपने अंदाज के मुताबिक ही वह जिस पुस्तक 'जियो तो बिंदास जियो' का प्रकाशन कर रहा है वह निश्चित ही सफल होगी, मेरी असीम शुभकामनाएं दिनेश के साथ है।

—पूर्व एनएसएस समन्वयक, उज्जैन (म.प्र.)
मोबा. 9977111166

पूर्व समन्वयक
एनएसएस
डॉ. महेश माहेश्वरी

स्नेही कलम

प्रख्यात लेखक

कमलचंद वर्मा

आत्मकथा, पाठकों के लिये प्रेरक है

इस आत्मकथा के कुछ पन्ने लिखने के दौरान पढ़े थे। इसमें श्री दिनेश सोलंकी ने अपने बीते दिनों की धूप–छाया और सुख–दुःख के क्षणों को सजीव रूप से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनकी आत्मकथा यह सच्चाई प्रकट करती है कि जीवन का दूसरा नाम संघर्ष है। परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए निराशा के क्षणों में अपना हौंसला बनाए रखना, विपरीत परिस्थितियों का साहसपूर्वक सामना करना और अपना आत्मविश्वास बनाए रखना, दिनेशजी की विशेषताएं रही हैं। अपने जीवन के अनमोल क्षणों को उन्होंने 'मैं आज भी जवान हूँ– दिल दिमाग से', मेरे जीवन के विनोदी क्षण, दुखी हादसे, ईश्वरीय चमत्कार से हुई रक्षा, पत्रकारिता के कारनामे अभिनय सफर, विदेश यात्रा आदि बिंदुओं में उनके बीते दिनों की मर्मस्पर्शी संवेदनाएं पढ़ने को मिलती है। कहा जाता है कि धनवान वही है जिसे मनचीता करने का समय मिल जाए और वह उसे कर ले। इस विचार से दिनेशजी बड़े धनवान रहे, क्योंकि उन्होंने अपना मनचीता कार्य कर लिया। उन्होंने उल्लासपूर्ण जीवन जिया। पत्रकारिता, लेखन और अभिनय कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की। यश और नागरिकों का भरपूर प्यार और सम्मान प्राप्त किया। 'प्रिय पाठक' के माध्यम से वे महू में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। उनका लक्ष्य स्वस्थ पत्रकारिता है। समाज सेवा है। महू के प्रति सच्चा प्रेम और लगाव है। इसलिये वे प्रिय पाठक के माध्यम से महू के नागरिकों को जागृत कर नगर के विकास की बातें लिखते हैं। बहरहाल, उनकी आत्मकथा ''जियो तो बिंदास जियो'' के प्रकाशन पर उन्हें शत शत बधाईयां। ईश्वर से उनके खुशहाल जीवन और उज्जवल भविष्य की कामना है।

– संस्कृति भवन, राजमोहल्ला, महू

मोबा. 9165999491

मंच से मीडिया तक

स्नेही कलम

वरिष्ठ लेखक

डॉ. कुलवंतसिंह शेहरी

बात 1970 के दशक की है तब महू में एक लम्बे अंतराल के बाद मंच सक्रिय हुआ था। मंच पर गीत–संगीत और नाटकों का मंचन चल पड़ा था। मेरे पास तब बहुत समय होता था और मैं अक्सर नाटकों को देखने टाउनहॉल जाता था। वरिष्ठ पत्रकार और मेरे बालसखा श्री प्रकाश हिन्दुस्तानी के प्रयासों व निर्देशन में कुछ रचनात्मक गतिविधियां हुईं। उन्हीं दिनों मेरी मुलाकात कॉलेज में नए उभरते कलाकार दिनेश सोलंकी से हुई। इस गौरे–चिठ्ठे, छरहरे और सुंदर नौजवान के बारे में पता चला कि समाजसेवा के साथ साथ यह नाटकों का संचालन भी करता है। इस युवक को पर्यावरण संरक्षण, नसबंदी शिविरों में समाजसेवा करते भी देखा। दिनेश सोलंकी के साथ योगेश यादव, राबर्ट भारती, राजेश बंसल, अंजुमन रिजवी जैसे युवा कलाकारों की फौज होती थी। दिनेश की रायटिंग बहुत सुंदर और कलात्मक रही इसी के चलते कई बार टॉकिज के पोस्टर, गीत संगीत के आयोजनों में पोस्टर बनाने की सेवाएं देते रहे। तब फ्लैक्स का अविष्कार नहीं हुआ था। बाद में इसी हस्तलिपि के चलते महू कॉलेज में एनएसएस समाचार पत्र निकाला और फिर कलम निखर कर नईदुनिया में जा पहुंची। इनके विषय रोचक, सामयिक, और ज्वलंत समस्याओं पर होते थे। एक बार 1980 में मैंने नईदुनिया में दिनेश की रिपोर्ट पातालपानी और टंट्या भील को लेकर पढ़ी। पातालपानी को प्रकाश में लाने का श्रेय दिनेश सोलंकी को ही जाता हैं क्योंकि इसके बाद दैनिक भास्कर, नवभारत और अब प्रिय पाठक में भी उनकी लेखनी पातालपानी सहित अन्य पर्यटक स्थलों के विकास के लिये चलती रही है। यही नहीं, महू की गंदगी, टूटी–फूटी सड़कें, टाउनहॉल की माली हालत, बस रेल सेवा आदि पर भी समस्यामूलक

रिपोर्टिंग वे देते रहे। टाउनहॉल के जीर्णोद्धार का श्रेय भी उन्हें जाता हैं।

दिनेश पत्रकार बनकर महू की पत्रकारिता के गगन पर आच्छादित हो जाएगा, ये बात मेरे लिये अकल्पनीय थी। 2002 में पंजाब सिंध बैंक, इंदौर, मध्यप्रदेश छोड़कर मेरा तबादला प्रमोशन पर जयपुर हो गया था तब महू शहर से मैं लगभग कट गया था। इसी दौरान दिनेश के कैरियर ने कई कायाकल्प किये। अनुराधा से शादी तो मेरे हाथों ही कराई गई थी पर इस अनुराधा ने दिनेश के जीवन में आकर 'स्टार फेवर' में कर दिये। पासा पलट दिया। दिनेश अनुराधा के संयोग से सपरिवार विदेश गया। फिल्मों, टीवी सीरियल में काम किया और अंत में अपना अखबार सफलता पूर्वक प्रकाशित कर सम्पूर्ण पत्रकार हो गया। मुझे फोन पर योगेश यादव, अमरिकसिंह फेयरी दिनेश की प्रोग्रेस अक्सर बताते थे। दिनेश ने जब प्रिय पाठक का प्रवेशाषांक मुझे भेजा तो यकीन नहीं हुआ बल्कि मुझे शंका थी कि साप्ताहिक अखबार में दिनेश दम नहीं भर पाएगा। 2007 में जब मैं वापस भोपाल लौटा तो योगेश यादव ने बताया कि प्रिय पाठक तो महू का सर्वाधिक लोकप्रिय अखबार बन चुका है तो मारे खुशी के मेरे नेत्र द्रवित हो गए। मुझे जब प्रिय पाठक नियमित मिलने लगा तब लगा जैसे अपने शहर के नजदीक आ पहुंचा। अब सेवानिवृति के बाद प्रिय पाठक नियमित पढ़ता हूँ, लिखता भी हूं। नवप्रकाशित पुस्तक के लिये मेरी ओर से बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

–पूर्व राजभाषा अधिकारी, गवली पलासिया, महू

मोबा. 99816 91805

स्नेही कलम

शुभकामनाएं, संदेश

आत्मीय प्रसन्नता हुई, श्री दिनेश सोलंकी जी 'मेरी टाइमपास आत्मकथा.... जियो तो बिंदास जियो' का शीघ्र लोकार्पण कर रहे हैं। श्री सोलंकीजी का जीवन चरित्र स्वयं ही एक खुली किताब है, उनके शैशवकाल के जीवन से लेकर आज तारीख तक के समय को आसानी से पढ़ा जा सकता है। कुछ तथाकथित आवरण, कृत्रिम सौम्यता, बनावटी सभ्यता या लाटसाहब प्रदर्शन श्री सोलंकीजी के व्यक्तित्व से कोसों दूर रहे हैं। उनके व्यक्तित्व में नाम अनुरूप सूर्य सा तेजस्व है और कृष्ण का साक्षात्कार है। श्री दिनेश सोलंकी जी अत्यन्त ही सहज भाव, मस्ती, प्रफुल्लता, हास–परिहास, व्यंग्य और आनंद से जीवन के अत्यन्त गम्भीर विषयों को प्रकट करते हैं। उनकी कलम से समाज की बुराई या समस्या पैनेपन से खंगाली जाती है। उनके लिखे कालम गम्भीर बहस लिये होते हैं जो समाज के जागरूक पाठकों को उद्वेलित करते हैं।

सबसे बड़ी बात है वे अपने कार्य के प्रति बेहद ईमानदार एवं संजीदा हैं। वे जब लिखते हैं तो लेखन में ईमानदारी, चिंतन की प्रौढ़ता और अभिव्यक्ति की स्पष्टता साफ झलकती है। ''प्रिय पाठक'' अखबार को अपने लेखनीय–समर्पण से निरंतर प्रकाशित करके महू के लिये प्रिय अखबार बनाया है। मेरी ओर सोलंकीजी की डोर कई तारों में गुथी हुई है वे मेरे निजी मित्र हैं, थियेटर के संग साथी हैं, मेरे समकालीन पत्रकार हैं और करीबी रिश्तेदार है। श्री दिनेश जी की पुस्तक के माध्यम से एक 55 वर्षीय सम्मानीय पुरूष के लेखन में 16 वर्ष के युवा–प्रतिबिम्ब से, एक बिन्दास पत्रकार से, एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति से, एक वैचारिक–भद्र पुरूष से साक्षात्कार होगा, यह अपेक्षित है। सोलंकीजी के विषय में संक्षिप्त सार यही है कि वे सीधे– सरल– स्पष्ट– सपाट– मेहनती हैं, पत्रकारिता उनका नैसर्गिक गुण हैं। मेरी ओर से उन्हें शुभकामनाएं।

–सदस्य– अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी,
मुख्य संगठक– मप्र कांग्रेस सेवादल
मोबा. 94250 07907

वरिष्ठ कांग्रेस नेता
योगेश यादव

दो जिंदगियों को जीवन देने की कोशिश

“मुझे लगता है कि जीवन में किसी की जान बचाना या घोर संकट में मदद करना सबसे बड़ा पुण्य होता है। मेरे जीवन में दो किस्से हमेशा याद रहेंगे। जिनका मैं यहां वर्णन करना चाहूंगा ताकि आपको भी कभी ऐसा पुण्य कमाने का मौका मिल सके।”

कैंसर पीड़ित बालिका रानू पंवार

पीथमपुर की एक बालिका रानू पंवार से मुझे उन दिनों (सन् 2005) महू में पदस्थ रहे कर्नल राजबीर सिंह ने मिलवाया। उन्होंने इस बहादुर बच्ची से मिलवाकर मैंरे भीतर के मन को झकझोर दिया। रानू सम्भवतः 15 साल की रही होगी जिसे कैंसर के चलते एक पैर कटवाना पड़ा था। एक पैर में शुरू हुआ कैंसर उसके उस पैर को कटाने के बाद भी फेफड़े में जा पहुंचा था। रानू के पिता पीथमपुर की फेक्ट्री में मजदूरी किया करते थे और वे अपनी बेटी के इलाज में काफी रूपया खर्च कर चुके थे। इसके बावजूद रानू को जीने का होंसला था और वह जिंदगी को आसानी से खोना नहीं चाहती थी। उसकी हिम्मत देखकर मैं प्रभावित हुआ और मैंने अपने साप्ताहिक अखबार प्रिय पाठक में रानू को विशेष कवरेज देकर उसके कैंसर के इलाज के लिये पाठकों और आम लोगों से मदद की गुहार की। रानू को लेकर महू के अनेक हमदर्द लोग आगे आए और उन्होंने पैसों से मदद करना शुरू कर दी। मैने अपनी पत्नी के साथ मिलकर रानू के इलाज के लिये सहायतार्थ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम की घोषणा की। इसके पूर्व भी मैंने महू के पास कोदरिया में रहने वाले एक हरिजन काकड़े परिवार में किडनी रोग से ग्रसित युवक के लिये संगीत निशा के माध्यम से पैसा इकट्ठा कर सहयोग किया था। रानू को

लेकर भी नृत्य और नाटक का अभूतपूर्व आयोजन किया गया। जिसे देखकर रानू गदगद हो गई और जब उसने भरे मंच से अपने जीवन को संघर्ष के साथ जीने का एलान किया तो दर्शकगण उसके सम्मान में कुर्सी से उठ खड़े हुए थे। तात्कालीन एसडीएम पी नरहरी और एएसपी श्री ए के पाण्डे मुख्य अतिथि थे। इस आयोजन से 60 हजार की राशि रानू को भेंट की गई। यह संयाग ही था कि राशि मिलते ही रानू के कैंसर ने उसके शरीर पर तेजी से हमला किया। रानू को तत्काल इंदौर में निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया और उसी पैसों से उसका इलाज कराया गया। लेकिन रानू को बचाया न जा सका। अंतिम दिनों में सैकड़ों लोगों से मिला प्यार शायद रानू की आत्मा को संतुष्ट कर गया होगा, ऐसा मैंने उसकी मौत के बाद उसके शांत और मुस्कराते चेहरे के भाव से महसूस किया।

दिल के छेद से मुक्ति पाई भावना गोस्वामी ने

महू के पास धारनाका में रहने वाली दस साल की भावना गोस्वामी के दिल में छेद होने को लेकर प्राइवेट स्कूल में बस ड्रायवरी कर रहे उसके पिता इस बात से काफी चिंतित थे कि आखिर उसके इलाज के लिये धन कहां से लाये। ऋषिवैली एकेडमी की संचालिका सुश्री वंदना यादव ने जब मुझे भावना के बारे में जानकारी दी तो यकायक कैंसर से पीड़ित रानू पंवार की याद ताजा हो आई। मैंने रानू की तरह ही प्रिय पाठक में भावना के बारे में करूणामयी लेख लिखा और फेसबुक पर भी दोस्तों से अपील की। देखते ही देखते भावना के लिये हमदर्दों का सैलाब उमड़ गया।

मैंने लगातार भावना के लिये अपील जारी रखी। युवा वकीलों और युवाओं का झुण्ड सड़कों पे मदद के लिये निकला, स्कूल के बच्चों ने भी चंदा इकट्ठा किया। लगभग डेढ़ लाख की राशि जमा हो गई और भावना के दिल का छेद आपरेशन से बंद हो गया। आज भावना खुश है और वो अब पढ़ने में अपना मन लगा रही है। उसके परिवार में खुशियां लौट आई हैं। इस प्रकार रानू पंवार और भावना गोस्वामी के लिये किये गए प्रयास से ऐसा लगा कि न जाने इस देश में कितने लोग मजबूर और असहाय होकर अपने जीवन को जीने की आस लिये बैठे हैं लेकिन सहयोग से उठे हाथ किसी को भी नया जीवन दे सकते हैं, ये मैंने दो अभियानों से महसूस कर लिया।

क्या कहती है उम्र 55 वीं...

"उम्र यदि गुजरती जा रही है तो इस बारे में तनाव पालने की जरूरत नहीं है। आप हर उम्र के साथ के लोगों के साथ जीना सीखें। बच्चों से बातें करते समय बच्चे बन जाइये, युवाओं से युवा विचारों की तरह पेश आईये और बूढ़ों से बात करते समय उनके अनुभव के साथ हिलमिल जाओ, महिलाओं से जैसा वें पसंद करती हैं विनम्रता, उत्सुकता और चंचलता से बातें कीजिये। आप कभी भी किसी भी उम्र के साथ गुजर रहे होंगे, यकीन मानिये अपने आप को बोर नहीं पाएंगे, बल्कि आपका दिल होगा हमेशा जवां।"

आज भी महसूस नहीं होती उम्र मुझे

भले ही उम्र 55 का आंकड़ा पार कर रही हो, मगर मैं आज भी अपने आपको दिल–दिमाग से जवान महसूस करता हूं। मेरे मन में आज भी मुझे उम्र का अहसास नहीं है। कई बार मैं जब किसी महिला को आंटी या किसी व्यक्ति को अंकल कह देता हूं तब मैं अपने आप में ही शर्म महसूस करता हूं कि ये मैंने क्या कहा, मैं भी तो उसी उम्र के आसपास का हूं। लेकिन मैं सचमुच कई बार अपनी उम्र को ही महसूस नहीं कर पाता हूं। मेरी साथ की उम्र वाले कई दोस्तों को मैं 60 से 65 साल की तरह देखता हूं, तो मुझे आश्चर्य नहीं होता क्योंकि उन्होंने समय के साथ जीना नहीं सीखा होगा या फिर हालात ने उन्हें उम्र से पहले बूढ़ा बनाया होगा। मुझे बचपन की 7 साल वाली उम्र का वो वाकया याद है जब मैंने अपने आपको मन के भीतर से बड़ा महसूस किया था। महू में सात रास्ते के पास बूट गली वाले घर पर (मेरा पैदाइशी घर) रहते हुए सामने वाली पान की वो दुकान याद है मुझे। वहां एक दिन साईकल पर एक लाल सूट पहने गौरी लड़की आकर खड़ी हुई थी जिसे मैं वशीभूत सा ओटले पर खड़ा एकटक देख रहा था। उसे निरंतर देखते घर के पास रहने वाली किरायेदार अम्मा ने मेरी मग्न मुद्रा को भांप लिया और मेरी तंद्रा को भग्न करने वाला डायलॉग बोल उठी–'' शादी करेगा उससे..!'', सुनकर मैं लजा गया.. जैसे सचमुच मैं उसकी उम्र का रहा हूं। मैंनें लजाकर उस लाल सूट वाली लड़की

को फिर से देखा और पास वाली अम्मा को देख झेंपता हुआ भीतर भाग गया। आज उस वाकये को याद करता हूं तो लगता है कि मैं 7 साल की उम्र में भी मेरे पास धड़कने वाला जवानी का दिल था। सिर्फ उसी वाकया ने मुझे जवान महसूस नहीं कराया अपितु उसके बाद 10 साल की उम्र में मोहल्ले की सुमन नामक लड़की को देखकर मन ही मन प्यार कर बैठा और न जाने कितने सपने संजोने लगा। वह भी मुझसे बात करती थी। एक बार दूध लाते समय मैंने उसे घर के सामने से गुजरते दीवानों की तरह ''सुमन–सुमन'' कहते आवाजें लगाई। उस समय उसके पिता ने मुझे देख डांटा था। उनकी रौबीली मूंछ और कड़क चेहरा देखकर मैं इतना सहम गया था कि उस दिन के बाद से ही उधर से गुजरने में घबराने लगा था। एक दिन सुमन को एक लड़के से हंसते हुए बातें करते देखा तो दिल उदास हो गया और उस दिन से मैं उसे भूलने लगा। ये तो थी बचपन की बातें, मगर आज भी मुझे नहीं लगता है कि मैं 25 साल के युवक की उम्र पार कर गया हूं। जबकि मेरे दोनों लड़के क्रमशः इस समय 27 और 20 साल की उम्र से गुजर रहे हैं। हां, इतना जरूर है कि 16–18 साल की लड़कियां मुझे जब अंकल कहती हैं तो महसूस होने लगता है कि मेरी उम्र बढ़ चुकी है। कभी कभी अनायास मेरे मुंह से भी किसी जवान लड़के या लड़की के लिये 'बेटा' या 'बेटी' जैसे शब्द निकलते हैं तो लगता है कि ये उम्र का तकाजा हो रहा है। इन सबके बावजूद मुझे लगता है कि मन और तन अभी भी जवान है। सिर्फ मैं ही नहीं मेरी पत्नी को देखकर भी लगता है कि वो पहली ही मुलाकात से लेकर आज तक वैसी ही है। सिर्फ स्वभाव में अंतर आया है जो स्वाभाविक क्रिया है।

तनाव मुझ पर हावी नहीं हुआ

मैं अपने स्वभाव में मामूली अंतर पाता हूं और ये अंतर मेरे मन की गम्भीरता का है जो चंचलता पर हावी होने लगा है। चिंतन पहले भी खूब करता था और अभी भी खूब करता हूं। जितना चिंतन करता हूं उतना ही मन हल्का करने के लिये मनोरजंन भी कर लेता हूं। जैसे दोस्तों के साथ बैठ कर हंसी मजाक कर लेना, फिल्में, टीवी देखना या कोई भी 'गेम' खेलकर, घर की चीजों को सहेजकर समय पास कर लेता हूं। कभी कभी टेलिफोन या मोबाइल से पुराने दोस्तों से बातें कर भी मन हल्का कर लेता हूं। मुझ पर तनाव कभी भी हावी नहीं हुआ। जबकि मेरे साथ कई घटनाएं भयानक और जीवन मौत के संघर्ष की तरह हुई। बावजूद तनाव मेरे माथे पर कुछ घण्टों से अधिक कभी नहीं रहा। ईश्वर मेरे तनाव को घटाने के लिये कुछ न कुछ मार्ग अवश्य निकालते रहे।

राष्ट्रीय सेवा योजना ने बदला मेरा जीवन

“मुझे लगता है मैं जीवन में कुछ नहीं कर पाता यदि कॉलेज जीवन में मुझे एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना) से लगाव नहीं होता। एनएसएस ने मेरे जीवन का कायाकल्प करके मुझे ऊँचाईयां दी है और मेरे मन की छुपी प्रतिभा को उसने बाहर कर मुझे नई पहचान दी।”

1974....कॉलेज में कदम रखते ही मुझे जवानी की हवा लग गई। उन दिनों कॉलेज में पढ़ना महत्वपूर्ण माना जाता था। ऐसा लगता था कि हम अब जवान हो गए हैं। जवानी की इस हवा ने मुझे बिगड़े हुए लड़कों की संगत में ला खड़ा कर दिया। मटरगश्ती करना, रोडवेज की बसों को रोककर उसकी छत पर चढ़कर यात्रा करना, मांडव गाड़ी की छत से मावा चुराकर खाना, प्रोफेसर की मजाक उड़ाना आदि हरकतें करना मैं अपनी शान समझने लगा।

जल्दी ही इसका नतीजा मिला जब कामर्स प्रथम वर्ष में मुझे वार्षिक रिजल्ट थर्ड डिविजन बाय ग्रेस मिला। पिताजी को पता चला तो उन्होंने गुस्से से मेरी ओर देखा तब उनका इस तरह देखना ही मन में अपराध बोध कराता था। सेकन्ड इयर में मैं थोड़ा गम्भीर हुआ और पढ़ाई पर ध्यान देने लगा। कॉलेज में उन दिनों दीवार पर एक हस्तलिखित समाचार पत्र निकलता था जिसका नाम था 'एनएसएस समाचार'। मेरे पूर्व सीनियर छात्र प्रकाश हिन्दुस्तानी ने इसे चालू किया था और उनके कॉलेज छोड़ने के बाद कमल वर्मा इसे बना रहे थे। कमल से मेरी अक्सर नोंक झोंक होती थी कि ये तू कैसा पेपर निकालता है। एक दिन कमल ने मुझसे कहा कि तेरी रायटिंग अच्छी है तो तू ही क्यों नहीं बनाता इस अखबार को। मैंने एक दिन उसकी बात मान ली और एनएसएस समाचार को खूब चित्रकारी करके उसे तैयार कर दीवार बॉक्स में लगाया। इस अखबार को देखते ही विद्यार्थी आकर्षित हो गए। प्रोफेसर खुश हो गए। मुझे शाबासियां मिलने लगी। मैं उत्साहित हो गया और दूसरा अखबार पहले से भी बेहतर बनाया। अखबार प्रसिद्धी पाने लगा और मैं अखबार निकालने में खोता चला गया। जल्दी ही एनएसएस समाचार पत्र पूरे कॉलेज में फेमस हो गया और विद्यार्थीगण उसमें अपनी रचनाएं भी छपवाने लग गए। उन दिनो जब एनएसएस का शिविर लगा तो मैंने वहां भी स्पेशल पेपर निकालना शुरू किया। अखबार की प्रसिद्धी युनिवर्सिटी तक पहुंची और अखबार फिर इंटर कॉलेज एनएसएस केम्प में भी लगने लगा। एन. सुब्बाराव द्वारा आयोजित भारत सेवक समाज राष्ट्रीय

शिविर में मैंने (बटेश्वर गांव) हिस्सा लिया। यहां भी मैंने अखबार निकाला। कॉलेज में रहते हुए ही मैंने नईदुनिया के लेटर टू एडिटर कॉलम में लिखने का प्रयास किया। 1979 में जब मेरा पहला लेटर नईदुनिया में प्रकाशित हुआ तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और फिर प्रिंट अखबारों में मेरी कलम चल पड़ी। इस तरह एनएसएस ने एक ओर मुझे पत्रकारिता और लेखन से जोड़ा तो दूसरी ओर इसके मानपुर शिविर में मैं मंच पर आने का साहस जुटा सका जिसकी बदौलत कॉलेज में मैंने रंगमंच से नाटकों में अभिनय की शुरूआत की। यही नहीं 1977 का छात्रसंघ सचिव का चुनाव भी एनएसएस की ख्याति के चलते ही जीता।

मेरे जीवन के मनोरंजक किस्से

“ हाईस्कूल लाईफ मेरी शर्म और झिझक के बीच गुजरी मगर कॉलेज में कदम रखते ही मानो मैंने उड़ना सीख लिया हो, ऐसा लगने लगा। मेरा फ्रेंण्ड सर्कल हंसोड़ा था। पीरियड छूटते ही इकट्ठे होकर हा–हा, हू–हू करने लगते। हर बात मजेदार और ठहाके भरी होती थी। हमारे ग्रुप की लड़कियां किस्से या मौजूदा बातों, प्रसंग को लेकर हंस–हंसकर लोटपोट हो जाया करती थी। कॉलेज लाईफ के 8 साल कब खत्म हो गए, पता ही नहीं चला। कॉलेज के दिन ऐसे याद आते हैं मानो हमारा असली जीवन ही वही था। फिर भी कॉलेज जीवन ने हमारे शेष जीवन में जो मस्ती भरी वो हमें आज तक गुनगुनाती है ”

1. ’राम बलराम’ की वो भीड़

बात सन् 1976 की, फिल्म ’राम बलराम’ इन्दौर के प्रेमसुख छबिगृह में लगी थी। ’शोले’ के कारण इस फिल्म का क्रेज भी जबरदस्त था। पहले दिन पहला शो देखने के लिये मेरे दोस्तों की इच्छानुसार मैं टिकट लेने सुबह 8 बजे ही महू से इन्दौर पहुंच गया था। छबिगृह के बाहर 4 घण्टे पहले से ही लगभग 700 की लम्बी और विशाल लाईन देखी तो मैं घबरा गया। फिल्म देख पाएंगे?, मुझे अरमानों पर पानी फिरता नजर आया। उस समय ऐसा लगता था मानो ये शो नहीं देखा तो हमारे क्रेज का सत्यानाश हो जाएगा। हिम्मत नहीं हारते हुए मैंने सोचा कि पीछे से लाईन में लगे लोगों को देखता हूं शायद कोई

पहचान का निकला तो टिकट उसके मार्फत मिल सकेंगे। मैं सबसे पीछे जाकर एक–एक दर्शक को देखता हुआ सीधे टिकट खिड़की तक चला गया, मगर कोई पहचान का नहीं निकला। उस समय टिकट खिड़की खुली नहीं थी तब मैं ये सोंचकर कि पहला शो अब हम नहीं देख पाएंगे, निराश होकर पास की बंद पड़ी खिड़की से सटकर खड़ा हो गया। अचानक वो खिड़की खुलती है और एक व्यक्ति टिकट लेकर भीतर आता है। मैंने आंखें फाड़ते उससे पूछा कि ''क्या एडवांस टिकट मिलेंगे'', उसने कहा ''नहीं इसी शो के हैं'', सुनकर मैं बुरी तरह से चौंका और हड़बड़ाहट में जेब से पैसे निकालते हुए पूछा कि ''फिर वो लाईन क्यों लगी है...!'' वो बोला ''उस कमरे की चाबी खो गई ..''कहते हुए उसने भीतर से आवाज लगाई ''टिकट इधर से ले लो भाईलोगों''.., उसके कहते ही वो लम्बी लाईन टूटकर मेरे पीछे आ लगी। मगर सबसे पहले चार टिकट लेने वाला मैं पहला दर्शक दुनिया का सबसे किस्मतवाला समझ रहा था। बाद में जब मेरे दोस्त छबिगृह पर पहुंचे तो वे भी भारी भीड़ देखकर निराश हो गए मगर फिर मेरे हाथ में लहरा रहे चार टिकट देखकर खुशी से फूले नहीं समाए। पूछने लगे ''इत्ती भीड़ में कैसे मिले टिकट..?'' तो मैंने इतराकर कहा– ''अपनी यहां बहुत चलती है''। फिर मैंने अपनी आपबीती सुनाई तो जमकर ठहाका लगाया सबने। फिल्म देखने पर मजा नहीं आया मगर मेरी आपबीती ने खूब मजा दिया।

2. शहर को 'अप्रेल फूल' बनाया साधु और शैतान से

बात कॉलेज के दिनों की है जब हम सब दोस्त पढ़ाई के साथ–साथ हर समय हर्षोल्लास से समय गुजारते थे। सन् ठीक से याद नहीं, शायद 1979–80 होगा। मगर हां, तारीख 31 मार्च की थी जब रात के समय मैं अपने दोस्त अशोक पंवार और योगेश यादव के साथ खाना खाने के बाद माल रोड पर टहल रहा था। तभी याद आया कि कल 1 अप्रेल है। याद आते ही शरारती दिमाग चलने लगा। मैंने कहा कि क्यों न कल हम शहर भर को अप्रेल फूल बनाएं। सुनकर दोनों की आंखों में चमक आ गई। मगर ऐसा क्या किया जाए, ये हम सब सोचने लगे। तभी मेरे दिमाग में आयडिया आया और हमारा प्लान बन गया। लेकिन इस गुप्त आयडिया में अशोक पीछे हट गया और योगेश ने मेरे साथ इस प्लान में हिस्सा लिया।

क्या था हमारा प्लान.....!

मेरे बड़े भाई स्व. राजेन्द्रजी फिल्मों को किराये पर चलाया करते थे। उन दिनों सेकन्ड हेन्ड फिल्मों का दर्शक हुआ करता था जो थियेटरों में बड़े चाव से देखा करते थे। मेरे भाई ने मेहमूद की बहुचर्चित फिल्म ''साधु और शैतान'' को किराये पर चलाने का अनुबंध कर रखा था जिसके पोस्टर घर में रखे हुए थे। बस इन्हीं पोस्टरों का ख्याल आते ही मन में शैतानी सूझ उठी। मैंने उन पोस्टरों पर स्याही से शहर

के एक नामी छबिगृह मोतीमहल का नाम लिखकर ''तारीख 1 को, सुबह 10 बजे स्पेशल शो'' लिख सजा दिया। इस तरह कोई 20 पोस्टर तैयार कर दिये। अब समस्या थी कि इन पोस्टरों को कैसे चिपकायें क्योंकि रात में चल रहे भारत–पाकिस्तान हॉकी मैच के फायनल कमेंट्री को लोग रेडियो पर सुन रहे थे। हम दोनों ने रात 2 बजे तक कमेंन्ट्री खत्म होने का इंतजार किया, फिर रात को हम दोनों सायकल लेकर निकले। पोस्टर हाथ में रखकर और एक बाल्टी में लाई (चिपकाने वाली) लेकर हरिफाटक पहुॅचे। वहां सूनसान में साहस दिखाकर पोस्टर चिपका दिया। उसके बाद मोती चौक, माणक चौक, और तमाम चौराहों पर पोस्टर चिपका कर घर लौट गए। रात भर नींद नहीं आई कि कल क्या होगा। भय भी था कि कहीं पुलिस केस न बन जाए। सुबह मैं दीवानों की तरह जल्दी उठा। साईकल लेकर शहर का चक्कर लगाया। इक्के दुक्के लोग पोस्टर निहार रहे थे। 'अबे, साधु और शैतान लग गई...' जैसे शब्द कानों में पड़ रहे थे जिसे सुनकर मैं मन में मुस्करा रहा था कि अब आएगा मजा। मैं 10 बजे मोतीमहल थियेटर पहुंचा तो स्थिति गम्भीर थी। वहां दर्शक फिल्म देखने चले आ रहे थे जबकि टॉकीज का गेट बंद था। टॉकिज का एक कर्मचारी हैरान था जो परेशान होकर बार बार कह रहा था कि ''अरे साधु और शैतान फिल्म नहीं लगी है, न ही अभी कोई शो है''। मामला जब थियेटर संचालक बब्बू त्रिवेदी (स्व.) तक पहुंचा तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि मेरे थियेटर में फिल्म लगी और मुझे ही मालूम नहीं..! बाद में उन्हें वस्तुस्थिति का अहसास हुआ कि फिल्म के पोस्टर चिपकाकर किसी ने ''अप्रेल फूल'' की साजिश की है तब उन्होंने अपने कर्मचारियों को भेजकर शहर भर में लगे पोस्टर हटवाए। उस दिन हम दोस्त रोज की तरह रात को मिले और इस प्लान की सफलता पर खूब चटखारे लेते रहे।

3. पहली बार मंच पर जब लड़की बना....

मेरे दोस्त अशोक पंवार कॉलेज में मुझसे सीनियर रहे हैं और रंगमंच पर ब्रेक देने वाले भी। कॉलेज के दिनों में ही सेंट मेरी स्कूल के शिक्षक श्री महेश भार्गव अपने लिखे नाटक ''दुनिया रंग रंगीली'' की तैयारी कर रहे थे और उन्हें नाटक के लिये बोल्ड लड़की की आवश्यकता थी जो उस समय के कल्चर के हिसाब से मिलती नहीं थी। तब मैंने लड़की का किरदार करने के लिये पहली बार हां भरी थी। तद्‌समय मैं कॉलेज में छात्रसंघ का सेक्रेटरी था। मगर अभिनय की चुनौति के चलते मैं लड़की बना और कॉलेज में यह नाटक सुपरहिट रहा। इसके बाद से मैंने कई बार लड़कियों की भूमिका स्टेज पर अदा की। योगेश के साथ मैंने लड़की बनकर किया गोपी फिल्म का डांस 'जेन्टलमेन जेन्टलमेन' बहुत पसंद किया गया।

4. गृह मंत्री के सामने व्यंग्य...''मैं महू हूँ''

हम कॉलेज के दिनों में जितने मस्तीखोर थे उतने जनहित के मुद्दे पर गम्भीर भी हो जाते थे। उन दिनों हमने (मै और योगेश) जवानी के जोश में तात्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री श्री प्रकाशचंद सेठी के सामने एक ऐसा व्यंग्य नाटक प्रस्तुत कर डाला था कि जिसे देखकर प्रशासनिक वर्ग अचम्भित रह गया और श्री सेठीजी को अपमान और शर्मिन्दगी महसूस हुई थी। वे बीच में ही समारोह छोड़कर चले गए थे। यह नाटक हम दो रंगमंच कलाकारों से शहर की नामचीन संस्था 'शहीद मित्र मंडल' ने अपने ही कार्यक्रम में प्रस्तुत कराया था। श्री सेठीजी महू से दो बार विधानसभा चुनाव जीते थे और हर बार जनता से विकास का वादा कर चुनाव के बाद उपेक्षा कर देते थे। 1982 का साल था, इस आयोजन में वे श्री सेठी केंद्रीय गृहमंत्री के रूप में मुख्य अतिथि की हैसियत से टाउनहॉल में आ रहे थे। उस दिन टाउनहॉल खचाखच भरा हुआ था। तभी संचालन कर्ता श्री शंकर कलाकार ने घोषणा की अब एक नाटक प्रस्तुत किया जा रहा है जिसका शीर्षक है ''मैं महू हूं''। सुनकर लोगों में कौतुहल हुआ, स्वयं श्री सेठीजी भी चकित थे। मैं और मेरा रंगमंच साथी कलाकार योगेश (अब राजनीति में सक्रिय नेता) मंच पर पहुंचे। मैं जंजीरों में जकड़ा हुआ था, मेरे शरीर पर लिखा था ''मैं महू हूं''। दृश्य देखते ही तालियां बजी, और लोगों को समझ आ गया कि जरूर श्री सेठीजी को व्यंग्य परोसा जा रहा है। इसी के साथ खिलाड़ी, नागरिक और यात्री की भूमिका में मेरा साथी कलाकार आया और उसने अपनी बेबसी और आक्रोश का जिक्र मुझ 'महू' से किया। अंत में चीखकर मैंने कहा कि ''मेरा क्या कसूर है मुझे शोषित और नेतागिरी करने वालों से क्यों नहीं पूछते''? यह नाटक देखकर श्री सेठी को अहसास हो गया कि उनके चुनावी वायदों को लेकर उनके सामने व्यंग्य परोसा गया है। लोग तालियां बजाते गए और सेठीजी हॉल छोड़कर अपने लोगों के साथ उठकर चल दिये। इस नाटक को लेकर लोगों ने हमें बहुत शाबासियां दी। दूसरे दिन अखबारों ने इस पर अपने–अपने तरिके से रोचक समाचार छापे। उस समय हमें लगा कि इतने बड़े आदमी के सामने हमने क्या कर डाला था। मगर मन में संतोष था कि जो किया वो शहर हित में था। यह शहर की आवाज थी। इस बाबद राष्ट्रीय पत्रिका 'दिनमान' में मेरी रिपोर्ट सचित्र प्रकाशित हुई थी।

इस तरह गुजर गई कॉलेज लाईफ

कॉलेज लाईफ मैंने बहुत ही मस्ती के साथ निकाली। मैं एम कॉम में था, मगर मेरी घनिष्ठ मित्रता पास के ही एम ए कक्षा के अशोक पंवार ग्रुप से रही थी। हम अक्सर फुर्सत के समय कॉलेज में जमकर ठहाके लगाया करते थे। कल्चरल प्रोग्राम में खूब भाग लेते थे। और फिल्म देखने के बहुत शौकीन थे। अक्सर रोज ही फिल्म देखने का चश्का लगा रहा रहता था। शासकीय स्नात. महाविद्यालय महू में पांच साल का कॉलेज सफर इतने मनोरजंन से गुजरा कि पता ही न चला कि ये पांच साल कैसे गुजर गए।

कॉलेज समय के रोचक किस्से

"लाईफ में कुछ बिरले वाकये न हो तो कुछ भी यादगार नहीं रह जाता। अजीब से और चौंका देने वाले, वाकये जीवन में जब याद आते हैं तो फिर कभी भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं या उन पलों को याद कर मन में सिरहन सी दौड़ जाती है। ऐसे वाकयों की फिल्म सी दिमाग में कौंध जाती है। मेरे साथ हुए हैं ऐसे यादगार वाकये.."

जब मेरा हुआ अपहरण...

सन् 1974 की बात है जब मैं शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महू में बी कॉम प्रथम वर्ष का विद्यार्थी था। उन दिनों महू कॉलेज में सुरेश खण्डेलवाल की धाडू पेनल तो दूसरी ओर रामराज वर्मा की पेनल हुआ करती थी। धाडू पेनल भारी थी जबकि वर्मा पेनल कॉलेज दादागिरी में अव्वल थी। चुनाव अप्रत्यक्ष पद्धति से और कक्षा प्रतिनिधियों के चुने जाने के बाद प्रेसीडेन्ट के चुनाव तय करते थे। उन दिनों चुनाव की बहार थी और हमारी कक्षा से धाडू पेनल से हंसराज वर्मा का चयन कक्षा प्रतिनिधि चुनाव के उम्मीदवार के रूप में हुआ था। मेरी क्लास में उस समय 22 लड़कों का समर्थन मेरे साथ था, अतः मैंने चुनाव के ठीक एक दिन पहले मेरे सात रास्ता स्थित घर के टेरेस पर बैठक रखी।

यहां हम सब सहपाठियों ने निर्णय लिया कि हमें हंसराज वर्मा को ही वोट करना है। इस बात की भनक सामने वाली पेनल को लग गई वो हमारे साथियों के खिलाफ वोट न दे सकें, इसकी रणनीति बनाने लगे। सुबह 7 बजे जब मैं कॉलेज जाने की तैयारी कर रहा था तभी मोटरबाईक पर दो दादा टाइप के लड़के घर आए। उनमें से एक रामराज के भाई श्यामराज (अब स्व.) थे जिन्हें मैं जानता था। श्यामराज ने मुझसे कहा कि रामराज भैया मिलना चाहते हैं। मुझे दाल में काला लगा मगर मैं उनके साथ हो लिया। वे मुझे लेकर राऊ पहुंचे। मैं समझ गया कि मैं वोट न कर सकूं इसलिये मेरा अपहरण हो चुका है। राऊ में एक काले और एक आंख से भेंगे आदमी के पास मुझे यह कहकर उतारा कि हम थोड़ी देर में आते हैं। मेरे साथ हरिफाटक का विनोद भी था। हम समझ गए कि चुनाव होने तक इस काले और भेंगे आदमी के साथ हमें कुछ घण्टे गुजारने होंगे। वो आदमी हमें राऊ की टेकरी पर ले

गया जहां टीबी हास्पिटल हुआ करता था (अब आईआईएम है)। उस आदमी ने हमें पूरे चार घंटे तक टेकरी पर घुमाया। बाद में यह कहकर छोड़ दिया कि शायद वे लोग नहीं आएंगे, तुम रेल से महू चले जाओ। शाम को जब घर लौटे तो मुझे पता चला कि हमारा साथी हंसराज वर्मा आसानी से जीत गया तो मारे खुशी के मैंने जीत के जुलूस में खूब डांस किया। मेरे अपहरण की घटना ने मुझे प्रथम वर्ष में ही हीरो बना दिया था।

कक्षा प्रतिनिधि के बजाय जनरल सेक्रेट्री

बात 1977 की है जब मैं एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना) का कर्मठ और सेवाभावी कार्यकर्ता रहा। शिविर में सचिव बनने का मौका भी मिला। उस साल पहली बार शासन ने कॉलेज चुनाव प्रत्यक्ष पद्धति से घोषित कर दिये थे। इसलिये चुनावी सरगर्मियां चरम पर थी। मेरी भी इच्छा हुई कि मैं छात्र संघ का कक्षा प्रतिनिधि चुनाव लडूं। अपने सीनियर श्री अशोक पंवार से दिल की बात कही। श्री पंवार ने जब मेरी इच्छा चुनाव लड़ने की जानी तो वे मुझे श्री रामकिशोर शुक्ला के पास ले गए जो स्वतंत्र छात्र पेनल की ओर से अध्यक्ष का चुनाव लड़ रहे थे। पंवार ने मुझे चर्चित बताते हुए सुझाव दिया कि वे मुझे सीधे चुनाव वाले पद के 'सह सचिव' का चुनाव लड़वाए। एनएसएस में चर्चित होने के कारण सीधे पद हेतु याने सह सचिव पर मुझे उम्मीदवार बना दिया गया।। जब मैं अपने साथियों के साथ गांव–गांव जनसम्पर्क के लिये जाता था तो मुझे हर विद्यार्थी पहचानता था। ये देखकर पेनल के सीनियर छात्र रामकिशोर शुक्ला, दीपक जाजू आदि हैरान थे। तब पेनल की ओर से विचार किया गया कि मैं उपाध्यक्ष पद का चुनाव लडू। चुनाव में अभी समय था तब सह सचिव पर राकेश स्टीफंस को और मुझे उपाध्यक्ष के लिये खड़ा कर दिया गया। अब मैं वोट की दरकार उपाध्यक्ष पद के लिये करने लगा। इस बीच अचानक चुनाव एक माह के लिये आगे बढ़ गए। ग्रुप के नेता मेरी ख्याति को समझ चुके थे और मेरी जीत को तय माना जा रहा था। चुनाव के अंतिम समय में विरोधी पेनल ने पेतरा बदलते हुए जनरल सेक्रेटरी के पद पर लियो क्लब के अध यक्ष और चर्चाओं में रहने वाले श्री योगेश मूंदड़ा का नाम घोषित कर दिया। चुनाव को केवल 7 दिन रह गए थे। हमारी पेनल में फिर से विचार विमर्श हुआ कि सचिव की महत्वपूर्ण पोस्ट कैसे जीती जाए। चुनाव संयोजक श्री दीपक जाजू के पास जॉन राजेश और लक्ष्मण ढोली के नाम सामने आने लगे। लेकिन बैठक में अंतिम क्षणों में तय किया गया कि दिनेश सोलंकी ही सचिव पद पर श्रेष्ठ उम्मीदवार हो सकता है, सो मुझे डिक्लेयर कर दिया गया। मैं मन ही मन घबरा गया कि कहां

कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव लड़ रहा था और अब सीधे सचिव पद का....! वो भी केवल 7 दिन में, मैं कैसे केनवासिंग कर पाऊंगा, ये सोचकर घबराने लगा। इधर सचिव सीट पर बाजार में सट्टेबाजी भी शुरू हो गई और मेरे प्रतिद्वंदी योगेश मूंदड़ा की जीत का सट्टा खाया जाने लगा। सामने वाली पेनल अब गुण्डागर्दी पर भी उतर आई। पदाधिकारियों को चमकाने का कृत्य शुरू कर दिया गया। कहीं गुण्डे हमारा अपहरण कर चुनाव न जीत ले, इस भय से पैनल के नेताओं ने कुछ प्रत्याशियों को तीन दिन पहले ही भूमिगत कर दिया। हम ब्रिगे. उमट के सर्वन्ट क्वार्टर में ही दो रात तक रहे। चुनाव वाले रोज मुझे बहुत घबराहट हुई क्योंकि सचिव पद पर मैं किसी को वोट के लिये जनसम्पर्क नहीं कर पाया था। उस दिन मैं चिंतित होने के बावजूद कॉलेज पहुंचकर विद्यार्थी वोटर्स को मुस्कराते हुए वोट देने की अपील कर रहा था। रिजल्ट आने तक मन बैचेन और अजीब सा रहा। ''मैं हार जाऊंगा'', यही सोच कर मन घबराता रहा। जब रिजल्ट खुला तो मैं भारी मतो से मैं जीता, ये मेरे और श्री मूंदड़ा के लिये हैरानी की बात रही। श्री मूंदड़ा अप्रत्याशित रूप से 105 वोटों से हार गए। वे कॉलेज में ही रो पड़े, उन्हें हार का तो जरा भी अनुमान नहीं था। सिर्फ मूंदड़ा ही नहीं उनकी पेनल के सभी मुख्य पदाधिकारी हार चुके थे। हमारी जीत पर शानदार जुलूस निकला। विज्ञान संकाय की किरण संकत का दिली अहसान रहा जिसने मेरे पक्ष में साइंस फैकल्टी में वोट एण्ड सपोर्ट मांगा था।

तीन चुनाव हारे भी...

कॉलेज चुनाव की तगड़ी जीत ने मुझे अपने शहर में चर्चित रूप से स्थापित कर दिया। अगले साल ही मुझे अध्यक्ष पद के लिये प्रपोज कर दिया गया मगर ये चुनाव मैं अप्रत्याशित रूप से हार गया। मेरे पेनल संयोजक रामकिशोर शुक्ला थे जिनके 'बड़े बोल' थे की मुझे कोई हरा नहीं सकता, के चलते कुछ लड़के चिढ़कर सामने वाली पेनल में जा मिले थे। मैं यह चुनाव कुछ मतों से हार गया था। मेरे सामने तैयबी परवेज चुनाव लड़ रहा था जिसके साथियों ने श्री शुक्ला के बड़बोले बोल से चिढ़कर उसे मैदान में उतार कर एक जुट होकर मेहनत की थी। इस चुनाव में मैं अलग–थलग पड़ गया था, इसलिये मेरा हारना न चाहते हुए भी तय हो गया था।

शासकीय कॉलेज से एम कॉम की पढ़ाई पूरी कर मैं आर सी जाल लॉ कॉलेज में पहुंचा। यहां सेकन्ड इयर में पुनः अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ा। तब कॉलेज के प्रिंसिपल रहे श्री कृष्ण गोपाल माहेश्वरी के पुत्र दिनेश माहेश्वरी चुनाव के अंतिम दिनों में उम्मीदवार बन सामने आ गए। जबकि मेरा मुकाबला विजय नौलखा से हो रहा था। इसी बीच चुनाव के पांच दिन पूर्व ही मेरी दादी गुजर गई। श्री माहेश्वरी

की उम्मीदवारी के कारण मेरे साथ के दम भरने वाले कुछ सीनियर लड़के और छात्र नेता पीछे के दरवाजे से भाग लिये। बावजूद मैंने हिम्मत नहीं हारी और अकेला ही चुनाव लड़ने के लिये हर स्टूडेन्ट के घर–घर गया। बदकिस्मती से मात्र 6 वोटों से पराजय मिली थी, जबकि विजय नौलखा तीसरे नम्बर पर रहे।

कैंट का चुनाव

1997 में एक चुनाव.... छावनी परिषद के आम चुनाव में निर्दलीय रूप से वार्ड 2 के लिये लड़ा। प्रतिद्वंदी भाजपा के शिव शर्मा और कांग्रेस के अशोक जायसवाल के पास राजनीतिक ताकत थी और मेरे पास केवल चना गोदाम के रहवासियों का विश्वास। मैं इस चुनाव में मात्र 226 वोट हासिल कर पाया था। इस प्रकार हार जीत के खट्टे मीठे अनुभव चलते रहे। वहीं महू प्रेस क्लब में दो बार अध्यक्ष रहा तो दो बार सचिव भी रहा।

एक वोट से जीते कैलाशदत्त पाण्डे

आज के छावनी बोर्ड उपाध्यक्ष श्री कैलाशदत्त पाण्डे मुझसे काफी जूनियर रहे हैं। ये इत्तेफाक रहा कि उनके राजनीति में सफल प्रवेश के पीछे मेरी अहम भूमिका रही है। बात उन दिनों की है जब छात्र संघ की पेनलों के दांव पेच तब महू शासकीय कॉलेज और लॉ कॉलेज में एक साथ चलते थे। श्री पाण्डे जब आर सी जाल लॉ कॉलेज में प्रथम वर्ष के विद्यार्थी बने तो आते ही अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने की इच्छा कर बैठे। स्वतंत्र छात्र संघ के बैनर तले शासकीय महू कॉलेज में योगेश यादव को अध्यक्ष पद हेतु घोषित करने के साथ ही यह तय हुआ कि इसी पैनल से श्री पाण्डे को लॉ कॉलेज में अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ाया जाए। इस निर्णय के साथ ही मेरे सीनियर्स ने मेरी राय लिये बगैर लॉ कॉलेज के चुनाव का मुझे पेनल संयोजक बना दिया गया। मैं श्री पाण्डे के कतई फेवर में नहीं था क्योंकि वो प्रथम वर्ष के स्टूडेन्ट थे। जबकि आर्मी के स्टूडेन्ट वोट देने के मामले में सीनियरिटी को महत्व देते थे इसलिये श्री पाण्डे के लिये वोट कबाड़ना मुश्किल भरा काम था। मैं भयभीत हुआ कि कहीं पाण्डे हार गए तो मेरी भी किरकिरी होगी, मैं बहाना बनाकर जोधपुर अपनी बहन के घर चला आया। इधर श्री पाण्डे अकेले पड़ गए और उनके प्रतिद्वंदी उमेश चौरसिया धुंआधार प्रचार प्रसार करने लगे। क्योंकि कॉलेज के सीनियर छात्र छात्राओं का उन्हें सपोर्ट मिलने लगा। जोधपुर में रहते हुए चुनाव के अंतिम पांच दिनों में मुझे अपने किये पर आत्मग्लानी होने लगी, कि कहीं मैं डरपोक सिद्ध न हो

जाऊॅं। मैं वापस महू आ गया। पता चला कि पाण्डे की राजनैतिक गुटीय कारणों से अन्य सीनियर स्टूडेन्ट्स का सपोर्ट नहीं मिल पाने से मायूसी थी, लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। कौँलेज में चुनाव जीतने और हारने का मेरे पास खासा अनुभव हो चुका था सो मैंने फिर श्री पाण्डे को जिताने के लिये जी तोड़ मेहनत शुरू की। सबसे पहले आर्मी के 15 से अधिक विद्यार्थियों को विश्वास में लिया। फिर एक शहरी गुट को जो किसी को भी वोट नहीं देने का मन बना चुका था को मैंने निवेदन कर श्री पाण्डे के पक्ष में मनवाया। जब मतदान हुआ तो दोनों ओर अनिश्चितता का वातावरण बना हुआ था। मैं श्री पाण्डे की ओर से वोटों की गिनती कर रहा था। वोट भी बराबर से बंट रहे थे और धड़कने तेज हो रही थी। लेकिन मेरे विश्वास की जीत होनी थी सो अंततः एक वोट से जीत श्री पाण्डे की हुई। श्री पाण्डे को खुशी का ठिकाना नहीं रहा उन्होंने पैर छूकर कहा कि तुम नहीं आते तो ये जीत नसीब नहीं होती। मैं जीत से संतुष्ट रहा, क्योंकि यदि जोधपुर में ही रहता तो शायद मैं हमेशा डरपोक कहलाता जो जीवन भर मुझे अमिताभ बच्चन की फिल्म 'काला पत्थर' की भूमिका की तरह खलता रहता।

प्रेम विवाह से शुरू की जिंदगी की दूसरी पारी...

> **"मैं जिंदगी के ऐसे मोड़ पर खड़ा था जहां कुछ सूझ नहीं रहा था कि आगे का रास्ता कहां से शुरू करूं। तब जीवन साथी का चयन किया और उसी के हमकदम से बस चलता ही रहा और रास्ते अपने आप बनते रहे।"**

कॉलेज लाईफ मुझे बहुत कुछ अनुभव दे गई। कभी न गम्भीर रहने वाला मेरा मन अपनी जीवन साथी के चयन को लेकर वाकई गम्भीर हो चुका था। कोई पांच छः लड़कियां ऐसी भी आईं लाईफ में, जिन्हें शादी लायक समझकर कदम आगे बढ़ाए, मगर फिर मन ने 'ना' कही, और कदम पीछे खींच लिये। आखरी में एक लड़की पसंद आ गई। उसे पाने के लिये बहुत गम्भीर हुआ, पहली बार अहसास हुआ कि प्यार की दीवानगी क्या होती है। अंततः ईश्वर की कृपा से मैंने उससे शादी कर ली। पत्नी के रूप में अनु (अनुराधा राठौर) मिली। वह नृत्यांगना रही थी और मैं उसके नृत्य को देख देखकर उसे पाने की इच्छा रखता था। जब अनु से मेरी

नजदीकियां बढ़ी तो मेरी दीवानगी को देखकर मेरे दोस्त भी मेरा मजाक उड़ाया करते थे कि मैं कभी किसी के लिये सीरियस नहीं हो सकता। मगर मैं जानता था कि अनु को पाने के लिये मैं बहुत सीरियस हो चुका था। शादी के लिये बहुत पापड़ बेले। मैं चाहता था कि शादी मां बाप की सहमति से हो, लेकिन प्रयास के बाद भी जब ऐसा न हुआ तो प्रेम विवाह का कदम उठा लिया। इस कार्य में अपने समय की लोकप्रिय, चर्चित और समाजसेवा में अग्रणी किरण दीदी (किरण नकुल) का सहयोग ही हमारी शादी का मुख्य आधार बना। अलावा श्री कुलवंतसिंह शेहरी, योगेश यादव, चंदा बारगल, राबर्ट भारती, आदि ने टीम वर्क के साथ मेरी शादी कराने में सहयोग किया।

शादी भी मनोरंजक रही

12 जनवरी 1984 की सुबह मेरे लिये अहम थी। इस सुबह के इंतजार में रात भर ठीक से सो नहीं पाया। यह राज मैंने अपने मित्र योगेश को बताया था। प्लान के मुताबिक सुबह जल्दी घर से निकलने को तैयार हुआ था। जाने से पहले मैंने अपनी मां के पैर छूकर कहा था कि मुझे आशीर्वाद दो, मैं शादी करने जा रहा हूं। सुनकर वह अचम्भित रह गई थी। ऐसा ही पिता से कहा था इन्दौर लॉण्ड्री पर जाकर। वे घबरा रहे थे कि कहीं कुछ पुलिस केस न हो जाए। उधर किरण दीदी ने सारी तैयारियां की थी और इधर मैं अपने दोस्तों को लेकर इंदौर पहुंचा था। तय समय के अनुसार अनु भी वहां आ चुकी थी। आर्यसमाज रीति से विवाह हो रहा था और मैं खुशी से फूला नहीं समा रहा था। काफी मस्ती भी हो रही थी। मेरे पत्रकार मित्र चंदा बारगल भी वहां पहुंच चुके थे। मशहूर फोटोग्राफर जाकिरअली मरहूम, रामकिशोर शुक्ला, योगेश यादव, किरण नकुल समेत एक दर्जन मित्र मण्डली मौजूद थी। दो घण्टे में शादी हो गई शाम के न्यूज पेपर दैनिक दोहपर में न्यूज भी छपवा दी कि मैंने शादी कर ली। और फिर प्रश्न खड़ा हुआ कि अब कहां जाया जाए...! क्योंकि निश्चित रूप से अनु के परिवारवाले शिकारियों की तरह हमारी खोज खबर में लगे होंगे।

हनीमून खेत के झोपड़े पर....

लोग शादी के बाद हनीमून के लिये किसी अच्छे स्थल की तलाश में ठण्डे स्थानों, होटलों में, बड़े शहरों में जाते हैं। मगर हमारा हनीमून इन्दौर में ही एक खेत

पर बने मचान में हुआ था। शादी के तुरंत बाद ससुराल पक्ष, पुलिस आदि विवाद से दूर रहने के लिये कहां जाया जाए के प्रश्न पर विराम लगाते हुए किरण दीदी के एक कबड्डी दोस्त ने कहा कि कहीं जाने और चिंता करने की जरूरत नहीं, आज की रात मेरे खेत पर गुजारो। खेत पर जाने से पूर्व हमने इंदौर के तमाम मंदिरों पर जाकर ईश्वर का आशीर्वाद लिया। शाम को हम भागीरथपुरा के पास ही उस खेत पर पहुंचे। विशाल खेत के बीच में एक सुंदर सा मचान बना हुआ था। हम उस मकान में पहुंचे तो अजीब सी खुशी हो रही थी। मानो दुश्मन को भी यह अहसास न था कि हम कितनी सुरक्षित जगह पर थे। पूरी रात बातों–बातों में ही गुजर गई। एक दूसरे को देखने मिलने के लिये तरसने वाले हम दो खुशनसीब अचानक इतने पास और हमेशा के लिये होंगे, यह क्षण हमारे लिये सचमुच जिंदगी का सबसे अहम और पूज्यनीय था। दूसरे दिन मैं और अनु हमारी मॉडर्न लॉण्ड्री पर पहुंचे जहां पिताजी ने रामपुरावाला बिल्डिंग की सेन्ट्रल लॉज में एक वीआयपी कमरा बुक कराया था। एक रात हमने वहां गुजारी। इधर दो दिन तक मेरा साला दीप गुस्से में मुझे ढूंढता रहा। उसके मित्र अनिल जायसवाल ने अनु के पिता को खैरियत की खबर दी फिर मेरे श्वसुर ने एक पार्टी रखकर इस शादी पर सहमति की मोहर लगा दी। ससुराल पहुंचकर श्वसुर ने अंगूठी दी और मुझे गले लगाया, मगर मेरी सास गुस्से में ही रही, पूरे तीन महिने तक। प्रेम विवाह का सिलसिला फिर बाद में मेरी बहन कांता, कुसुम ने दोहराया। 25 साल बाद अंकल के पुत्र अरविंद और मेरे भतीजे अभिषेक ने भी अपनी मनपसंद शादी की। अब तो समय ही मनपसंद शादी का चल रहा है।

लाईफ के दु:खी हादसे

“दु:ख और सुख हरेक की लाईफ में सायकल के दो पहियों की तरह साथ चलते हैं। इंसान को हमेशा तनावमुक्त होकर जिंदगी जीना चाहिये क्योंकि तनाव आपकी किसी भी समस्या का हल नहीं होता। जरूरी है कि आप तनाव मुक्त होकर ही अपनी समस्या का हल आसानी से निकाल सकते हैं। मेरी लाईफ में कुछ झटके दिल को झकझोर गए। कहीं मैंने हिम्मत दिखाई तो कहीं पत्नी का साथ जोशभरा मिला। हिम्मत हो तो ईश्वर जरूर दु:ख हरने की ताकत देते हैं, यह हर समय महसूस हुआ”

1. छः माह में ही छोड़ा घर...

प्रेम विवाह से घर के सभी सदस्य सहमत नहीं थे इसलिये कुछ खुला विरोध करते थे और कुछ मन में रखते थे। विरोध की ये बू कामकाज, रीति रिवाजों को लेकर आ रही थी। पत्नि अनु परेशान होने लगी थी। वह इन्दौर जीडीसी कॉलेज में कत्थक नृत्य भी सीख रही थी, इसलिये उसे कॉलेज जाने के लिये सलवार सूट पहनने पर सख्त एतराज जताया जा रहा था। अत्याधिक घूंघट लिये जाने पर दवाब बनाया जाता था तो घर में झाड़ू, पोंछा, बर्तन और कपड़े धुलाई के लिये बेल की तरह जोता जाने लगा था। इन सब बातों का मैं विरोध करता था। मेरा कहना था कि एक बाई इन कामों के लिये रखी जाए। मेरे इस सुझाव को जोरू का गुलाम निरूपित किया जाता था। एक दिन इन्हीं बातों को लेकर विवाद तेज हो गया और मुझे पत्नी को लेकर घर छोड़ने पर विवश होना पड़ा।

घर छोड़ने के बाद मैं अपने ससुराल आया। जहां मेरे सास श्वसुर ने मुझे सांघी स्ट्रीट स्थित दो छोटे कमरे किराये पर दिलवाए। हमारा ये आशियाना बहुत छोटा था मगर आज मुझे लगता है कि वो दो कमरे का आशियाना ही हमारे लिये जन्नत थी जहां मेरी पत्नी और दो बच्चों के साथ रहकर लगता था हम कितने सुकून से रहते थे। सुकून आज भी है मगर परिस्थितियां बहुत बदल गई हैं जो कभी कभी मन को बहुत टीस देती हैं। जिसका मैं जिक्र करना उचित नहीं समझता.....आखिर ये मेरी टाईमपास आत्मकथा जो है, आपको बोर करना थोड़े ही चाहता हूं।

2. जब पिता को बेदखल किया गया

ऐसा नहीं है कि मैंने अपनी जिन्दगी में सब अच्छा ही देखा है और मस्ती और खुशी के बीच ही जिया। कई पल ऐसे भी आए जब हम बहुत परेशान हुए, हमारा परिवार भी संकट में फंसा। मगर ईश्वर ने हमारी मुश्किलों को हमेशा पार लगाया। पिता मॉडर्न लॉण्ड्री, इंदौर में चार भागीदारों में से एक रहे। उनको एक भागीदार द्वारा धोखाधड़ी कर लॉण्ड्री व्यावसाय से पृथक करने का वाकया मेरी जिंदगी का अहम हिस्सा रहा। ये दो महिने मुझे जिन्दगी भर याद रहेंगे, जब कोर्ट कचहरी के चक्करों में, दादा गुंडों के बीच से गुजरना पड़ा। मेरी पत्नी यदि मुझे उस समय मेरी सोई और हताश आत्मा को नहीं जगाती तो मैं पिता के सम्मान को वापस न ला पाता, ये सोलह आने सच रहा। इस घटना को बताने से पहले मैं संक्षिप्त इतिहास में ले चलता हूं।

मैं बचपन से अपने पिता की सदैव इज्जत करता रहा, मगर उनके अत्याधिक

भोलेपन से मैं उन पर कई बार नाराज भी हुआ। उन्होंने अपनी जिन्दगी को बहुत तकलीफों और गरीबी में जिया था। किस्मत उन पर 1952 में मेहरबान हुई थी जब वे चार दोस्तों के बीच में भागीदार फर्म खोलने का साहस कर बैठे थे। 1952 से शुरू हुए इस सफर में चारों दोस्तों में जो विश्वास, सामंजस्य था उससे फर्म मॉडर्न लाण्ड्री ने न सिर्फ इन्दौर में अपितु मध्यप्रदेश में बड़ी होने का गौरव प्राप्त किया। मगर पिता की जरूरत से ज्यादा सिधाई से दो भागीदार उन पर हावी भी होने लगे थे। एक भागीदार के सबसे छोटे पुत्र ने दुकान अकेले हड़पने की शर्मनाक साजिश भी रची जिसके चलते मेरे पिता और उनके साथ के पार्टनर को फर्जी कागजातों पर हस्ताक्षर करने के बाद अपनी ही दुकान से बेदखल होना पड़ा। यह बात पता चलने पर मैं पिता पर बहुत क्रोधित हुआ था कि क्योंकर कागजों पर हस्ताक्षर करने से पहले मुझे ज्ञान में नहीं लाया गया। चूंकि मैं शादी के बाद से अलग घर में रहता था और पिता ने ही मुझे लाण्ड्री की भागीदारी (पिता की भागीदारी में मैं 10 प्रतिशत का हिस्सेदार रहा था) से 1985 में ही पृथक कर दिया था। पिता मुझे हटाने के बाद से अकेले से हो गए थे और उनके अकेले रहने के कारण एक भागीदार ने गुण्डों के साथ मिलकर फर्जी कागजों पर हस्ताक्षर कराने का षड़यंत्र रच दिया था। इसी बात से मैं परेशान रहा था और पता चलने पर मैं उन पर उफन सा पड़ा था। मेरे गुस्से के बावजूद बदले में उनका प्रति उत्तर चौंकाने वाला था कि ''मैं फिर से मेहनत करूंगा और नई लॉण्ड्री बनाऊंगा।'' पिता के भीतर की तड़प देखकर मैंने बहुतेरा प्रयास किये कि मैं पिता को उनका सम्मान किसी तरह लौटा सकूं। मगर पार्टनर के लड़के द्वारा गुण्डों का सहारा लेने के कारण मामला जोखिमभरा बनता जा रहा था।"

दो माह के अथक प्रयास के बाद जब मैं निराश होने लगा तब मेरी पत्नी ने मेरे भीतर के आत्मविश्वास को जगाया। मुझे कहा कि इस तरह से घर में बैठने से और दूसरों पर निर्भर रहने से काम नहीं चलेगा। बाबूजी को उनका हक दिलाने में तुम्हें संघर्ष करना ही पड़ेगा। पत्नी के इन शब्दों ने मेरे सोए अस्तित्व को जगा दिया और एक दिन 18 जून 1992 को आत्मविश्वास के साथ दोस्तों को लेकर लाण्ड्री जा पहुंचा। भागीदार और उसके रखे गुण्डों के साथ हाथापाई हुई, पुलिस केस बना, मगर जीत मेरी याने सत्य, साहस और आत्मविश्वास की हुई। अपने पिता और उनके दूसरे भागीदार श्री कुंदनलाल परदेशी को फिर से लॉण्ड्री पर काबिज करवाया। यह सब कुछ करने के लिये मुझे दोस्तों का सहयोग मिला। जिनमें दैनिक दोपहर के श्री नवनीत शुक्ला, महू कोदरिया के जगदीश यादव, अनिल सुले, चना गोदाम के आनंद, बंटी, जोजी, आदि उल्लेखनीय रहे। वरिष्ठ एडवोकेट श्री के जी माहेश्वरी ने इस केस में दिली सहयोग भी दिया और उन्हीं की समझाईश पर मैं 7 साल के बाद फिर मॉडर्न लाण्ड्री का भागीदार बना। याने श्री राम के 14 वर्ष के वनवास की तरह आधा वनवास

मैंने भी काटा था। श्री राम ने वनवास के दौरान सीता अपहरण को लेकर युद्ध किया था तो मैंने पिता को पुनः सम्मान दिलाने के लिये भागीदार और उसके गुण्डों से लोहा लिया था। श्री राम का हनुमान का साथ मिला था तो मुझे अपने दोस्तों और स्नेहियों का।

3. शिमला टूर....सफर के साथ धोखा

बात सन् 1993 जून 5 की है जब आकस्मिक योग बने थे पहली बार शिमला टूर के। मैं शादी के 8 साल बाद पहली बार परिवार के साथ लम्बी यात्रा पर घूमने निकला था। मैं, अनु, मेरे दोनों बालक करन उर्फ विशी और चैतन्य उर्फ किशी के अलावा मोहल्ले का राजू एडवीन भी शामिल था। सफर में मेरा दोस्त अशोक पंवार, उसकी पत्नी और उनकी एक बालिका भी मिल गए जो भी इत्तेफाक से शिमला टूर पर जा रहे थे। 6 जून की सुबह दिल्ली पहुंचकर हमें यह आभास हुआ कि हमने शिमला के लिये रिजर्वेशन नहीं करा रखा था। बेहद गर्मी और जून के इस माह में ट्रेनों में जगह नहीं थी ऐसे में बस के बारे में पता किया जाए तो ठीक होगा, यह सोचकर हम बस का पता करने रेलवे स्टेशन से बाहर निकले। दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने ही दिल्ली–शिमला टूर ट्रेवल्स नजर आया। हम फौरन वहां पहुंच गए। हमें इतनी बड़ी संख्या में देखकर और शिमला जाने का सुनकर ट्रेवल्स वाले ने फौरन 'हां' की, कहा आज के ही यात्रा टिकट मिल जाएंगे। कुछ बुरा होने वाला होता है तो मेरी दिमाग की लाईट जलने लगती है। मुझे शक हुआ कि कहीं ये ट्रेवल्स वाला धोखा तो नहीं देगा? क्योंकि दिल्ली ठगोड़ों की भी नगरी है। मगर हमारे मित्र बोले यार सब ठीक हो जाएगा। ट्रेवल्स वाले ने बताया कि शिमला की बस शाम को मिलेगी। अब दिन भर कहां जाएं तो हमें पास ही एक लाज नजर आई। लॉज में हम शाम तक रूक लिये, लॉज वाले सरदारजी भी उज्जैन के रहने वाले निकले, सो उनसे अच्छी मुलाकात हुई। जैसे तैसे शाम बीती हम वापस ट्रेवल्स वाले के पास पहुंचे तो वहां चमचमाती नई बस खड़ी थी जिसमें हमें बिठाया मगर बस पूरी खाली थी। मुझे फिर शक गहराया, पूछा ये खाली क्यों हैं, के जवाब में कहने लगा कि बस मेन स्टेण्ड पर जाकर पूरी भरती है। मेरा शक बढ़ता ही जा रहा था कि मेन बस स्टेन्ड भी आएगा या नहीं और यदि आया तो हमारे ये टिकट असली होंगे या नहीं। इन्हीं शंकाओं के चलते बस मेन स्टेन्ड पर पहुंची तो मेरी शंका सच निकली। सवारियां धड़ाधड़ घुसी और हमारी सीटों पर आकर हक जमाने लगी। मैंने पत्नी और अपने दोस्त से कहा कि हमें ठगा गया है और ये बस संचालक भी मिला हुआ है जिसके कारण ये हमें यहां तक ले आया मगर अब यहां हमें उतार देगा, ऐसे में रात को कहां जाएंगे। हमने तय किया कि पूरी ताकत से इन धोखेबाजों का सामना

करना होगा। मगर अशोक डर गया। जब असली बस संचालक अंदर आया तो वो हमारे टिकट देखते ही बोला अरे ये तो नकली टिकट है, आप उतरो इस बस में से। बिल्कुल वैसा ही हुआ जैसा सोचा था। सारा मामला भांपकर मैं और मेरी पत्नी अड़ लिये और कहा कि इसी टिकट पर इसी बस में जाएंगे। इस पर संचालक गरम हुआ कहा कि सीधी तरह उतर जाओ। मैंने कहा मैं पत्रकार हूं पुलिस को शिकायत कर दूंगा, इस पर वो बोला पुलिस को हम पैसा देते हैं, वो हमारी गुलाम है। मैंने भी तेश में आकर कहा देखते हैं आज कौन जीतता है यहां, पत्रकार या तुम्हारी दादागिरी। विवाद में आधा घंटा बीत गया। हमारे तेवर देखकर बस संचालक ने पहले तो बहुत आंख दिखाई फिर भीतर ही भीतर घबराने लगा। झगड़ा बढ़ता ही गया और सवारियां भी कांपने लगी। अंततः हमारी हिम्मत के आगे बस संचालक घबरा गया और उसने उसी बस में हमें भी एडजेस्ट किया। यदि तत्समय हम भी हिम्मत हार गए होते तो दिल्ली में पैसा लुटाकर रात भर बस स्टॉप पर बच्चों को लेकर भटकते रहते।

4. पिता जब घर छोड़ गए....!

मुझे सितम्बर 2011 की वो घटना याद है जब मेरे पिता (श्री मूलचंद सोलंकी) जो कि अपने दो छोटे पुत्रों के साथ सात रास्ता वाले खुद के मकान में निवास करते हैं, एक दिन अचानक बिना बताए घर से चले गए। मुझे बहुत दिनों से यह पता चल रहा था कि मेरे छोटे भाई योगेन्द्र और जितेन्द्र में आपस में बनती नहीं है। दोनों बेटों की जंग को बार बार देखकर पिता शायद बौखला गए। मां के चले जाने के बाद से पिता यूं भी अकेले हो गए थे, ऐसे में उनको बेटों से अपनत्व की चाह थी जो आपसी मनमुटाव के चलते मिल नहीं पा रही थी। ये उनसे देखा नही ंजाता था और वे मन ही मन में घुटते रहते थे। मैं चाहता था कि पिताजी मेरे घर रहे मगर उन्हें अपना ही घर प्यारा था। उस दिन अचानक पिताजी घर से गायब हो गए। गायब होने की सूचना पास ही रहने वाले डॉ धर्मा देते हैं कि आपके पिताजी कहीं खो गए हैं। सुबह सुबह ऐसा समाचार दिल को दहला देने से कम नहीं था। पिताजी चले गए हैं..? लेकिन कहां..? सोच–सोचकर परेशान हो गया। मैंने बच्चों को दौड़ाया सड़कों पर गाड़ी लेकर, मोहल्ले के जोजी को लेकर मैं खुद भी कार में चारों दिशाओं में लगभग 100 किमी के दायरे में उन्हें ढूंढता रहा, मगर सब बेकार रहा। शाम को अचानक रतलाम निवासी मेरी बहन ने सूचना दी कि वे सुरक्षित यहां घर आ गए हैं सुनकर आश्चर्य हुआ, मगर दिल को राहत मिली। उन्हें दूसरे दिन महू लाया गया। यह घटना मेरे साथ मेरे भाईयों को भी सबक दे गई। आज पिता की चिंताजनक हालत है और मेरे परिवार सहित मेरे दोनों भाईयों के परिवार उनकी देखभाल कर रहे हैं।

5. जब मां तकलीफ से गुजर गई..!

मुझे मेरी मां बहुत चाहती थी। जब भी मैं अखबार में किसी के खिलाफ तीखी कलम चलाता था वह अक्सर मुझे कहती थी दिनेश क्या तुझे डर नहीं लगता। ये सुनकर मैं मुस्करा देता था। शादी के 6 माह बाद ही मैं शायद घर से अलग नहीं होता यदि मां उस घड़ी वहां होती। मां उस समय उज्जैन गई थी, खैर मॉ ने पूरी जिंदगी बहुत मेहनत की थी। देर रात तक घरेलु कार्य करना और सुबह 4 बजे उठकर बाबूजी के लिये रोटी बनाना। बाबूजी तब साईकल से इन्दौर मिल में काम करने जाया करते थे। तब मेरा जन्म नहीं हुआ था। हमारा धोबी धंधा था। मॉ ने बहुत सालों तक कपड़ों पर प्रेस करके गुजारा किया। आखिर हम 11 भाई बहन थे और दादी, काका काकी, उनके चार बच्चे मिलाकर लगभग 20 लोगों का परिवार था। अकेले पिता पर जिम्मेदारी थी इसलिये घर पर टेबल लगाकर मां प्रेस करके पैसा कमाने में सहयोग करती थी। मां ने ही मुझे 12 साल की उम्र में कपड़ों पर प्रेस करना सिखा दिया था।

अंतिम दिनों में आखरी दो साल उसके बहुत कष्टप्रद निकले जब शारीरिक रूप से वह लाचार हो गई। मगर मेरे साथ मेरे घर वह 10–15 दिनों से ज्यादा नहीं रहती और सात रास्ता स्थित घर पर जिद करके चली जाती थी। याने जैसे पिता की आदत थी। उसकी शारीरिक अपंगता को बढ़ाने में हम तीनों भाई कहीं न कहीं से दोषी रहे हैं ऐसा मैं मानता हूं। क्योंकि समय रहते उसकी देखभाल नहीं हुई थी। बाबूजी लॉण्ड्री को पत्नी से ज्यादा प्यार करते थे क्योंकि उन्होंने लॉण्ड्री को बड़ी मेहनत से स्थापित किया था। पत्नी की लाचारी के बावजूद वे लॉण्ड्री का मोह नहीं छोड़ पा रहे थे, यह बात मुझे नागवार गुजरती थी। एक दिन मैंने आवेश में आकर उन्हें मां का ध्यान नहीं करने को लेकर बहुत कुछ बोल दिया। वे इतने द्रवित हुए कि उसी दिन से लॉण्ड्री जाना छोड़ दिया। फिर उन्होंने मां की बहुत सेवा की। अंतिम दिनों में उन्हें भी अहसास हुआ कि पति की सेवा कितनी जरूरी थी। बावजूद मां बहुत पीड़ा से मरी। उसका अंतिम चेहरा मैं कभी भूल नहीं पाऊंगा।

ईश्वरीय चमत्कार से पारिवारिक रक्षा

"जीवन देना और लेना ऊपर वाले के हाथ में है। ईश्वर हर पल, हर जगह होते हैं, यह सत्य है। ईश्वर किसी भी रूप में सच्चे मन से याद करने पर न सिर्फ उपस्थित होते हैं बल्कि साथ भी देते हैं। बशर्ते आपका दिल साफ हो और आपके कर्म अच्छे हों।"

ईश्वर सत्य है ये मैंने कई बार महसूस किया है। यह भी महसूस किया है कि जो जैसा बोता है वैसा ही पाता है और दो नम्बर की कमाई एक दिन बेभाव जाती है। मैंने जीवन सहज जिया है और ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा भी खूब रही है। कोई 25 साल पहले एक बुद्धिजीवी ने मेरा हाथ देखकर बताया था कि तुम सिर्फ कर्म करो, तुम्हारे आगे के रास्ते अपने आप बनेंगे। तुम पर कभी कोई दुश्मन विजय प्राप्त नहीं कर पाएगा बल्कि मारने की कोशिश करेगा तो भी सफल नहीं हो पाएगा। मेरे बारे में भविष्यफल बताने वाले ये महाशय कोई ज्योतिषि नहीं थे, उनका केवल शौक था। वे मुझे एक बार इन्दौर जाते समय महू के अभिभाषक श्री रमेशचंद्र माहेश्वरी के साथ कार में मिले थे, उनकी भविष्यवाणी मुझे सही कई मौकों पर सही लगी।

1. मैं और मेरे श्वसुर की 'वो' तारीख आखरी हो गई होती

10 दिसम्बर 1996 की रात 8 बजे का किस्सा शायद मैं पूरी जिन्दगी भर नहीं भूल सकता। यह तारीख मेरे और श्वसुर के लिये आखरी तारीख भी हो सकती थी। मोहल्ले के आपसी विवाद के चलते उस रात राजमोहल्ले के कुछ युवकों ने मुझे मेरे ही घर पर आकर घेर लिया। वे सब यह शंका कर रहे थे कि जिन लड़कों का उनसे विवाद था, मैं उन्हें संरक्षण दे रहा हूं। मेरे समझाने के बाद भी कि ऐसा नहीं है, वे नहीं मान रहे थे। जब वे चिल्लाने लगे तो सुनकर मेरे श्वसुर भी बाहर आ गए। इन लड़कों को देखकर वे भी गुस्से में आ गए और उन पर बरस से पड़े। मैं मेरे श्वसुर को चुप रहने के लिये कहता इस बीच उन लड़कों में से एक ने मेरी पीठ पर गुप्ती

का घातक वार कर दिया। मेरे श्वसुर के पेट में भी चाकू मार दिया जिससे उनके पेट की अतड़ियां ही बाहर आ गई। इतना करके लड़के रात के अंधेरे में नौ दो ग्यारह हो गए। मैं श्वसुर की हालत देखकर गुस्से से लाल पीला हो गया और उन्हें अपनी वेन में डालकर अकेला राजमोहल्ला के चौराहे पर चला आया। यहां गुस्से में चिल्लाकर हमलावरों को ललकारा। तब तक सारे शहर में बात फैल चुकी थी। आश्चर्य इस बात का रहा कि मुझे पीठ में घुसेड़ी गई गुप्ती के बारे में तब भी बिल्कुल पता नहीं था। रात के अंधेरे में मैंने समझा था शायद मुक्का मारा होगा। मुझे उस समय मेरे श्वसुर के घायल होने पर उनकी जान की सुरक्षा की चिंता थी। सो उन्हें शास. आम्बेडकर अस्पताल ले गया जहां डॉ महेश तिवारी की सलाह पर तत्काल इन्दौर एम वाय रेफर किया गया था। बाद में डॉ तिवारी ने मेरा चेकअप कर बताया था कि मुझे तो गुप्ती मारी गई है तो मेरे हाथ पैर फूल गए। मुझे भी तत्काल इन्दौर एम वाय जाने को कहा। एम वाय में मेरे इलाज के दौरान एक्सरे में पता चला था कि गुप्ती मेरे शरीर के किडनी भाग के पास आकर रूक गई थी। ततसमय मुझे उस बुद्धिजीवी ज्योतिष की याद आई और मैंने ईश्वर को बहुत धन्यवाद दिया था। बाद में सभी हमलावर लड़के मुझसे माफी मांगने आए थे। इधर इलाज के चलते श्वसुर की आवाज चली गई थी जो 21 दिन बाद धीरे धीरे वापस आई। इंदौर के कई अखबारों में यह समाचार सुर्खियों में प्रकाशित हुआ था। कोर्ट केस चला फिर मुझे लगा कि ये लड़के गलतफहमी में आकर मुझ पर हमला कर बैठे थे इसलिये कोर्ट में मैंने ठण्डा रूख कर उन्हें छोड़ दिया।

2. जब बेटा सैकड़ों फीट नीचे खाई में गिरा

''गांव के व्यक्ति ने हमें मोबाईल पर यह सूचना दी कि ''आपका बेटा खाई में गिर गया है उसकी टांग टूट गई...'' सुनकर हमारे होंश उड़ गए। इस एक कॉल के बाद शुरू हुआ हमारी भागम भाग का दौर। उस दिन फिर जोगी भड़क में वो 7 घण्टे कैसे बीते, यह हमारे परिवार के लिये किसी रोमांच से कम नहीं थे।''

30 जनवरी 2011 दिन रविवार... बड़े सवेरे चैतन्य अपने इंदौरी मित्र भरत बासवानी के साथ अपनी रॉयल इनफिल्ड मोटर सायकल से फोटोग्राफी करने पातालपानी जाना चाहता था मगर पत्नी को न जाने क्यों शंका हुई उसने पातालपानी के लिये मना कर दिया। इसलिये वह पातालपानी न जाकर अपने दोस्त की सलाह पर जोगीभड़क जा पहुंचा। 8 बजे मुझे चैतन्य ने मोबाइल पर बताया कि वे

जोगीभड़क में है, सुनकर मुझे अचरज हुआ। मैंने महू के तमाम पर्यटन स्थल देखे, मगर जोगीभड़क ही न देख पाया था। महू से 30 किमी दूर यह जंगल का स्थान था। मैंने चैतन्य से कहा कि अपना ख्याल रखे, उसने विश्वास दिलाया। लेकिन चैतन्य को क्या पता था कि आज उसके साथ क्या–क्या घटित होने जा रहा है। साढ़े नौ बजे मुझे एक गांव के युवक ने मोबाइल पर सूचना दी कि आपका बेटा जोगी भड़क में गिर गया, उसकी टांग टूट गई। उसके इस फोन ने रविवार की सुबह में मानो आग लगा दी। इत्तेफाक से मैं, बड़ा बेटा करण और पत्नी अनुराधा घर में ही थे। मोबाइल पर आवाज सुनकर अनु दौड़कर आई, घबराकर पूछा क्या हुआ?, मैंने उसे कहा कुछ खास नहीं और फुर्ती से पहले करण को आवाज दी, जल्दी गाड़ी निकालो, फिर पत्नी से कहा कि वह गिर गया है उसे हलका फ्रेक्चर है हम गाड़ी से लेकर आते हैं। पत्नी ने चलने की जिद की, मैंने सख्ती से मना कर दिया। करण और मैं अपनी नई रिट्ज कार लेकर हम मानपुर की ओर दौड़ पड़े। मन में तरह–तरह के सवाल आ रहे थे। मैंने रास्ते में पुलिस को, मित्र योगेश यादव को, मानपुर के नेता हेमन्त पाल आदि को सूचित किया। किसी तरह मानपुर से जंगल के रास्ते ढाल गांव होते हुए हम आधे घंटे में उबड़–खाबड़ रास्ते से उस दुर्गम स्थान जा पहुंचे। मोबाईल करने वाला वही ग्रामीण युवक मिला। हमने पूछा ''कहां है चैतन्य?'' वह बोला– ''नीचे खाई में गिरा पड़ा है...''.... मैं घबराया..'' खाई में....!'' हम बाप–बेटे बुरी तरह चौंके। हमें नहीं पता था कि वहां खाई भी है वो भी पातालपानी से गहरी..... सैकड़ों फुट नीचे। हे भगवान....क्या बचा होगा वो..! और यदि ये गांव का युवक सही बोल रहा है तो टूटी टांग लिये किस तरह नीचे पड़ा होगा...! ढेर सारी बातें दिमाग को खाए जा रही थी। हमने खाई में उतरने की कोशिश की, मैं फिसल गया, मुझे गांव वालों ने रोका। एक ने बताया कठिन रास्ता है, खड़ा उतार है और टेड़ा मेड़ा है। मगर बेटा करण नहीं माना। उसे तो अपने भाई की चिंता खाई जा रही थी। करण ने तुरन्त जूते उतारे और वह एक अन्य गांव वाले के साथ नीचे की ओर चला गया। मेरा हृदय धक–धक करने लगा। क्या होगा, कैसे निकालेंगे उसे। मैं और दोस्तों को फोन करने लगा। इस बीच करण ने आकर बताया कि चैतन्य को ऊपर लाना बहुत ही मुश्किल है और वह जिस जगह गिरा था वहीं पर नदी में पानी था, किसी तरह तैर कर वहां किनारे आया है। उसका शरीर गीला है टांग टूटी है और कंपकंपा रहा है। ये सुनकर मैं और भीतर से तड़प उठा।

सुबह 9 बजे हुई इस घटना के बाद से 12 बजने को आ रहे थे। तब तक महू से फायर ब्रिगेड, पुलिस, एम्बुलैंस 108 सहित कई आसपास के ग्रामीणजन आ चुके थे। कैन्ट बोर्ड के सीईओ श्री रविशंकर ने पहले मुझसे मोबाइल पर जानकारी ली और फिर खुद भी वहां आ पहुंचे। पत्नी अनुराधा, और मेरी सास भी आ चुकी थी।

श्री योगेश यादव, श्री मुजीब कुरैशी, राधे कौशल सहित कई लोग वहां जमा हो चुके थे लेकिन प्रश्न एक ही सबके दिमाग में कौंध रहा था कि चैतन्य को आखिर कैसे ऊपर लाया जा सके। नीचे से जो भी चैतन्य को देखकर आ रहा था एक ही बात कह रहा था कि उसे ऊपर लाना नामुमकिन है। इस बीच दोपहर के 2 बज चुके थे। एम्बुलैंस 108 के डॉक्टर नीचे उतर नहीं पाए। तब वीडियोग्राफर कमल ने नीचे जाकर चैतन्य को दर्द का इंजेक्शन लगाया।

पत्नी बार–बार नीचे जाने की जिद कर रही थी मगर मुझ सहित सभी रोक रहे थे कि नीचे का रास्ता खतरनाक है। सीईओ रविशंकर मुझे ढाढस बंधा रहे थे। कैन्ट बोर्ड के कर्मचारी भी चैतन्य को लाने की कोशिश कर रहे थे। ठण्ड बढ़ती जा रही थी और हम सब शाम होने की कल्पना से सिहरने लगे थे। मेरी आंखों में आंसूं छलछला आए। मन ही मन मैंने ईश्वर से पूछा कि मैं अखबार में ऐसे पर्यटन स्थलों की जोखिम को लेकर आगाह करता रहता हूॅ मगर मेरे बेटे के साथ ही ऐसा क्यों हो गया...! मुझे लगा कि मेरी वेदना को ईश्वर ने सुन लिया, क्योंकि अचानक गांव के एक बुजुर्ग ने सलाह दी कि यदि ट्रक के टायर ट्युब लाकर नाव बनाकर और उस पर बालक को लिटाकर नदी में चलाकर आगे दो किमी पैदल ले जाया जाए तो युवक को निकाला जा सकता है। आगे एक गांव आएगा जहां पर खाई कम हो जाती है और रास्ता थोड़ा सुगम हो जाता है। बुजुर्ग के कथन सुनकर ऐसा लगा मानो खुद ईश्वर ने प्रकट होकर राय दी हो। सीईओ श्री रविशंकर ने तत्काल अपने कर्मचारियों को कहा कि पास के मानपुर गांव से ट्रक का ट्युब लेकर आओ। कर्मचारी दौड़ पड़े। गांव के कुछ लोग भी साथ गए। सबके सहयोग से काम तेजी से होने लगा। दो ट्युब हवा भरकर लाये गए। दो बल्लियां साथ लेकर कुछ लोग नीचे उतरे। समय तेजी से गुजर रहा था और ठंड बढ़ती जा रही थी। थोडी देर में हमें खबर मिली कि चैतन्य को नाव पर लिटाकर ले जाना शुरू कर दिया गया है। सुनकर मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया हम सब पास के गांव की ओर रवाना हुए। इस गांव में पहुंचकर हमें जोगीभड़क की खाई और भी भयावाह नजर आ रही थी। इसकी नदी में कहीं कहीं पानी था तो कई जगह से सूखी थी। हमें दूर से चीटियों की तरह चैतन्य को लादे गांव के युवकों का रैला आता नजर आया। ये रैला चैतन्य को अपने कंधे पर उठाए चले आ रहा था। गांव के लोग बता रहे थे कि बीच बीच में जहां गहरा पानी है वहां से चैतन्य को ट्युब की नाव से ले जाया गया होगा। चैतन्य को पास लाता देख मैं, मेरी पत्नी और सास, और साथ आए लोगों के चेहरे पर रौनक लौटने लगी थी। चैतन्य जब पास आने लगा तो हमने देखा कि दर्द सहन करने के बाद भी उसे परिवार में जिंदा लौटने की खुशी थी। वह बार–बार मुड़कर अपनी मां की आवाज को सुन देख रहा था। मेरी पत्नी दौड़कर जाकर चैतन्य से लिपट गई।

साथ आए बहादुर गांव के लड़कों को हमने धन्यवाद अदा किया जिन्होंने चैतन्य को बड़ी मुश्किल से इस खाई से निकाला था। चैतन्य को तत्काल कैन्ट अस्पताल के डॉक्टर रामपाल वर्मा ने इंजेक्शन दिया। इस बीच मैंने चैतन्य को इलाज के लिये डॉ मनीष अग्रवाल को सूचना दी और उनके पीथमपुर स्थित नए अस्पताल संजीवनी में, वहां लाने और आपरेशन के लिये तैयार किया।

शाम 5 बजे हम सब चैतन्य को लेकर महू की ओर रवाना हुए। अस्पताल में सारी व्यवस्थाएं पहले से की गई थी। चैतन्य का सफल आपरेशन हो गया और सुबह साढ़े आठ बजे से शुरू हुई।

(ब) चैतन्य के साथ हुए चमत्कार पे चमत्कार

होश में आने के बाद चैतन्य ने आपबीती सुनाई तो हम सबके रोंगटे और खड़े हो गए। उसने बताया कि उसके दोस्त भरत ने जोगीभड़क पहले से देखा था इसलिये भरत के कहने पर कि जोगीभड़क फोटोग्राफी के लिये बेहतर जगह है हम दोनों मोटरसायकल से वहां पहुंच गए। हमारे पास हेलमेट थे मगर मोटरसायकल पर हेलमेट रखते ही कुछ बंदर वहां आ पहुंचे। हमने हेलमेट वापस ले लिये और उसे पहनकर खाई में उतरना शुरू किया। कुछ फीट नीचे उतरते समय मेरा पैर फिसला तो मैंने फैसला किया कि अब नीचे नहीं उतर सकते, खतरा है। मेरा दोस्त भरत काफी नीचे जा चुका था, मैंने आवाज लगाकर कहा कि वापस चलो, फिर कभी आएंगे। इतना कहकर मैं वापस ऊपर की ओर आने लगा। तभी मैं असंतुलित हुआ, मैंने पहाड़ की घास पकड़ी तो वह उखड़कर हाथ में आ गई... बस इसके साथ ही मैं झोल खाकर जो गिरा तो फिर मैं लुढ़कता ही गया। मैं इधर–उधर टकराता जा रहा था और गिरता जा रहा था, मेरी ऑखों के सामने अंधियारा छा चुका था। कुछ पल के लिये मैं होश खो बैठा था लेकिन होश में आते ही मैने अपने आपको निर्जन जगह पर पानी में पड़ा पाया। मैंने तत्काल पानी से बाहर निकलना चाहा तो मुझे अहसास हो गया कि मेरी टांग नहीं उठ रही है। मैं समझ गया कि वह टूट गई है। मैं पानी में तेरकर किनारे आया। भरत तब तक मेरे पास आ चुका था वह रो रहा था। मैंने उससे कहा तुम रोओ मत, ऊपर जाकर गांव के लोगों को बुलाकर लाओ। भरत फिर ऊपर की तरफ दौड़ा। थोड़ी ही देर में गांव के दो युवक मेरे पास आए। उन्होंने फिर कहा कि ऐसे ऊपर जाना सम्भव नहीं है, आपके माता–पिता को सूचना देनी होगी। तब पापा को मोबाइल से सूचना दी गई। चैतन्य ने बताया कि वह सैकड़ों फीट खाई से जब गिर रहा था उसे बस इतना अहसास हो रहा था कि वह सिर्फ गिर रहा है और गिरता ही जा रहा है। नाम के मुताबिक चैतन्य दिमाग से चैतन्य ही रहा, उसने गिरते वक्त भी अपने होश नहीं खोए।

(स) 'आज तक' पर विशेष न्यूज

चैतन्य की वीडियो मानपुर के कमल ने उतारी थी जो 'आज तक' चैनल को सौंपी गई। आज तक के रिपोर्टर श्री करैया ने महू आकर चैतन्य का इंटरव्यू लिया। दूसरे दिन से 'आज तक' पर स्पेशल न्यूज में ''चैतन्य लौटा मौत के मुंह से'' बार–बार, को प्रसारित किया जाने लगा। महू में मेरे पत्रकार मित्र राधे कौशल ने एस आर 9 स्थानीय न्यूज केबल पर भी वीडियो दिखाई। इंदौर के अखबारों ने भी स्पेशल कवरेज दिया। मैंने भी 'प्रिय पाठक' में स्पेशन न्यूज कवरेज दिया। चैतन्य को पूरे पांच दिनों तक अस्पताल में सैकड़ों लोग देखने पहुंचे। अब चैतन्य फिर से मेहनत करके अपने–आपको तैयार करने में लगा हुआ है। उसके पैर में राड डाली गई है जो अब निकाली जा सकेगी। इस तरह यह घटना हमारे जीवन का न भूलने वाला हिस्सा बन गई।

(द) बड़ा बेटा करन भी मुसीबत में `फंसा जंगल में

मेरा बड़ा बेटा करन भी जिंदगी और मौत की मुसीबत से लड़ चुका है। करन और उसका फ्रेन्ड सनी चार साल पहले आबू रोड गुजरात घूमने गए थे। यहां पर गो मुख पर्वत की सीढ़ियां उतरते समय रास्ता भटक गए। करन और सनी वीरान जंगल में घूमते हुए चलते चले गए और तमाम मुश्किलों से इनका सामना हुआ। जंगल के भीतर जाकर इन्हें सूझ नहीं पड़ रहा था कि क्या करें? शाम तेजी से होने लगी थी, मोबाइल भी काम नहीं कर रहे थे। घने अंधकार के फैलते ही जानवरों के चींखने की आवाज दिल दहला देने जैसी आने लगी थीं। इस बीच चलते चलते अचानक एक कीड़ा सनी के सिर की चमड़ी में जा घुसा। सनी चीखा, करन ने तुरन्त उस कीड़े को जो सुई की नोक की तरह सनी के दिमाग में प्रवेश करने लगा था, खींचकर निकाला। करन ने बताया कि जंगल में कैक्टस होने के कारण हम भागते समय जहां–तहां से छिलते जा रहे थे और खून बहने लगा था। एक बारगी ऑखों में ऑसू आ गए कि हम इस जंगल से जिंदा बच पाएंगे या नहीं। ईश्वर को हम पर तरस आया और हमें एक पगडंडी ऊपर की ओर जाती दिखाई दे गई। हम हाथों में पत्थर थामे कि कहीं किसी जानवर से सामना हो जाए दौड़ते दौड़ते ऊपर की ओर चढ़ने लगे। हमें सुकून मिला पांच घण्टे की इस कठीन सजा से, हम जिन्दगी में वापस लौट आए थे एक कडुवे अनुभव के साथ।

3. नेहरू स्टेडियम में मची भगदड़

मौत मेरे नजदीक से आकर कई बार चली गई ये मुझे कुछ घटनााओं से याद आता है। बचपन में जब मेरी उम्र 8 साल की रही होगी, मैं अपने अंकल श्री प्रेमचंद सोलंकी के साथ रंधावा पहलवान की फ्री स्टाईल कुश्ती देखने इन्दौर के नेहरू स्टेडियम में गया था। भीड़ बहुत थी और लोग 3 रूपए के टिकट लेकर 5 रूपए वाली जगह पर जबरन घुस बैठे थे। ऐसे में अत्याधिक भीड़ पुलिस के लाठी चार्ज से बेकाबू हो गई थी और बदहवास भागते लोगों के पैरों में आकर मैं कुचलने लगा था। तभी मेरे अंकल मुझ पर ढाल बनकर कवर्ड हुए...लोग अब उनकी पीठ पर से कूद रहे थे और मैं सुरक्षित पड़ा रहा था, जिससे मैं बच गया था। बचपन की इस घटना को मैं हमेशा याद रखता हूँ।

4. पंखे से सिर कटा...

स्कूल समय में ही अनंत चतुदर्शी की झांकी देखने मैं इंदौर गया था। जेल रोड से झांकियां निकलती है वहां पर हमारी लॉण्ड्री की शाखा थी। इंदौर की झांकियां रात भर निकलती थी और एक एक झांकी को आने में एक एक घण्टे का समय लगता था। उस रात मैं झांकियां देखते देखते सोने लगा था कि अचानक शोर हुआ कि झांकी आ रही है, सुनकर मैं काउन्टर पर नींद में से जागकर अचानक उठ खड़ा हुआ था तब चलते सीलिंग फेन से मेरा सिर कट गया था। खून बहने लगा था। मेरे अंकल मुझे लेकर भारी भीड़ में से लेकर गुजरे और डॉक्टर के पास जाकर इलाज कराया। मेरे सिर में टांके लगे थे।

5. नींद के झोके में कार बची

15 साल पहले मेजर नरेन्द्र, उनकी पत्नी पम्मी के साथ मैं और मेरा परिवार पत्नी और दोनों बच्चों के साथ फियेट कार द्वारा महू से फैजाबाद जा रहे थे। मेजर नरेन्द्र हमारे करीबी मित्रों में से हैं और तब उनकी फैजाबाद में पोस्टिंग थी। तब हमने लखनऊ, अयोध्या आदि स्थानों पर घूमने का प्रोग्राम बनाया था। हमने शिवपुरी से आगे की यात्रा शुरू की तब दिन में मैं कार ड्राइव कर रहा था और रात होने पर भी मैं ही कार चलाता रहा। दिन–रात चलते रहने के कारण सुबह 6 बजे फैजाबाद के 10 किमी पहले मुझे नींद का जबरदस्त झोंका आया और कार हिचकोले खा गई

मगर दुर्घटनाग्रस्त होते बाल–बाल बच गई। ईश्वर की कृपा से उस समय रोड पर ट्रेफिक कम था तथा रोड के पास भी पर्याप्त जगह थी, हम सबने ईश्वर को लाख लाख धन्यवाद दिया। ऐसा ही नींद का झोंका दो साल पहले भी राऊ से महू लौटते वक्त भी आ गया था। तब भी पूरा परिवार कार में सवार था। अक्सर कार से आते जाते कई बार महसूस हुआ कि मैं अनायास ही बाल बाल बचता रहा हूं। शायद ईश्वर की कृपादृष्टि से मैं बचता रहा हूं। अब मैं भी सावधान होने की कोशिश करता हूं।

6. कार के हुए ब्रेक फैल

मुझे कई बार ऐसा लगता है जैसे मेरी कार में भी आत्मा होती है या ईश्वर का वास होता है। उसमें जब भी पेट्रोल अनायास खत्म होता है तब या तो पेट्रोल पंप नजदीक होता है या कोई बंदा मदद को तत्काल मिल जाता है। पंचर या खराब होने की दशा में भी साधन मिल जाते हैं। उस दिन 20 मार्च 10 को शनिवार था और मैं अखबार निकालने की जल्दी में इन्दौर की ओर सरपट दौड़ रहा था। वेटनरी कॉलेज के समीप शनि मंदिर पर गाड़ी रोकी और उन्हें तेल चढ़ाकर मैं राऊ पर पहुंचा था कि अचानक मुझे लगा मेरी कार में ब्रेक ही नहीं लग रहे हैं। मैं घबरा गया कि ये अचानक कैसे हुआ। गाड़ी को कंट्रोल करते हुए मैंने एक गैरेज पर गाड़ी रोकी और मैकेनिक को दिखाया। उसने देखकर कहा पहिये खोलकर ब्रेक सिलेन्डर देखना पड़ेगा, शायद वही लीकेज होगा, अभी तो ब्रेक ऑईल डालकर काम चला लो। सोमवार को मैं गाड़ी गैरेज पर ले गया तो पता चला कि दोनों पहियों में ब्रेक सिलेन्डर रिस रहे थे जिनके कारण ब्रेक आईल उनमें बहकर ब्रेक को कमजोर बना गया था। मैं सोचने लगा कि मैं एक बड़े हादसे से बच गया क्योंकि अक्सर फोनलेन पर गाड़ी तेज होती है। यह भी गनीमत रही कि एक दिन पूर्व ही अनु (पत्नी) गाड़ी को इन्दौर ले गई थी। हम दोनों में से किसी के साथ भी यह हादसा हो सकता था। मैंने शनि महाराज को धन्यवाद किया और अपनी गाड़ी के प्रति नाज भी किया।

7. झूला जब आसमान में अटका

झूला झूलने का आनंद तो वैसे ही होता है मगर जब झूला टेकरी पर हो तो ये आनंद किसी हवाई जहाज से कम महसूस नहीं होता। मन में तब भय कल्पना होती है कि कहीं ऊंचाई पर जाकर झूला खराब होकर अटक न जाए। मानो आसमान में उड़ते हवाई जहाज का इंजिन खराब हो जाए। ऐसा ही रोमांच हुआ था जब मैं और मेरी पत्नी मैले में घूमने अलमोड़ा गए थे। पहाड़ी पर मेला लगा था और पहाड़ी की

ऊँचाई पर झूला था। हमें रोमांच लगा कि पहली बार ऊंचाई वाले स्थान पर झूला झूलना नया अनुभव होगा, सो हम उसमें सवार हो गए। झूले ने दो तीन राउन्ड लिये तो अल्मोड़ा के पहाड़ी हिस्से से नीचे टिमटिमाते बल्व, स्ट्रीट लाइट सुंदर नजर आने लगी और ऊंचाई से देखने पर रोमांच भी हो रहा था। अचानक एकदम से झूले का बेल्ट टूट गया और वह राउन्ड फ्री हो गया। हम सबकी सांस अटक गई। चींख पुकार भी मच गई। झूले वाले लड़कों ने गजब फुर्ती दिखाई। एक दूसरे साथियों के साथ मिलकर झूले को बेकाबू होने से बचाया। मात्र 7–8 मिनीट के इस हादसे ने हमारे होंश उड़ा दिये, जब तक झूले में बैठे रहे लोगों की चीखें निकलती रहीं। ईश्वर का शुक्र रहा हम सभी सकुशल रहे।

8. बेटा जब स्विमिंग पुल में डूबा...!

हमारा छोटा बेटा चैतन्य उर्फ किशु कोई 6 माह का होगा जब हम फैजाबाद छावनी में हमारे मित्र ले. कर्नल नरेन्द्रसिंह और उनकी पत्नी श्रीमती पम्मी के यहां कुछ दिन गुजारने परिवार सहित पहुंचे थे। पम्मी पत्नी की खास सहेली है इसलिये हमारा उनके परिवार से दोस्ताना हो गया था। एक दिन हम सभी आर्मी स्विमिंग पुल पर नहा तैर रहे थे। करन (बड़ा बेटा) और पत्नी अनुराधा स्विमिंग पुल में तैरने में मस्त थे। मैं भी स्विमिंग पुल में किनारे पर खड़ा था और चैतन्य को स्विमिंग पुल की दीवार पर बैठा रखा था। वह पानी को देख देखकर बहुत खुश हो रहा था। अचानक मैने अपने पैर के पास कुछ गिरता सा देखा। मैं बुरी तरह चौंक गया, ''ये तो कोई बच्चा...'' शब्द मुंह से फूटे ही थे कि ध्यान आया कि ''अरे! कहीं किशू (चैतन्य) तो नहीं है..?'' मैंने पलट कर देखा कि किशु अपनी जगह से गायब था। मैं फुर्ती से पानी में झुका और दोनों हाथों से स्विमिंग पुल के तल में जा बैठे किशू को झटके से उठा लिया। वह उल्टा सिर के बल गिरा था, इसलिये उसकी नाक में पानी नहीं गया बल्कि वह निश्चिंत मुद्रा में था। मानो उसे पता ही नहीं हो कि वह मौत के मुंह में पैर रख चुका था। मैंने ईश्वर को धन्यवाद अदा किया कि यदि मेरा ध्यान पैरों की ओर न जाता तो किशू के डूबने का अंदाज ही नहीं हो पाता। यह घटना झण भर की रही जिसने मुझे कंपकंपा दिया था जबकि इसी स्विमिंग पुल में सब मस्ती में थे उन्हें नहीं पता कि मैं हाल ही किस मुसीबत से घुसकर बाहर आ चुका था। बाद में मैंने सबको बताया तो सुनकर सब हैरान रह गए।

आज भी उक्त घटनाओं के हृदय विदारक दृश्य मेरी नजरों के सामने होते हैं तो बदन में फुरफुरी सी आ जाती है। फिर लगता है कि ईश्वर कितनी मेहरबानी कदम कदम पर करते हैं।

पत्रकारिता के कारनामें

"बुलंद होंसलों और सेवा के जज्बे ने मुझे पत्रकार बना दिया। मैं सिर्फ पत्रकार कहलाऊं, ये मुझे शुरू से ही पसंद नहीं था। पत्रकार का सम्मान सच्चे शब्दों में सार्थक हो, इसके लिये मैंने हमेशा मेहनत की। लोगों ने कभी कहा कि तुम जोखिम लेते हो, लोगों से दुश्मनी लेते हो, लेकिन सच्चाई प्रकाशित करने के लिये मैं पीछे नहीं हटता था। कुछ लोग मुझसे ईर्ष्यावश बदनाम करने लगे थे। कुछ कहते थे कि पत्रकारिता में काफी पैसा कमा सकते थे। लेकिन मुझे पैसों से शुरू से ही मोहब्बत नहीं थी, हां घर चलाने के लिये जितने पैसों की जरूरत होती थी, मेहनत से नसीब हो जाते थे। फिर पत्नी का भी भरपूर साथ रहा। भले ही हमने पैसा नहीं कमाया, मगर नाम खूब मिला। मेरी पत्नी ने यदि नृत्य विधा में तो, मैंने पत्रकारिता जगत में छाप छोड़ी। आज मुझे खुशी है कि मैं अपने ही अखबार 'प्रिय पाठक' का सम्पादन कर रहा हूं और यह अखबार लोगों के दिलों में अपनी पैठ बना चुका है।"

1. हस्तलिखित समाचार पत्र ने बनाया पत्रकार

कभी सोचा ही नहीं था कि एक दिन मैं पत्रकार बनूंगा। पत्रकारिता की शुरूआत हुई दीवार समाचार पत्र से, वह भी मजाक में। 1976 तब बी काम द्वितीय वर्ष का छात्र था मैं। कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना याने एनएसएस में रहते हुए एनएनएस समाचार पत्र नामक दीवार पर लगा हस्तलिखित पत्र हर सप्ताह निकलता था, जिसमें कॉलेज गतिविधियों के समाचार होते थे। इसकी शुरूआत आज के वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रकाश हिन्दुस्तानी ने इसी कॉलेज से की थी। सहपाठी कमल वर्मा जो अब पेशेवर फोटोग्राफर है, इस अखबार को हाथ से लिख निकाला जाता था। एक दिन मैंने उसका मजाक बनाया, कि कितनी गंदी रायटिंग है तेरी, इससे अच्छा अखबार तो मैं लिख कर निकाल सकता हूं। उसने मजाक में चैलेन्ज दिया कि मैं इस अखबार को बना कर बताऊं। मैंने स्वीकार कर लिया। मेरी हेड रायटिंग अच्छी

थी जो मैंने 6 टी कक्षा में अपने दिवंगत भाई स्व. चंद्रसेन सोलंकी की प्रेरणा सीखी थी। मैंने अखबार निकाला। रंग बिरंगा, चित्रकारी के साथ। पहला ही अखबार सुर्खियों में आ गया। रंग बिरंगे इस हस्तलिखित अखबार को निकालने में मुझे 5 दिन लगे। मगर विद्यार्थियों और शिक्षक स्टाफ में यह अखबार आकर्षण का केन्द्र बनता गया। मुझे एनएसएस में सब जानने लगे। और मैं इतना चर्चित हुआ कि अगले दो साल बाद ही छात्र–संघ का प्रत्यक्ष पद्धति से होने वाले चुनाव में सचिव पद पर आसानी से विजयी हो गया।

तत्समय सर्वाधिक चर्चित अखबार रहे 'नईदुनिया' में एक दिन मैंने चंदा बारगल का पत्र पढ़ा। चंदा इसी कॉलेज में मेरा जूनियर था और मुझे सम्पादकजी कहकर अपनी रचनाएं छपवाया करता था। उसका पत्र देखकर मन में आग सी उठी कि मुझे भी नईदुनिया में छपना चाहिये। तब मैं लगातार कोशिश करता रहा और एक दिन मेरा भी चार लाईन का पत्र छपा ''महू में सड़कों पर गड्ढे''। मुझे महू के अनेक पाठको ने बधाई दी, बस यहीं से शुरू हुआ प्रिंट मीडिया में प्रवेश। फिर क्या नईदुनिया, क्या दैनिक भास्कर.., बस छपता ही चला गया, अखबार से लेकर राष्ट्रीय पत्रिकाओं तक। 2001 में अपना अखबार 'प्रिय पाठक' का प्रकाशन शुरू किया। 2010 में पहली बार नेट पर जुड़ा–पत्रिका 'ब्लॉगर्स पार्क' में ''हथिनी की करूण मौत'' शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई। अब फेसबुक पर भी सक्रिय हूं।

'नईदुनिया' में लेखन और 'दैनिक भास्कर' से शुरू की नौकरी

1983 में दैनिक भास्कर की इन्दौर में शुरूआत हो रही थी। नईदुनिया की टक्कर में उतरने की सुर्खिया लिये इस अखबार की इन्दौर में काफी चर्चाए थी। एक दिन इंदौर में मैं हमारी मॉडर्न लॉण्ड्री पर कार्य कर रहा था तब ही चाय की दुकान पर कीर्ती राणा (आज मेरे पुराने मित्रों में से एक हैं और इंदौर के दबंग दुनिया के सम्पादक भी) नामक युवक से मुलाकात हुई। खिचड़ी दाड़ी लिये कमर में झोला डाले उसने मुझे बताया कि वह मुम्बई करंट अखबार में कार्य करता रहा है अब दैनिक भास्कर में इंटरव्यू देने आया है। तब मुझे पता चला कि भास्कर के श्री रमेश अग्रवाल स्वयं रामपुरावाला बिल्डिंग की सेन्ट्रल लॉज में इंटरव्यू कर रहे थे। कीर्ति राणा के सुझाव पर मैं तुरन्त नईदुनिया सहित राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित मेरे लेख, रिपोर्ट की कतरनों से सजा रजिस्टर लेकर श्री रमेश अग्रवाल के पास पहुंच गया। उन्होंने मेरा रजिस्टर देखा और तुरन्त दैनिक भास्कर में सिटी रिपोर्टर बनाने के लिये हां कर दी। इस तरह अखबार में नौकरी की शुरूआत की। तब मात्र 600 रूपए मेरा परिविक्षा अवधि का वेतन निर्धारित हुआ था। लेकिन मैंने 6 माह काम करके छोड़ दिया था। नौकरी में किसी प्रकार का प्रतिबंध मुझे मंजूर नहीं था। बाद

में विवाह बाद कांग्रेस नेता श्री पी डी अग्रवाल ने मुझसे दैनिक भास्कर में दोबारा से काम करने की इच्छा पूछी कि महू में भास्कर को संवाददाता की जरूरत है। मैंने 'हां' की और जुलाई 1984 से महू संवाददाता के रूप में कार्य करना शुरू किया। उस समय नईदुनिया का चारों ओर बोलबाला था ऐसे में दैनिक भास्कर को ग्राहकों के मन में जमाना टेड़ी खीर थी। मगर मैंने हिम्मत नहीं हारी और रात–दिन मेहनत की। तब मुझे मात्र 300 रूपए पारिश्रमिक बतौर मिलते थे। दैनिक भास्कर के प्रति महू के लोगों की रूचि खबरें देखकर बढ़ने लगी और मेरी लोकप्रियता का ग्राफ तेजी से उठने लगा। मैंने सिर्फ 3 माह में दैनिक भास्कर को 100 प्रतियों से बढ़ाकर 900 कर दिया था। बाद में भास्कर को 2 हजार प्रतियों तक पहुंचाया था। मगर 1989 में सम्पादक से विवाद के चलते मैं दैनिक भास्कर छोड़ गया।

जब सूची छाप दी गुण्डों की

दैनिक भास्कर में मुझे बेबाक और साहसी पत्रकारिता के लिये महू की संस्थाओं ने कई बार पुरस्कृत किया। एक बार मैंने महू के तमाम आपराधिक लोगों और उनके धंधे और पुलिस प्रकरणों की सूची छाप दी। इस सूची से गुण्डों में हड़कम्प मचा और कई लोगों को आश्चर्य हुआ। मगर जवानी के नशे में और पत्रकारिता के जोश में मुझ कोई असर नहीं हुआ। अनुभव के लिहाज से आज महसूस करता हूं कि मुझे इतना उतावला नहीं होना चाहिये था।

2. महू जब हुआ था 'आउट ऑफ बाउन्ड'

पत्रकारिता मैंने शुरू से ही बेखौफ होकर की। लोग मेरी साहसिक पत्रकारिता को देखकर कई बार दंग रह जाते थे। यही वजह थी कि नईदुनिया जैसे प्रतिष्ठित और स्थापित अखबार के सामने मैंने दैनिक भास्कर को महू में चारो ओर फैला दिया था। बात 1986 की रही होगी जब सेना सिविल विवाद के चलते सेना ने समूचे महू शहर को आउट ऑफ बाउन्ड घोषित कर दिया। इसके मायने यह थे कि कोई भी सैनिक या अधिकारी महू शहर में प्रवेश नहीं करेगा। इस हेतु सेना ने महू के डीएसओआई गेट के सामने 'आउट ऑफ बाउन्ड' का बोर्ड लगाकर उस पर रायफलधारी जवान को तैनात कर दिया। मुझे इसका फोटो लेना था, मगर सैनिक फोटो उतरवाने को तैयार नहीं था। मुझे तो फोटो लेना था, ये मेरे भीतर की जिद थी। मैंने आर्मी सिपाही को चकमा देने की ठान ली। अपनी स्कूटर पर दूर जाकर पहले कैमरा एडजस्ट किया और फिर तेजी से स्कूटर चलाकर सेना के सिपाही के सामने गाड़ी के ब्रेक लगाए, बिना क्षण गवाएं गले में लटके कैमरे से एक फोटो

क्लिक कर डाला। जवान मना करता या एक्शन लेता, उसके पूर्व ही मैं स्कूटर मोड़कर तेज गति से घर का रस्ता नाप लिया। अगले दिन 'भास्कर' में पहले पेज पर फोटो सहित आउट ऑफ बाउन्ड का समाचार सुर्खियों के साथ प्रकाशित हुआ। इस फोटो रिपोर्ट की बहुत चर्चा रही। इसी तरह 'नवभारत' में संवाददाता रहते हुए भी एक घटना ऐसी ही घटी। सेना क्षेत्र में ही नशे में धुत एक मेजर ने सवारी तांगे को टक्कर मार दी और खुद भी जीप सहित पलट गया। तांगे में सवार लोग घायल हुए थे। इस दुर्घटना का चित्र अखबार या पुलिस तक न पहुंचे इसके लिये घटनास्थल पर सेना अधिकारियों ने सीआरपी के जवान लगा दिए गए। मैं कैमरे को शर्ट में छुपाकर ले गया। ततसमय आकाश में बिजली कड़क रही थी उसका फायदा लेकर मैंने भीड़ में से छुपकर फोटो क्लिक किये। जबकि पलटी हुई जीप का फोटो भी मोटर सायकल को चालू रख सवार होकर क्लिक कर लिया था। सेना के जवान पीछा करते उसके पहले मैं तेजी से गायब हो चुका था। वे मेरा पीछा करते रहे मगर मैं हाथ नहीं आया। लेकिन उन्हें यह भी पता नहीं चला कि मैं कौन हूं, उन्हें तो अगले दिन नवभारत में प्रकाशित चित्रमय समाचार से ही पता चला।

3. जंगल में मिला मुझे वन माफिया

'नवभारत' में काम करते समय मैंने महू के जंगलों पर वनकटाई को कई बार फोकस किया। एक बार सूचना मिलने पर मैं कोदरिया निवासी मित्र जगदीश यादव के साथ मोटर बाईक पर मलेन्डी के जंगल में भीतर तक गया। सूचना मिली थी जंगल में इमारती लकड़िया कोई गिरोह काट रहा है। मैं देखकर हैरान था कि जगह जगह लकड़ी के कटे गुल्लों के ढेर लगे थे। अचानक जंगल में एक शख्स प्रकट हुआ जिसे लेकर जगदीश ने मुझे सतर्क किया कि यह वन माफिया है और इशारा किया कि ये मत कहना कि तुम पत्रकार हो। वह शख्स जगदीश को देखते ही बोला—''अरे जगदीश भाई जंगल में?'' जगदीश ने सफाई देते हुए कहा—''हां, एक फिल्म की शूटिंग होनी है इसलिये साथ में भाई साहब (मेरी ओर इशारा करके) लोकेशन की तलाश में आए हैं।'' शख्स ने तत्काल जवाब में कहा कि ''अरे ऐसी बात है तो आओ मैं तुम्हें और भी घना जंगल बताता हूं'', इतना कहते ही वह हमें जंगल के भीतर ले चला। मैंने पहली बार देखा पातालपानी और मलेन्डी के बीच का घना, अत्यंत खतरनाक और सूना जंगल। कई जगह कटे हुए सागवान वृक्ष भी देखे जिन्हें पत्तों के बीच छुपाकर रखा गया था। जगदीश मुझे बार बार इशारा कर रहा था कि मैं खामोश रहूं। एक सूनसान स्थान पर ले जाकर वह शख्स सहसा बोला—''जगदीश भाई, यहां पर तेंदुआ और जंगली जानवर भी है। कई बार यहां बाहर की लड़कियों

की लाशें क्षत विक्षत मिलती है जिन्हें लोग बलात्कार करके मार कर फेंक जाते हैं। जंगली जानवर का वे भोजन बन जाते हैं।'' मैं सोचने लगा कि ये सही कह रहा होगा, आखिर इतने घने जंगल में पुलिस भी क्या आती होगी। अपनी बात कहते हुए वह अचानक मेरी ओर पलटकर बोला ''पत्रकार साहब को देखकर मैंने सोचा कि ये जरूर किसी के काम के लिये आए होंगे।'' ''अरे ये मुझे पहचानता है.....!!'' क्षण भर के लिये मुझे लगा जैसे मैं कांप सा गया था। मगर फिर मैंने आवेश में आकर बोला–''तो क्या तुम हमें यहां डराने लाए हो।'' वो हंसकर बोला– ''अरे नहीं दिनेश भाई मैं आपको जानता हूं। आपको मंच पर एक्टिंग करते भी देखा है। इसलिये मैंने सोचा कि हो सकता है वाकई आप कोई शूंटिंग कर रहे हो, इसलिये यहां का जंगल दिखाया।'' कहते हुए वह सहज हो गया, मैं भी मुस्करा दिया। फिर बोला–' अब चलें कि और देखना है?' मैं समझ गया था कि इसने मुझे कहने की आड़ में यहां दोबारा न आने की चेतावनी सी दे दी है। इसके बाद हम जंगल से बाहर आ गए। वापसी में जगदीश ने बताया कि यही वो शख्स है जो वनमाफिया है। चूंकि अब वो समझ गया है इसलिये हमें अभी रिस्क नहीं लेना चाहिये। महू आकर मुझे लगा कि उस शख्स ने मुझे यह अहसास करा दिया था कि यदि जंगल कटाई से वास्ता रखोगे तो मारे जाओगे। मुझे लगा कि वह चुनौति दे गया। भीतर ही भीतर मेरा साहस उबल पड़ा। अगले दिन मैंने उसी शख्स को इत्तेफाक से महू बाजार में देखा। मैंने तुरन्त जगदीश को फोन पर उसके महू शहर में होने का बताकर उसी समय जंगल चलने को कहा। हम दोनों फिर जंगल पहुंचे और उसी घने जंगल में जाकर उन कटे हुए लकड़ी के ढेरों के कई फोटो लिये। अगले दिन जब 'नवभारत' में चित्रमय फोटो रिपोर्ट प्रकाशित हुई तो वनविभाग में तहलका मच गया। वनविभाग के दस्ते ने छापामार कार्रवाई कर दिखाई। इस रिपोर्ट से निश्चित ही उक्त वन माफिया शख्स को भी होश आया गया होगा कि मैंने कब कैमरा चला दिया था। वह इस रहस्य को कभी समझ नहीं पाया और वह मुझे भी फिर कभी नहीं मिला।

4. मृतक का फोटो दिखाकर दी हत्या की सूचना

बात 1989 की है तात्कालीन थाना प्रभारी श्री सी के तिवारी को एक दिन मैंने एक फोटो दिखाकर चौंका दिया। फोटो एक लाश का था, देखकर बोले कौन है ये? मैंने कहा कि महू मिलेट्री डेरी फार्म के पास इस व्यक्ति की लाश पड़ी है और इसकी हत्या की गई है। मैं आपके लिये फोटो उतारकर लाया हूं बताने के लिये। सुनकर वे फिर चौंके! हत्या हो गई और पुलिस को पता तक नहीं और मैं फोटो उतारकर उसकी प्रिंट करके भी ले आया। वे उठे सिपाहियों को आवाज दी और जाते जाते

कहने लगे 'यार कमाल करते हो तुम।' मैंने जवाब दिया 'पुलिस से पहले लोग मुझे विश्वास में लेते हैं...', सुनकर वे सकपका गए थे। उन दिनों मैं (सन् 1989) घर पर ही श्वेत–श्याम फोटो को इनलार्जर से बना लेता था।

5. दंगे में फोटोग्राफी

अब तक हुए 9 में से 7 दंगों की स्पॉट फोटोग्रॉफी

बात उन दिनों की जब है महू में हर साल साम्प्रदायिक दंगे होने लगे थे। शायद 1988 का समय रहा होगा जब महू में फिर साम्प्रदायिक दंगा भड़का था। लोग बदहवास से भाग दौड़ कर रहे थे। आपस में कई स्थानों पर हिन्दू मुस्लिम लड़ रहे थे। मैं अपने याशिका इलेक्ट्रो कैमरे के साथ महू के छोटा तेली मोहल्ला में दंगे की फोटो उतारने लगा। उस समय किरवानी मोहल्ला साइड से कतिपय उपद्रवी गोलियां चला रहे थे और मैं बेखौफ होकर पुलिस बल के साथ रहकर फोटो उतार रहा था। ये दृश्य को पार्षद सुरेश ठाकुर भी देख रहे थे। तब श्री ठाकुर ने मुझे कहा था कि 'यार क्या करते हो, यहां जान के लाले पड़े हैं और तुम आराम से फोटो उतार रहे हो।' इस घटना के बाद भी ये बात श्री ठाकुर कई बार कहते रहे और समझाईश देते रहे कि ऐसी रिस्क मत लिया करो। लेकिन पत्रकारिता के जुनून के आगे लोगों की समझाईश भी मेरे लिये तब बेअसर हुआ करती थी।

6. सेना–सिविल दंगा

19 मार्च 1991, धुलेन्डी पर महू में लगभग 3 बजे कोतवाली चौराहे पर हंगामा हुआ। दोपहर को लोग होली खेलकर अपने अपने घरो को लौटने लगे थे। मैं भी होली खेलने के बाद नहा कर खाना खा रहा था कि अचानक मुझे पता चला कि सेना के कुछ अफसरों का पुलिस से विवाद हो गया। मैं तुरन्त कैमरा लेकर चौराहे पर पहुंचा। वहां का दृश्य रोमांचभरा था। कोतवाली चौराहे पर थाना प्रभारी श्री सुरेन्द्रसिंह ठाकुर और एसडीओपी श्री डी डी त्रिपाठी को घेरे कुछ आर्मी अफसर खड़े थे जो गालियों से बात कर उनका अपमान सरेआम कर रहे थे। इस दृश्य को चौराहे पर जमा कोई दो हजार शहरी लोग गुस्से से देख रहे थे जो आर्मी वालों के बर्ताव से विस्मित थे। यहां आकर मुझे पता चला कि एक अफसर ने तो पुलिस की रिवाल्वर भी छीन ली थी और एक ने टी आई की मूछें तक उखेड़ दी थी। सेना अफसरों के झुण्ड में मैं भी घुसा और मैंने एक अफसर को धीरे से कहा ''सर जाने दो, मामला

खत्म करो'', सुनकर मुझे घूर कर वो बोला ''चल जा यहां से, नहीं तो दूंगा एक मुक्का''। मैं भीतर से तिलमिला गया। मैंने सोचा सेना के नाम को लजा रहे इन उद्ण्डों के तो अब फोटो ही उतार कर प्रकाशित करूंगा। मैं धीरे से हटा और चौराहे पर एक बोहरा के घर की तीसरी मंजिल पर चढ़ा। वहां से छुप–छुपकर ऊपर से फोटो उतारे। फिर नीचे आकर थाने के सामने बन रहे एक मकान की निर्माण सामग्री की रेत में मैंने कैमरा छिपा दिया। वापस लौट कर चौराहे पर फिर माजरा देखने लगा। चौराहे पर आम जनता बढ़ती ही जा रही थी, इसी बीच छोटा बाजार के एक युवक ने इस घटना की वीडियोग्राफी करनी उतारनी शुरू कर दी। उस पर सेना वालों की नजरें पड़ गई। एक अफसर ने ताव में जाकर उसका वीडियो कैमरा छीना, उसे दो थप्पड़ लगाए। हद तो तब हो गई जब वीडियो कैमरा सड़क पर पटककर तोड़ डाला। बस इस ज्यादती ने लोगों का धैर्य खो दिया और जनता ने फौजियों पर हमला बोल दिया। पब्लिक का रौद्र रूप देखकर अफसर उल्टे पैर थाने की ओर भागे। मैं भी स्पॉट फोटोग्राफी करने लगा। मुझे जिस अफसर ने ताव दिखाया था मैने उसे भागते समय टोक कर बोला–''क्यों फट गई अब!'' ये सुनकर वो अफसर खिसियाकर मेरी ओर दौड़ा। मैं भागकर सीधे थाने के पीछे बाथरूम में जाकर छिप गया। बाकी के अफसर भी थाने में शरण लेने लगे, क्योंकि बाहर से लोगों ने ईंट–पत्थर फेंकना शुरू कर दिये थे। मैं बाथरूम के भीतर से सारा शोरगुल महसूस कर रहा था कि अचानक मैं चौंक पड़ा। इसी बाथरूम के भीतर अंधेरे में कोई फुसफुसाया .''दिनेश भैया''....!, मैंने अंधेरे में घूरकर पूछा– ''कौन?'' वो बोला ''मैं सिपाही राजू (बदला हुआ नाम) हूं, मेरी वजह से ही सारा मामला हो रहा है।'' मैं उसे पहचान गया, पूछा–''तूमने ऐसा क्या किया ?'' वो बोला–''टीआई साहब से आर्मी वाला बदतमीजी कर रहा था तो मैने उसे लठ जमा दिया, बस वे और संख्या में आ गए, तो मैं भागकर यहां छिप गया''। उसकी बात सुनकर फिर मैंने भी अपनी आप बीती सुनाई। लेकिन अब बाहर कैसे निकले...ये टेड़ा प्रश्न हम दोनों के ही दिमाग पर हथोड़े बरसा रहा था। आयडिया सूझा, मैंने सिपाही से कहा कि अपन आपस में ड्रेस चेंज कर लेते हैं, ये लोग पहचान नहीं पाएंगे। उसने तुरन्त सहमति दी और हमने बाथरूम में आपस में कपडे चेंज किये। हम दोनों बाहर आ गए। हमने देखा थाने में शरण लिये सेना अफसर घबरा रहे थे क्योंकि बाहर लोगों का गुस्से में लगातार ईंट पत्थर बरसाने का आक्रमण जारी था। बाहर की ओर अचानक सेना का बल और आया तो जनता भाग गई। मैंने भी तुरन्त बाहर आकर रेत में से कैमरा निकालकर घर की राह पकड़ी। क्योंकि अब फोटो लेना और भी जोखिमभरा था। उध ार गुस्से में लोगों ने सेना अफसरों की मोटर सायकलों में आग लगा दी थी। मामला तनावपूर्ण होने और दंगे में परिवर्तित होने के कारण शहर में तत्काल कर्फ्यू लगा

दिया गया था। थोड़ी ही देर में शहर हर बार के दंगे की तरह खामोश था। मैंने घर आकर जब डार्क रूम में रील वॉश की तो सिर पीट लिया, जल्दबाजी में कैमरे को फोकस करना भूल गया था इसलिये सारे फोटो आउट ऑफ फोकस होकर किसी काम के नहीं रह गए थे।

जब मैंने अकेले सेना में जाकर गवाही दी

होली पर हुए इसी सेना सिविल और जनता के बीच के दंगे को लेकर पुलिस को प्रत्यक्षदर्शी होकर गवाही दी थी। होलीकांड को लेकर साप्ताहिक हिन्दुस्तान में मेरी बायनेम एक पन्ने की रिपोर्ट भी प्रकाशित हुई। इस पर सेना प्रशासन ने भी मुझे घटना की गवाही हेतु इंफेन्ट्री स्कूल में बुलवाया। सेना के एक ब्रिगेडियर ने मुझसे गवाही ली और पूछा कि जो तुमने अभी गवाही दी है वो सच है? इस पर मैंने तटस्थ होकर जवाब दिया था कि मैंने अखबार और मैंगजीन में भी लिखा है इसलिये जो देखा और लिखा वही सच है। मेरा जवाब सुनकर उन्होंने मुझे कॉफी पिलाई फिर मुस्कराते हुए दोबारा पूछा कि जो कह रहा हूं सच है, मैंने कॉफी गले में उतारकर फिर दोहराया हां बिलकुल सच है, सुनकर वे निरूत्तर हो गए।

7. 'नवभारत' का जुनून

दैनिक भास्कर को मैंने 1989 दो कारणों से छोड़ दिया। पहला तो मेरा पारिश्रमिक नहीं बढ़ाने के कारण और दूसरा तात्कालीन सम्पादक श्री शाहिद मिर्जा द्वारा मुझ पर साम्प्रदायिक दंगे के दौरान आक्षेप लगाने से। श्री मिर्जा (स्व.) मेरे बहुत अच्छे आदरणीय मित्र और मार्गदर्शक रहे। उनसे मेरी मुलाकात नईदुनिया में तब हुई थी जब वे पत्र स्तम्भ कॉलम देखते थे। बाद में उनसे धनिष्ठता तब हुई जब उन्होंने रंगशाला का इन्दौर में गठन किया और नाटक 'जात ही पूछो साधु की' में मुझे और योगेश यादव को शामिल किया। वे अक्सर हमारी मॉडर्न लॉण्ड्री पर रात को तब आते थे जब मैं रात वहीं रूकता था। भोजन खाने के बाद हम दोनों पण्डित स्वीट्स की रसमलाई का आनंद लेते थे। 1989 की बात है जब श्री शाहिद मिर्जा नईदुनिया छोड़कर दैनिक भास्कर में सम्पादक बन बैठे थे। उन्हीं दिनों में महू में साम्प्रदायिक दंगे हुए। इसकी रिपोर्टिंग करने वे खुद महू आए। उन्हें लगा कि मैं खबरों में पक्षपात कर रहा हूं। उन दिनों मैं दैनिक भास्कर के लिये इतना समर्पित था कि कम पारिश्रमिक की वेदना के बावजूद काम कर रहा था ऐसे में उनका आक्षेप मुझे आग में घी का काम कर गया और मैनें तत्काल इस्तीफा दे दिया। मेरा इस्तीफा देखकर वे अवाक रह गए, मुझे ऐसा करने से मना किया मगर मैं नहीं माना और बिना समय गवांए 'नवभारत' जाकर उसका प्रतिनिधि बनना स्वीकार कर लिया। नवभारत में श्री

रोमेश जोशी सम्पादक थे। वे मुझे दैनिक भास्कर के समय से जानते थे। उन्होंने मुझे कहा था कि नवभारत में जब इच्छा करे आ जाना। मैंने जिस समय नवभारत को महू के लिये लिया तब मात्र 35 प्रतियां शहर में वितरित होती थी बावजूद चुनौति के रूप में स्वीकारा। तब एजेन्ट के रूप में गली गली हॉकर का काम करने वाले छोटा बाजार निवासी एक जैन युवक को मैने समझा बुझाकर कि अपना स्तर बढ़ाओ, उसे नवभारत का एजेन्ट बनाया। उसने मेरे साथ मिलकर खूब मेहनत कम की मगर मेरे नाम का फायदा भी पीठ पीछे खूब उठाया। मुझे कभी विश्वास नहीं हुआ मगर ऐसा लोग मुझे बताते थे, खैर। मैंने उन दिनों भास्कर से ज्यादा मेहनत नवभारत में की। तब मेरे महू के प्रतिद्वंदी मुझ पर हंस रहे थे कि ये तो गया काम से। लेकिन जब नवभारत ने महू में पैर जमाए तो मेरी ख्याति दैनिक भास्कर से ज्यादा बढ़ गई। खबरों के साथ समझौता करना याने दूध में गिरी मक्खी देखना शुरू से मंजूर नहीं था इसलिये नवभारत में भी उसूलों के प्रति तटस्थ रहा। सात साल काम करने के बाद मैंने उसे भी अपने उसूलो के चलते छोड़ दिया। यहां मेरा नवभारत के जनरल मैनेजर से वाक युद्ध छिड़ गया था। उसने मुझसे फ्री फोकट में अल्शेयियन डॉग लेने की मांग की थी जो मैंने ठुकरा दी थी। इसे लेकर वह मुझे पारिश्रमिक देने में परेशान करने लगा था जिससे चिढ़कर मैंने उसकी शिकायत मालिकों को कर दी थी। सो उस पर जब कार्रवाई न हुई तो मैंने ही वहां से जाना उचित समझा। हांलाकि नवभारत छोड़ने से दुश्मन दोस्तों को खूब ऑक्सीजन मिली मगर आज उसी अखबार की हालत महू में कितनी दयनीय है, ये सभी जानते हैं। ईश्वर है सब देखता है। पता नहीं मेरे दुश्मन दोस्त ईश्वर से डरते क्यों नहीं?

8. पूरी बोतल खत्म, फिर लिया इंटरव्यू

बात 'नवभारत' के दिनों की है। एक दिन पता चला कि ओंकारेश्वर में जानवरों की खाल का धंधा करने और सेना से पिस्तौल की गोलियां खरीदने वाले एक चर्चित रिटा. फौजी को पकड़कर महू में पूछताछ के लिये थाना किशनगंज में लाया गया है। उस फौजी के पकड़े जाने के समाचार पहले ही सुर्खियों में प्रकाशित हो चुके थे। यह सोचा कि महू में लाया जाने पर यह महत्वपूर्ण खबर बन सकती है, यदि उस आरोपी से इंटरव्यू ले लिया जाए तब। इस मामले में थाने में पदस्थ अधिकारी श्री भण्डारी से हमने फोन पर संपर्क कर आरोपी से पूछताछ करने की इच्छा जताई तो वे पहले झिझके फिर हां कर दी। मैं रात को 8 बजे थाने पहुंचे तो थाना प्रभारी उस आरोपी से मिलाने में टालमटोली करने लगे। अधिकारी से हमारे मधुर संबंध थे। हमने जब उनसे कहा कि हमारा आरोपी से पूछताछ करना जरूरी है तो फिर वे

हंसकर हां बोले और कहा कि एक शर्त पर कि मैं पहले उनके साथ एक–एक 'पेग' में साथी बनूं। हमने खबर की मजबूरी में बात स्वीकार ली। जनाब पास ही अपने क्वार्टर पर ले गए और महंगी व्हिस्की की नई बोतल कनस्तर में से बाहर निकाली और कहने लगे कि यार तुम पहली बार घर आए हो, इसलिये तुम हमारे वीआयपी मेहमान हो। ये कहते हुए उन्होंने पहला ही पेग पटियाला बना डाला। हमने उसे जल्दी जल्दी गटक लिया। एक पेग तो दुश्मन पीते हैं ऐसा कहते हुए उन्होंने दूसरा पेग भर दिया। हमने ना चाहकर उसे भी पी लिया। हम बोले अब चले आरोपी से बात करने? इस पर वे बोले– दोस्ती को मजबूत करने के लिये तीसरा पेग जरूरी होता है। जवानी के दिन चरम पर थे और अखबारी कर्त्तव्य सामने था सो हमने उनकी बात मानकर तीसरा पेग भी पी लिया। लेकिन वे इस पर भी मानने वाले कहां थे, बोले– अब आधी से भी कम बोतल बची है इसे भी निपटा लिया जाए। मैं समझ गया कि ये हमे इतना नशे में करना चाहते हैं कि आरोपी से मैं इंटरव्यू न ले सकूं। मैंने अपना दिमाग सम्हालाने की भगवान से प्रार्थना करते हुए अंतिम दो पेग भी ले लिये। शरीर पूरी तरह नशे की कैद में था मगर दिमाग अर्जुन बन बैठा था जिसे सिर्फ चिड़िया की आंख ही नजर आ रही थी। मैंने उनसे कहा कि आपका प्रामिस पूरा कर दिया अब मुझे आरोपी से मिलवा दो। वे लड़खड़ाती जुबान में बोले–यार अब भी तुम इंटरव्यू लोगे?, मैंने दृढ़ता से सिर हिलाया। वे मुझे लेकर वापस थाने आए। मैंने लॉकर में बंद आरोपी शिकारी से बात की। टी आई को धन्यवाद दिया और अपनी स्कूटर से दिमाग को कंट्रोल में कर घर आया। नशे में भारी दिमाग होने के बावजूद न्यूज बनाई, रात 11.30 बजे प्रेस पर फोन कर न्यूज उतराई। दूसरे दिन फ्रंट पेज पर बॉटम न्यूज में इंटरव्यू प्रकाशित हुआ। इसे पढ़कर टीआई भण्डारी ने फोन करके मुझसे कहा–यार तुम तो जादुगर निकले। इतनी पिलाने के बाद भी न्यूज छप गई? मैं हंस पड़ा। उसके बाद श्री भण्डारी के साथ कभी शराब नहीं पी (और न ही उन्होंने कभी मुझे शराब पीने बुलाया।)

9. कई नेताओं को दिखाया आईना

दैनिक भास्कर, नवभारत, लोकस्वामी, फ्री प्रेस, चेतना और एसडीए टाइम्स में काम करने के दौरान महू संवाददाता की हैसियत से तब के 16 सालों में मैने महू के अनेक नेताओं, समाजसेवियों, संस्थाओं आदि को खूब तवज्जो दी। नेताओं में खासकर अशोक पाटीदार, रामकिशोर शुक्ला और योगेश यादव.. अलावा अंतरसिह दरबार, भेरूलाल पाटीदार, पी डी अग्रवाल, सहित न जाने कितने वर्तमान के आदि इत्यादि नेता हैं जिन्हें समय समय पर फोकस करता रहा। उनके हर मोड़ पे खूब

समाचार छापे जिससे इनकी छवि जनता में बेहतर बनी। कहीं, कुछ के इतराने पर या अपनी जमीन भूलने पर मैनें उन्हें आईना भी दिखाया। कुछ ने तो मेरे खिलाफ न्यायालय में मानहानि प्रकरण भी लगाए। मैंने कभी भी किसी की भी खिलाफत बेजवह नहीं की, न ही अखबार का गलत फायदा उठाया। केवल वो लोग जिनके खिलाफ जनहित में दगाबाजी, शिकायतें, भ्रष्टाचार के सबूत मिले, मैंने खुलकर रिपोर्टस् प्रकाशित की। कभी अंजाम की फिक्र नहीं पाली। मुझे ईश्वर पर अटूट विश्वास है। नाराज मित्र या परिचितों के लिये मैं आज भी दोस्ती के द्वारा खुले रखता हूं।

10. दोनों कटे हाथ वाला भिखारी

2008 की बात है महू में एक भिखारी लोगों की दया का पात्र बना हुआ था। उसके दोनों हाथ कंधे से ही गायब थे। यह भिखारी अक्सर सैन्य इलाकों में घूमता नजर आता था। एक दिन मुझे माईकल हॉजिस ने फोन करके बताया कि मुझे शंका है कि उस भिखारी के हाथ हो सकते हैं क्योंकि मैंने उसे पब्लिक टायलेट से जब निकलते देखा तो उसके पेट पर हलचल दिखाई दी है। शायद उसने हाथ बांध रखे हैं। माईकल की बात सुनकर मैं उस भिखारी को खोजने लगा। वह इत्तेफाक से मुझे मेन स्ट्रीट पर ही नजर आ गया। मैंने मोटर सायकल रोककर उससे प्रश्न किया कि ये तुम्हारे हाथ कहां गए? कहने लगा कि एक सड़क दुर्घटना में कट गए। मैंने उसके पेट पर हाथ लगाते हुए कहा कि भई बुरा हुआ तुम्हारे साथ। ऐसा कहने के साथ ही मुझे अहसास हुआ कि पेट पर कपड़ों के भीतर से उसके हाथ हैं, मैंने पूछा ये क्या है पेट पर..? वह घबरा गया, मैंने अपना कैमरा निकालते हुए उसकी कालर पकड़ी, कहा उतार ये कुर्ता, उसने मना किया तो मैंने उसे तमाचा मारा। मेरे अनायास ऐसा करने से राह चलते लोग सकपका गए कि मैं भिखारी के साथ ये कैसा बर्ताव कर रहा हूं। मगर मैं किसी की परवाह किये बगैर भिखारी पर पिल पड़ा। मैंने जैसे ही उसका कुर्ता ऊपर उठाया तो दोनों हाथ पेट पर छुपे नजर आ गए। लोग देखकर हैरान रह गए। उसने दोनों हाथ पेट पर छुपाकर ऊपर से कुर्ता डाल रखा था। पलास्टर ऑफ पेरिस का बना, दोनों कटे हाथ का प्लास्टर चढ़ा रखा था। उसकी पोल खुलते ही मैंने पुलिस और आर्मी इंटेलीजेंसी को मौके पर ही बुलवा लिया। पुलिस ने उससे नाम पता पूछा तो वह खजराना इन्दौर का मुस्लिम युवक निकला। इस घटना को दूसरे दिन सभी अखबारों ने पूरी सुर्खियों के साथ समाचार प्रकाशित किये। लेकिन अफसोस आर्मी इंटेलीजेंसी के मेजर महाजन ने इस गम्भीर मामले पर कोई सक्रियता नहीं दिखाई और वे पुलिस को उसे सौंपकर फारिग हो

गए। पुलिस ने धारा 109 में उसे न्यायालय में पेश कर दिया जहां से वो भिखारी बनाम जासूस (?) जमानत पर छूटकर गायब हो गया। देश की सुरक्षा के सवाल पर इस गम्भीर मामले में पुलिस और खुफिया सेना कितनी सतर्क रही, यह शर्मनाक रहा, जो मुझे आज भी मन को सालता है ।

11. जब जनरल ने मुझे बुलाया....

सेना के भ्रटाचार और ज्यादतियों पर मेरी कलम कभी खामोश नहीं रही। बात 2009 की है जब इंफेन्ट्री स्कूल महू में ले. जनरल सत्यवीर यादव पदस्थ थे। उस समय मैं एमसीटीई संस्थान में हो रहे भ्रष्टाचार पर लिख रहा था। वहीं के एक रिटायर्ड जनरल पर भी मैंने उंगुली उठा दी थी। इस पर इंफेन्ट्री स्कूल के कमाण्डेन्ट ले. जन. सत्यवीर यादव ने मुझे अचानक अपने ऑफिस में बुलवा लिया। मैं जब वहां पहुंचा तो उन्होंने प्रश्न किया कि आप कब से अखबार निकाल रहे हैं तथा आपकी अहमियत क्या है? उनके प्रश्न करने का लहजा बता रहा था मानो वे जानना चाहते हो कि साप्ताहिक अखबार में सेना के खिलाफ कलम चलाने की मेरी हिम्मत कैसे हो रही है? इस पर मैंने उन्हें बताया कि मैं 35 सालों से स्वतंत्र और दैनिक अखबारों में प्रतिनिधि रहकर पत्रकारिता कर रहा हूं तथा मेरे अखबार का रजिस्ट्रेशन दिल्ली प्रेस के रजिस्ट्रार द्वारा हुआ है तो वे कुछ नरम पड़े। उन्होंने दोबारा प्रश्न किया कि आप सेना के बारे में ऐसा क्यों लिख रहे हैं मैंने प्रतिउत्तर में कहा कि मैं सेना के बारे में नहीं उन अफसरों के बारे में लिखता हूं जो सेना की गरिमा को गिराकर उसे चूना लगाने का काम करते हैं। फिर मैंने उनसे प्रश्न किया कि मैंने अब तक आपके बारे में क्यों नहीं लिखा? वे निरूत्तर हुए फिर मुझे कहने लगे कि सेना में इस समय अफसरों के ही बच्चे आना नहीं चाहते वे प्रायवेट संस्थानों की ओर ललायित हैं। ऐसे में सेना या सेना के अधिकारियों के खिलाफ छपने वाली खबरों से सेना की गरिमा खण्डित होती है उन्होंने अपील के लहजे में कहा कि ऐसी खबरों को मैं सोच समझकर छापूं या अवाईड करूं। बाद में देर तक चले वार्तालाप में वे भी मेरी भी कुछ बातों से सहमत हुए।

12. राजीव गांधी की हत्या और राजबाड़ा पर उपद्रव की फोटोग्राफी

बात सन् 1991 की है जब मैं प्रातःकालीन दैनिक लोकस्वामी का इंदौर नगर

प्रतिनिधि था। यह अखबार कांग्रेस नेता श्री महेश जोशी का हुआ करता था। एक रात मैं जब रोज की तरह महू लौटने की तैयारी कर रहा था तभी टेलीप्रिंटर पर जाते जाते नजर पड़ गई।'' पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी बम विस्फोट में मारे गए''.... इस एक पंक्ति के खतरनाक समाचार को देकर टेलिप्रिंटर खामोश हो गया। मैंने अपने सम्पादक श्री रोमेश जोशी (दैनिक भास्कर और नवभारत के बाद वे यहां भी सम्पादक रहे) को तत्काल बताया। श्री अश्विन जोशी भी नीचे ही बैठे थे, सुनकर वे भी ऊपर आए और प्रेस में बैठे सभी पत्रकारों, कर्मियों की नजरें टेलिप्रिंटर पर उत्सुकता से जम गई। थोड़ी ही देर में टेलिप्रिंटर ने सनसनीखेज समाचार का ब्यौरा देना शुरू कर दिया। रात के सन्नाटे में अखबार की कार्यप्रणाली में तेजी आ गई और स्व. गांधी के फोटो, कवरेज तैयार होने लगे। अचानक श्री अश्विन जोशी ने उनके फोटोग्राफर ओ पी सोनी को फोन लगाया और कहा कि जल्दी राजबाड़ा जाओ और वहां के नजारे के फोटो लेकर लाओ। लेकिन रात के माहौल को भांपकर सोनी ने असमर्थता बता दी कि वह नहीं आ सकता। इस पर श्री जोशी ने मेरी ओर देखा, वे जानते थे कि मैं स्पॉट फोटोग्राफी भी करता हूं। वे मुझसे बोले अपन चलते हैं कार में ...! मैं तैयार हो गया। श्री जोशी के साथ मूलचंद बंते भी हो लिये। रात के वीराने में तेजी से हलचल हो रही थी। लोगों को जैसे जैसे रेडियो, टीवी से पता चल रहा था, वे सड़कों पर उतरते जा रहे थे। हम फुर्ती से राजबाड़ा पहुंचे। माहौल वहां का बहुत गर्म था। कांग्रेस के सैकड़ों कार्यकर्ता इकट्ठा होकर आक्रोश व्यक्त कर रहे थे और गुस्से में तोड़ाफोड़ी करते हुए श्रीमती सुमित्रा महाजन के लगे पोस्टर बैनर भी फाड़ने लगे थे। मैं कार से उतरा और फोटो लेने लगा। रात को फ्लश लाईट देख उपद्रवियों की निगाह मुझ पर पड़ी और वे गुस्से में मेरी ओर आते इसके पूर्व श्री अश्विन जोशी मुझे कार में बिठाकर तेजी से वापस हो लिये और प्रेस की ओर चल पड़े। रात के 2 बज चुके थे। प्रेस पर पहुंचकर मैंने डार्क रूम में जाकर ब्लेक एण्ड व्हाईट फोटो तैयार किये। फोटो बहुत अच्छे उतरे थे, प्रेस पर सभी ने मेरे इस त्वरित और जोखिमभरे काम की तारीफ की। अगले दिन पता चला कि रात की घटना के ताजा फोटो प्रकाशित करने वाला इंदौर में अकेला 'लोकस्वामी' ही अखबार था, दूसरे दिन मुझे कई लोग फोन करके बधाई दे रहे थे।

सप्ताह का 'मीठा इंतजार' बना 'प्रिय पाठक'

मेरा अपना प्रकाशित समाचार पत्र ''प्रिय पाठक'' अब मुझसे कहीं ज्यादा पाठकों का प्यारा हो गया है। अखबार की अपनी लाइन 'सप्ताह का मीठा इंतजार' के बारे में आम पाठकों की राय है कि हम सभी बेसब्री से प्रिय पाठक का इंतजार करते हैं बल्कि जब ये हमारे द्वार सुबह सुबह आता है तो हम दैनिक अखबारों से पहले इसे पढ़ना पसंद करते हैं। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि कई लोग मुझे यहां तक कहते हैं हमारे परिवार में पहले पढ़ने के मामले में झगड़े और छीना झपटी तक हो जाती है। मेरा अखबार हॉकर दिनेश माने पूरे शहर में अकेले अखबार बांटता है और सुबह 5 बजे से लेकर दोपहर 12 बजे तक अखबार बांटता रहता है। मैं स्वयं भी उसकी मदद करता हूं और कार से कुछ वीआयपी और स्नेहियों को स्वयं अखबार देकर आता हूं। पत्ती बाजार में कुछ मध्यम वर्ग की मुस्लिम महिलाएं प्रिय पाठक का हर सप्ताह बेसब्री से इंतजार करती हैं इनका अखबार के प्रति अगाध स्नेह देखकर मैं इन्हें निःशुल्क ही अखबार दे देता हूं। आज प्रिय पाठक 10 वर्ष पूरे कर 11 वें वर्ष में प्रवेश कर गया है। यह महू का पहला ऐसा अखबार बन गया है जिसके हजारों हजार पाठक हैं, नियमित अखबार है और 8 से बढ़कर 12 पेज का नियमित रंगीन अखबार हो गया है। दीपावली पर इसके 32 पृष्ठ प्रकाशित होते हैं। ग्लैज्ड पेपर पर खास मौकों पर प्रकाशित होता है। इतना ही नहीं पिछले 9 सालों से लगातार प्रिय पाठक अपना कैलेन्डर भी प्रकाशित करता है। यह कैलेन्डर निःशुल्क रूप से वितरित किया जाता रहा है, इसके हर पृष्ठ पर महू के खूबसूरत पर्यटन स्थल और उभरती प्रतिभाएं होती हैं। 12 पेजी यह बहुरंगी कैलेन्डर पाठकगण पूरे साल सहेजकर रखते हैं।

सोलह पन्नों का पहले अखबार का दीवानापन

2001 में विदेश से लौटने के बाद मेरे पास अखबार के लिये कोई अवसर नहीं बचा था, क्योंकि मेरे पत्रकारिता के कतिपय दुश्मन ऑख गड़ाकर बैठे थे। नवभारत से एक बार फिर मुझे आमंत्रण मिला, पर ''अपने पेशे के दुश्मनों'' ने यहां भी टांग अड़ाई। हिम्मत हारना मैंने सीखा नहीं है इसलिये पत्नी से परामर्श लेकर तय किया कि अपना अखबार ही क्यों न शुरू किया जाए। ''प्रिय पाठक'' अपने ही पसंदीदा टाईटल से साप्ताहिक अखबार का प्रकाशन 29 दिसम्बर 2001 से शुरू कर दिया। पहला अखबार ही 16 पृष्ठ का था जिसे निकालने में मेरा दीवानापन चरम पर था।

मगर साप्ताहिक अखबार का कोई अनुभव भी नहीं था, इसलिये ठगा जाना स्वाभाविक रहा। पहले अखबार को तैयार करने में ही पसीने आ गए। जब अखबार किसी तरह छपकर तैयार हुआ और मैं उसे लेने शरद पब्लिकेशन के ऑफिस खजूरी बाजार पहुंचा तब पता चला कि अखबार के कागज की अभी कटिंग नहीं की गई है। इस पर मैने उनसे कहा कि मैं ही कटिंग करवा लूंगा, आप ऐसे ही दे दो। मैं एक हजार प्रतियों को बिना कटिंग कराए ऐसे ही लेकर महू आया और प्रियंका शॉप पर जाकर अखबार की कटिंग करवाई। समस्या बाद में हुई कि चार चार पेज के अखबार को एक दूसरे में मिलाकर 16 पेज का करना। मैं, मेरी पत्नी, दोनों पुत्र, और मोहल्ले के जोजी, राजू, आनंद, सुनिता आदि सभी लोग भिड़ गए और घण्टों की मेहनत के बाद 16 पेज का अखबार भरकर तैयार हुआ। बाजार में इसको निःशुल्क वितरित किया गया। मगर लोगों की प्रतिक्रियाओं ने निराश कर दिया। एक साप्ताहिक अखबार के मालिक ने फब्तियां कसी–''अब आया ऊंट पहाड़ के नीचे'' पता चलेगा। मेरे मार्गदर्शक रहे वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रकाश हिन्दुस्तानी ने कमेन्टस् दिये–''अखबार में ऐसा कुछ नहीं, जिसे कहा जा सके, कि ये दिनेश सोलंकी का अखबार है'', इन शब्दों ने मुझे बेहद निराश किया। मगर मैंने फिर हिम्मत नहीं हारी और मैं आर्थिक रूप से परेशान होने के बाद भी अखबार का प्रकाशन नियमित रखता गया। लगभग 6 माह की मेहनत और मशक्कत के बाद ''प्रिय पाठक'' को लोकप्रियता की सीढ़ियां मिल गई और फिर उसने पीछे पलटकर नहीं देखा।

मुख्यमंत्री के हाथों मिला श्रेष्ठ फोटो का प्रथम पुरस्कार

प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के हाथों मुझे मां कनकेश्वरीदेवी की कथा समापन पर आयोजित फोटो स्पर्धा में पहला पुरस्कार प्राप्त हुआ। मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने प्रमुख रूप से मेरे लेखन, फोटोग्राफी और प्रिय पाठक अखबार की प्रशंसा खुले मंच से मुख्यमंत्री के सामने की तो मन आत्म सम्मान से भर उठा। मुझे कई जगह से मित्रों की बधाई मिली। इन दिनों में फेसबुक पर भी काफी सक्रिय हूं और पत्रकारिता करने का मजा जो मुझे मिल रहा है वो मेरे उन बीते दिनों की याद ताजा करा रहा है जब मैं दैनिक अखबारों के लिये इसी तरह मेहनत किया करता था।

मंत्रीजी करते हैं 'प्रिय पाठक' की तारीफ

हमारे शहर के विधायक और प्रदेश के उद्योग एंव वाणिज्य मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय को 'प्रिय पाठक' बहुत पसंद है। वे अक्सर महू आते तब प्रिय पाठक को जरूर पढ़ते। हाल ही में मां कनकेश्वरीदेवी की कथा का आयोजन उन्होंने विशाल स्तर पर किया। स्वर्ग मंदिर की भूमि पर यह आयोजन सफल रहा जिस पर मैंने अपने खर्चे से (बिना किसी का विज्ञापन लिये बगैर) ग्लैज्ड रंगीन अंक का प्रकाशन किया। यह अंक पाठकों को बहुत भाया। श्री पुनित अग्रवाल के बंगले पर मां कनकेश्वरी देवी की उपस्थिति में हुई भजन–भोजन आयोजन में मंत्री श्री विजयवर्गीय ने प्रिय पाठक की प्रशंसा खुलकर की और जब मैं देवी के दर्शन करने गया तो मेरे हाथ से कैमरा लेकर उन्होंने मेरा फोटो उतारकर मुझे दोहरा सम्मान दिया।

मेरा अभिनय सफर

"बचपन से फिल्में देखना और उनके पात्रों में खो जाने की मेरी हॉबी थी। स्कूल लाईफ में मंच पर अभिनय करने की कल्पना करता था मगर झिझक के कारण मैं मंच पर स्कूल लाइफ में तो पहुंच नहीं सका। कॉलेज में भी स्नातक के तीन साल ऐसे ही सोच–सोच कर गुजार दिये। जब एम कॉम पूर्वार्ध में कदम रखा में तब जाकर मेरे भीतर का दिल खुला और मैं स्टेज पर पहली बार 'भोलाराम का जीव' और 'पराठे वाली गली' नामक नाटकों में अभिनय के साथ लोकप्रिय हुआ। यहां से मेरा अभियन सफर शुरू हुआ जो फिर रंगमंच से होता हुआ रेडियो, टी वी और फिल्मों तक जा पहुंचा। आज भी किसी न किसी रूप में यह सफर जारी रहता है।"

माण्डव में ''दिल दिया दर्द लिया''

फिल्म 'दिल दिया दर्द लिया' से मेरे अभिनय सफर की शुरूआत होनी थी मगर किस्मत में इतनी जल्दी शोहरत पाना लिखा नहीं था।

बहुत छोटा था मैं तब, शायद उम्र रही होगी 12–13 साल। मैं दिखने में गोरा और गोल चेहरा लिये था। उन दिनों प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता दिलिप कुमार और ख्यात अभिनेत्री वहीदा रहमान की फिल्म ''दिल दिया दर्द लिया'' की शूटिंग माण्डव में चल रही थी। फिल्म कलाकारों के कपड़ों की वॉशिंग और ड्रायक्लीन का दो माह का कांट्रेक्ट मेरे पिता की पार्टनर वाली फर्म मॉडर्न लाण्ड्री को मिला था। तब हम भी सपरिवार माण्डव में कुछ दिन रहने गए थे। एक दिन की बात है जब फिल्म के डायरेक्टर या प्रोड्यूसर (ठीक से याद नहीं) हमारी दुकान पर आए और पिताजी का पूछने लगे। मैं बाहर ही स्टूल पर बैठा था। मैंने उन्हें बताया कि वे कारखाने पर कपड़े लेने गए हैं। इस पर वे बोले– 'अच्छा उनसे कहना कि अभिनेत्री वहीदाजी की साड़ी जल्दी भिजवा दें, शूटिंग होने वाली है'। इतना कहने के बाद वे मुझे गौर से देखने लगे और कुछ सोचकर चले गए। बाद में पिताजी आए तो मैंने बात बताई।

वे साड़ी लेकर होटल चले गए जहां फिल्म कलाकार ठहरे हुए थे। पिताजी लौटे तो उनके चेहरे पर प्रसन्नता थी। आते ही मुझे बोले– 'तुझे फिल्म में काम करना है?' मैं बहुत शर्मिला और संकोची था, मन ही मन घबरा गया और रोने सा लगा। पिता ने फिर बताया कि फिल्म कलाकार दिलिप कुमार के बचपन का रोल मुझे करना है क्योंकि जो बाल कलाकार को मुम्बई से आना था वो अभी तक नहीं आया है। तुम्हें देखने के बाद उनका मन है कि वो रोल तुम कर लो। इतना सुनने के बाद मेरे दिल की धड़कन तेज हो गई और मैं जोर से रोने लगा। दूसरे दिन मेरे पिताजी मुझे समझाकर सेट पर ले गए, वहां फिल्म के एक विलेन ने मुझे गोद में उठाया कर प्यार किया। इधर पिता को बताया कि तारिख तय हो गई कि मुझे कब शूटिंग में भाग लेना है। लेकिन भाग्य को कुछ और मंजूर था। इस बीच.....'वो' बाल कलाकार मुम्बई से आ पहुंचा और मेरी एण्ट्री में अनायास ही ब्रेक लग गया। ईश्वर को तरस आया 25 साल बाद जब मुझे फिल्म में काम करने का अवसर मिला। फिल्म 'सावधान' में अभिनय करने दो माह के लिये केरल राज्य की खूबसूरत वादियों में रहने को मिला और वहां के कई खूबसूरत पर्यटन स्थल देखे। कोवलम बीच पर गाना भी फिल्माया गया। बाद में मैंने मिथुन चक्रवर्ति के साथ गुनाहगार और टीवी सीरियल जी हारर शो, सास बड़ी या बहू में अभिनय किया।

(अ) पहली बार रंगमंच पर....

कॉलेज में मेरी झिझक दूर होती गई और पहली बार कॉलेज प्रोफेसर श्री महेश माहेश्वरी ने मुझे नाटक भोलाराम का जीव के लिये चुना। यहीं पर रिहर्सल करते देख कॉलेज के सीनियर छात्र अशोक पंवार ने मुझे नाटक पराठे वाली गली में काम दिया। इसी नाटक ने मुझे बेस्ट एक्टर का प्राईज भी दिलवाया। अगले साल जब मैं एम कॉम फायनल कर रहा था, एक स्कूल से रंगमंच पर छाया हुआ कलाकार योगेश यादव कॉलेज में, प्रथम वर्ष में आया। बाद में योगेश के साथ मेरा नाटकों का सफर लम्बा चला।

मैं लड़की बना पहली बार.....

1979 में मैंने पहली बार लड़की की भूमिका श्री महेश भार्गव के निर्देशन में 'दुनिया रंग रंगीली' नाटक में की। यह नाटक फिल्मी गीतों के मुखड़े पर हास्य प्रधान था। इसके बाद मैं और योगेश रंगमंच के साथी कलाकार बन गए। बाद में मैंने कई बार लड़की बनकर भूमिका अदा की।

(ब) रंगमंच पर 'सपेरन'

डॉ सुरेश यादव के साथ 'सपेरन' नामक नाटिका खेली जिसने इन्दौर और महू में धूम मचाई। इस नाटिका में मेरी बहन ने शानदार अभिनय किया। मेरे मित्र आफताब अंसारी ने स्टेज पर ही दो मंजिला राजभवन दिखाकर दर्शकों को हैरान कर दिया। महू से बाहर रहने वाली अनिता श्रीवास्तव के साथ नाटक 420 का सफल मंचन किया। मेरठ के अनिल शर्मा के साथ भी बहुत से नाटक किये। 'महू आर्टस नाट्य क्लब' नामक संस्था मैने और योगेश ने मिलकर बनाई। हम दोनों के अलावा मेरी बहन मीना (अब मीना बुंदेला) नाटक और नृत्य के लिये तो बहन कुसुम (अब डॉ कुसुम यादव) गायन के लिये हमारी टीम की सक्रिय सदस्य बनी। संस्था का गठन कर प्रदेश के कई शहरों में गणेशोत्सव पर आयोजन किये जिनमें मण्डलेश्वर, इंदौर, बड़नगर, नेपानगर, आदि शहरों में हमने आयोजन किये। बाद में यह संगठन मेरे और योगेश के बीच निजी अनबन के चलते टूट गया। 1984 में विवाह के बाद महू सांस्कृतिक मंच के नाम से नया मंच बनाया जिसमें मैंने अपनी पत्नी अनुराधा के साथ कई बार नृत्य और नाटक के आयोजन किये। यह मंच आज भी जीवित है और 21 वीं सदी की पुलिस, आ गई माता, इंटरव्यू, हलो इंस्पेक्टर (सभी मेरे लिखित हास्य व्यंग्य नाटक) जैसे कई नाटकों का सफल मंचन किया। श्री शाहिद मिर्जा के साथ 1981 में नाटक ''जात ही पूछो साधु की'' तथा इन्दौर के एक मंडल के साथ ''सैंया भये कोतवाल'' और ''लापता कुए की खोज'' में प्रमुख भूमिकाएं अदा की। मेरी बहन मीना के साथ नवरंग के गीत पर नृत्य और नृत्य नाटिका 'सपेरन' में यादगार भूमिकाएं रही हैं। वहीं पत्नी अनुराधा का साथ मंच पर तब यादगार बन गया जब मेरे अजीज दोस्तों ने लॉ कॉलेज के वार्षिकोत्सव में काम करने के नाम पर हाथ ऊंचे कर दिये थे। ऐसे समय में मेरी पत्नी अनुराधा ने नृत्य और नाटक में भरपूर साथ दिया। वह इससे पहले कभी नाटक में अभिनय नहीं करती थी क्योंकि वह कत्थक नृत्य में पारंगत है, लेकिन मेरे लिये वह अभिनय क्षेत्र में भी उतर गई।

(स) आकाशवाणी पर एन्ट्री...

रंगमंच के साथ साथ डॉ कुलवंतसिंह शेहरी ने आकाशवाणी के डॉ. सुरेश यादव से मुलाकात कराई। युववाणी पर स्वर संगम संस्था, महू की मंजूषा हुई। डॉ सुरेश यादव के कारण हम आकाशवाणी के युववाणी कार्यक्रमों से जुड़े। बी श्रेणी कलाकार भी बने। डॉ. सुरेश यादव ने मुझे आकाशवाणी पर खेले गए नाटक 'कानून के रखवाले' में हीरो की भूमिका दी जिसे मैंने बखूबी निभाया। यह नाटक लगातार कई सालों तक रेडियो पर सुना जाता रहा। आकाशवाणी के पं. नरेन्द्र शर्मा ने युववाणी पर काफी चांस दिये। 30 साल के बाद मैंने पुनःबी ग्रेड कलाकार के रूप में

आकाशवाणी इंदौर में नाटक 'सुकरात' किया इसमें सुकरात की प्रमुख भूमिका मैंने ही निभाई। सद्प्रकाशन, इंदौर रेडियो स्टेशन पर भी विदेश में रहने वाले हिन्दी श्रोताओं के लिए नाटक किए।

(द) मंच, रेडियो, टीवी और फिल्मों के यादगार रहेंगे दोस्त और स्नेही

नाटक–नृत्य, गीतों और फिल्म–टीवी के सफर में कुछ दोस्त हमेशा याद रहेंगे जैसे मंच पर अशोक पंवार, योगेश यादव, राजेश बंसल, मीना सोलंकी, राबर्ट भारती, राजेश शर्मा, आफताब अंसारी, संजीव सालोमन, मुकेश चौहान, शाहिद मिर्जा, आदिल कुरैशी, अनिल शर्मा मेरठवाले, नरेश पाठक, अरूण सोलंकी, प्रेम परदेशी, अवसेर, रेडियो पर कुलवंतसिंह शेहरी, श्री सुरेश दुकारिया, डॉ सुरेश यादव, श्री नरेन्द्र पण्डित, फिल्मों–टीवी की दुनिया से श्री प्रकाश जाजू, राकेश सरैया, मानसिंह दीप, गिरजा शंकर, परिक्षित साहनी, सुनिल आनंद, नेहा ठाकुर, बिन्नी शाह, रामसे बंधु आदि। दो फिल्मों की शूटिंग के लिये केरल का त्रिवेन्द्रम शहर और आसपास का जंगल तथा ऊटी की वादियां याद रहेंगी। दोनों ही स्थानों पर दो दो बार और एक–दो महिने तक रूकने का अवसर मिला। गीतों की दुनिया में श्री दीपक जाजू मित्र मंडल के मित्रगण अब साथ में हैं।

(ई) टीवी पर...

महू के श्री कमल गोयल ने एक दिन मुझे अपने साडू श्री राकेश सरैया से मिलवाया। वे मुम्बई के थे तथा फिल्में बनाते थे। उन दिनों वे एक टेली फिल्म 'जेकपाट टू करोड़' बना रहे थे। उन्होंने मुझे इस फिल्म में छोटा सा रोल दिया जिसे मैंने गिरजाशंकर के साथ किया। मेरे अभिनय को देखकर श्री सरैया ने अपनी आगामी फिल्म 'सावधान' में काम दिया। टीवी पर पहली बार 'जी हॉरर शो' में अभिनय करने का मौका मुझे महू के फिल्म फायनेंससर श्री प्रकाश जाजू से मिला। जी हॉरर शो 'दहशत' में मैंने हीरोइन रेशम टिपनिस के मामा का रोल किया। इस सीरियल में कलाकार सुजित कुमार, राजू, रेशम टिपनिस के साथ सीन भी किये। जी टीवी पर जब इसका प्रसारण हुआ तब मैं महू में ही था और देर रात तक मुझे बधाईयों के फोन पे फोन आते रहे।

(फ) फिल्म 'सावधान' और 'गुनाहगार'

अभिनय करने की ललक मुझे फिल्मों तक खींच ले गई। हांलाकि फिल्म संगीतकार उषा खन्ना मेरे ससुराल पक्ष की ओर से नजदीकी रिश्तेदार हैं। उन्होंने एक बार इन्दौर आकर महू में मेरे आग्रह पर टाउनहॉल में गीत भी गाए। मगर मुझे

फिल्मों में काम दिलाने के नाम पर वे सहयोग नहीं कर पाई। भाग्य से उन दिनों 1990 में फिल्म 'सावधान' में काम करने का मौका मिला। छोटे बजट की इस फिल्म की शूटिंग दो माह तक त्रिवेंद्रम में हुई। मैंने फिल्म में कॉलेज के बुरे पांच छात्रों में से एक का पात्र निभाया। फिल्म में कोई सात सीन रहे जिसमें डॉयलाग भी अच्छे मिले। यह फिल्म चूंकि एनसीसी कथानक पर थी इसलिये इसे पूरे देश में टैक्स फ्री का लाभ मिला। हांलाकि फिल्म में कलाकार ख्यातनाम नहीं थे न ही मेकिंग प्रभावी था, इसलिये हिट और चर्चित नहीं हो सकी। फिल्म में मेरे चयन से महू के लोगों को बहुत खुशी हुई। बाद में 1996 में श्री प्रकाश जाजू के साथ मुम्बई जाने के योग बने। जाजू का फिल्म क्षेत्र में फायनेंस का काम था, इसलिये पहचान काफी थी। उनके सहयोग से टीवी सीरियल जी हॉरर शो, सास बड़ी या बहू सीरियल और फिल्म 'गुनाहगार' में काम करने का मौका मिला। अभिनेता मिथुन चक्रवति की इस फिल्म में मुझे दृश्य तो मिले मगर डायलॉग नहीं होने से मैं मायूस रहा। मुम्बई में फिल्म–टीवी के लिये कोई ढाई साल गुजारे। इस बीच काला घोड़ा पर एक भव्य फिल्मी पार्टी भी अटेन्ड की जिसमें अमिताभ बच्चन, अनिल कपूर, रविना टण्डन, अमरीशपुरी, राजकुमार सहित कई हस्तियों के साथ डीनर लेने का मौका मिला। मुम्बई में रहते हुए हेमा मालिनी, मिथुन चक्रवर्ति, साधना, पद्मा खन्ना, सावन कुमार, भप्पी लहरी, शबनम कपूर, आदि से उनके घरों पर मुलाकात भी श्री प्रकाश जाजू के साथ रहते हुए हुई।

विदेशी सफर सैशिल्स आयलैण्ड में

“ मुझे आभास होता है कि जीवन में मेहनतकश और मस्त मिजाज रहने और लोगों के लिये हमेशा सहयोगात्मक रवैया अपनाने के कारण शायद ईश्वर ने हमें अपनी गुड लिस्ट में रखा और एक सफर ऐसा भी कराया जिसकी कल्पना हमने कभी नहीं की थी। दुनिया के सबसे खूबसूरत आयलैन्ड सैशिल्स की विदेश यात्रा, जो किसी जन्नत की सैर से कम नहीं थी। सैशिल्स द्वीप को दुनिया के सबसे खूबसूरत आयलैण्ड की संज्ञा दी गई है। आदम और हव्वा भी यहीं पनपे थे ये बात यहां के कोको–डी मेर जैसे राष्ट्रीय फल के पीछे छुपी कहानी से पता चलती है। सैशिल्स की यात्रा मेरी पत्नी के सौजन्य से हुई जब शिक्षिका के रूप में उनकी नौकरी वहां लगी। संयोग रहा कि मेरी पत्नी ने सैशिल्स की यात्रा तीन बार की जबकि मैं अपनी पत्नी और बच्चों के साथ पूरे साल (सन् 2000) में रहा। खूबसूरत फोटोग्राफी का भरपूर मजा लिया और स्वच्छ जलवायु का आनंद भी। ”

साल 2000 विदेश के नाम रहा

पत्नी के योग से हमारा पूरा परिवार पूरे एक साल सन् 2000 में दक्षिण अफ्रिका के पास हिन्द महासागर की आगोश में बसे सैशिल्स आयलैन्ड पर रहा। सैशिल्स में रहते हुए 7 माह मैंने पांच सितारा होटल लेमुरिया रिसोट में काम भी किया। मस्त लाईफ जीते हुए लगा कि इण्डिया में व्यर्थ की भागदौड़ और तनाव ज्यादा होने के कारण उम्र के ढलते दौर में काफी फर्क पड़ता है। जबकि सैशिल्स में रहकर लगा कि जीवन तनावमुक्त होने से कितनी उर्जा देता है। साल भर रहते हुए अपने देश की याद इसलिये बहुत आई कि अपनापन विदेश में न के बराबर मिल रहा था। इस छोटे से सुन्दर देश में सब कुछ था, मगर अपनत्व की कमी खली।

कल जरूर अच्छा आएगा

सैशिल्स में पहुंचने के 20 दिन बाद ही हम पर संकट छाने लगा था। मेरी पत्नी को मिनिस्ट्री से पत्र आया कि हमने आपको मकान गलत अलाट कर दिया है। अतएव जगह चेंज करनी होगी और उसका किराया भी भरना होगा। मंहगे आयलैन्ड पर किराया चुकाना बजट के साथ असहनीय था। जबकि हम चार लोग भी थे। इसी बीच वहां की स्कूल में बच्चों का एडमिशन भी नहीं हो पा रहा था। बढ़ रहे तनाव के बीच हमारा मोबाईल भी समुन्द्र में बह निकला। मैं इन तमाम बातों और झंझटों और भी से तनाव में आ गया। अपरिचित लोगों के देश में होने से मन खीज उठा था। ये सोच सोचकर कलेजा मुंह को आ रहा था कि सैशिल्स में आखिर गुजर बसर कैसे होगा। तब पत्नी ने कहा–''धैर्य और आत्मविश्वास रखो, आज यदि खराब है तो कल जरूर अच्छा होगा।'' मेरी पत्नी की बात वाकई सच साबित हुई। मिनिस्ट्री का दोबारा पत्र आया जिसमें लिखा था कि उन्होंने भूल से मकान बदलने का लिख दिया था, इसलिये हमें जो मुफ्त मकान मिला, वहीं रहना होगा। कुछ दिनों में ही दोनों बच्चों को भी स्कूल में प्रवेश मिल गया। और एक मित्र ऐसा भी बना जिसने हमें समय गुजारने के लिये अपना एक मोबाईल भी भेंट कर दिया।

विदेशियों को खिलाए समोसे

हां मुझे समोसे बनाकर भी बेचना पड़े। ऐसा मैंने 6 माह सैशिल्स में रहते हुए किया। यहां मैंने समोसे बनाते हुए विदेशियों को खिलाए। दरअसल जब सैशिल्स पहुंचे तो मेरे लायक वहां कुछ काम नहीं था। पत्नी की सरकारी नौकरी होने से मैं घर में पड़ा–पड़ा ऊबने लगा था। तब पत्नी ने बताया कि यहां के लोग नमकीन बहुत पसंद करते हैं। यदि तुम बना सको तो बोरियत भी दूर होगी और हमें आय भी मिलेगी। यह जानकर हैरत हुई कि श्रीलंका के लोग यहां पर समोसा और केक बनाकर बेचते हैं। ये समोसा नानवेज होता है और इसे सैशिल्स की ख्यात मछली टूना के अंश मिलाकर बनाया जाता है। मैंने भी झिझक उतारकर समोसे बनाने का काम शुरू किया। वहीं से भंवरीलाल मिठाई वाले मित्र नवीन सैनी और कैलाश सैनी को फोन कर समोसे बनाने की विधि जानी और फिर मैं भी समोसे बनाने लगा। लेकिन इन समोसों में इण्डियन स्वाद भी चल निकला और नानवेज के साथ वेज समोसे भी जमकर बिकने लगे। 6 माह में मैंने लगभग 1 लाख रूपए समोसे से ही बनाए। शेष समय फाइव स्टार होटल में सुपरवाईजर बनकर बिताए। विदेश में कुछ भी काम करो वहां किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता। सैशिल्स की हमारी यह यात्रा बेहद रोमांचक, सुखद और अनुभव वाली रही, जिसे हम कभी नहीं भूल सकते। मेरी पत्नी ने यहां पूरे तीन साल काम किया मगर मेरे लिये तो एक साल ही किसी जन्नत के सुकून से कम नहीं रहा।

हम दोनों टिक नहीं पाये

हम पति पत्नी 'रोज कुआ खोदो और रोज पानी पिओ' की तर्ज पर जीवन गुजारते आए हैं। याने पैसा हमें जरूरत के मान से ही मिला मगर कभी उसकी कमी भी नहीं लगी, सिवाय इन सपनीली इच्छाओं के, कि काश हम अमीर होते, या काश हमारे पास भी कोई झकाझक मंहगी गाड़ी या बंगला होता। इन इच्छाओ की पूर्ति न होने के बावजूद हम कभी परेशान नहीं हुए जो पाया उसमें ही खुश रहे। आज के इस दौर में जब बेटा मां बाप से खर्च के लिये 500, 1000 रूपए छीनकर या लेकर आसानी से उड़ा देता है वहां हमारे दोनों बेटों का खर्च 50 या 100 रूपए से ज्यादा का नहीं होता, इस बात से भी हम गर्वित रहे। हम दोनों पति पत्नी के नसीब में सरकारी नौकरी नहीं रही। प्राइवेट जॉब हम दोनों ने किया जरूर, मगर स्वाभीमानी होने के कारण कहीं टिक कर नहीं रहे। मैंने पांच अखबारों में काम किया। तीन को आगे बढ़कर छोड़ दिया, एक बंद हो गया और एक ने गलतफहमी का शिकार होकर मुझे चलता कर दिया। इन कडुवे अनुभवों से जब अपना अखबार 'प्रिय पाठक' साप्ताहिक शुरू किया तो वह ऐसा चल निकला कि लोगों के लिये हाट केक बन गया। पैसा आज भी नहीं कमाता हूं बस जो मिलता है वो अखबार और रोजमर्रा के खर्चों में निकल जाता है। पत्नी मुझसे किस्मत वाली है उसे अच्छी और अच्छे पैसों वाली नौकरियां मिली, मगर मेरी तरह उसने भी कई संस्थान स्वाभिमानी होकर छोड़ दिये। वह अपने निजी व्यावसाय नृत्य कक्षा के संचालन में भी खुश है। मगर वह भी जितना कमाती है, खर्च कर डालती है। इन दिनों विक्रांत इंजी. कॉलेज में भी सेवाएं दें रही हैं। कभी कभी मन घबरा जाता है कि बेटों की शादी के लिये पैसा कहां से लाएंगे? कोई हादसा हो गया तो अर्थ से कैसे निपटेंगे। बावजूद बस एक उम्मीद रहती है –''ईश्वर सब ठीक करेंगे''

मजेदार और यादगार किस्से

'गे' के नापाक इरादों से जब मैं बचा...

मैं 15 साल का रहा होऊंगा, 10 वीं पढता था। मैं काफी गौरा चिठ्ठा था। उन्हीं दिनों मुझे अपना कसरती बदन बनाने की जिद सवार हुई थी इसलिये हरिफाटक के हाईस्कूल के मैदान पर सुबह 4 बजे से उठकर दौड़ लगाने पहुंच जाता था। कुछ दिन बाद मुझे दौड़ते समय यह अहसास होने लगा था कि मैदान के बाहर खड़ा होकर 'कोई' मुझे घूरता रहता है। मैं उस शख्स को पहचान गया मगर उसकी नियत

नहीं भांप पाया। उस एक सुबह भी वही शख्स मैदान के करीब खड़ा था। ये सात रास्ता निवासी एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था जिसे मैं पहचानता था। उसे देखने के बाद मुझे घबराहट हुई थी क्योंकि उसके कुछ किस्से सुन रखे थे कि वह लड़कों से दोस्ती करता है और उनके साथ कुछ गलत–सलत भी करता है उस दिन तो वह लगातार घूर रहा था। सूरज अभी निकला नहीं था। मैं चुपचाप दौड़ता जाता और वो मुझे घूरता रहता। उसने मुझे अचानक आवाज दी– 'दिनेश बेटा, एक मिनट', दौड़ते दौड़ते मैं चौंका मैं रूका, मेरी धड़कनें तेज हो गई, मैं धीरे से मरियल आवाज में बोला– 'जी अंकल!' वो एकदम मेरे करीब आया और हाथ पकड़कर बोला– 'बेटा मेरी पीठ में बहुत दर्द है, एक मिनट.... कमरे पर चलकर जरा पीठ दबा दे।' मैं सकपका गया, सुबह की ताजगी हवा के बावजूद मुझे दिमाग में एक बार चक्कर सा दौड़ा– 'अंकल तो मैं क्या करूं?' इस बार मेरे आवाज में कंपन थी। वह मुझे प्यार से पीठ हाथ रखकर बोला– 'अरे बेटा, बस थोड़ी सी देर लगेगी', कहते हुए मेरा हाथ पर दवाब बना वो मुझे मैदान से लगे एक छोटे से कमरे में ले गया। कमरा भीतर से बंद किया तो मेरे दिल की धड़कन और तेज हो गई। वो फुर्ती से खुद जमीन पर उल्टे लेटकर बोला– 'मेरी तरह बस मेरी पीठ पर लेट जाओ' उसका इतना कहना था कि मेरे पूरे बदन में घबराहट का करंट सा दौड़ा और मैं झटके से अलग होकर तेजी से दरवाजे की कुंडी खोल बाहर होते हुए बोला–'मुझे नहीं करना आता ये सब', कहकर तेज दौड़ लगाई। हाथ आया शिकार छूटता देख वह मेरे पीछे दौड़ा– 'बेटा सुन तो सही'। मुझे तो लगा जैसे मेरे पीछे भूत लग गए। मैं एक ही सांस में दौड़ता घर आया और अपनी खैर मनाते हुए लम्बी–लम्बी तेज सांसे ली। उसी दिन से मैंने सुबह दौड़ना बंद कर दिया। कोई डेढ़ महिने बाद से शाम के समय दौड़ने लगा मगर घबराहट में मेरी निगाहें उसे ही खोजती थी कि कहीं आ न जाए...! मगर हॉ अब वो इस दुनिया में नहीं है लेकिन उसकी बुरी नियत वाली आंखें, इरादे अभी भी याद है।

सूखे में निकला चमत्कारी पानी

चना गोदाम जहां मेरा हालिया निवास है, यहां पर रोटरी क्लब के अमान कुरैशी और कायद जौहर की सहायता से एक नलकूप का खनन होना था। पहले तो मना किया गया कि यहां पानी निकलेगा नहीं, क्योंकि आसपास कहीं भी पानी नहीं निकला था जिससे अभी तक आसपास के लगभग 6 नलकूप खनन बेकार हुए। मगर मुझे न जाने क्यों विश्वास था कि घर के सामने स्थित कमल खण्डेलवाल स्मृति में बनाए गए उद्यान में पानी निकल सकता है। उस दिन जब नलकूप होने लगा तो मैंने मन ही मन 'कमल' की आत्मा को याद किया और उससे विनती की यहां पानी दे दो, मोहल्ले वालों की समस्या हल हो जाएगी। बाद में मेरी जिद पर क्लब वाले

सहमत हुए। पास ही रहने वाले श्री ओमप्रकाश गोयल जो हनुमानजी के मंत्र पढ़कर पानी की खोज करते हैं, को बुलाकर उनके बताए हुए एक स्थान पर बोरिंग शुरू करवाया। 8 घण्टे की मेहनत के बाद भी जमीन से पानी 400 फीट की गहराई पर भी नहीं निकला। मुझे विश्वास नहीं हुआ मगर वस्तुस्थिति सामने थी। क्लब वाले निराश होकर चले गए। मुझे अफसोस हुआ कि उन्होंने मेरी जिद पर यहां नलकूप खुदवाया था। दो दिन बाद मैं मोहल्ले के जोजी को लेकर बगीचे में गया और बेकार हुए नलकूप खनन पर चिंतन करने लगा। तब जोजी ने कहा चलो खुदे गड्ढे में धागा डालकर देखते हैं कि पानी है या नहीं। उसने धागे में एक गिलास बांधकर गड्ढे में उतारा और जब उसे खींचा तो वह पानी भरा हुआ बाहर आया। हमारी खुशी का ठीकाना नहीं रहा। हमने क्लब वालों को सूचना दी। उन्होंने मोटर लगाकर पानी खींचा तो कोई दो घण्टे तक पानी तेज गति से बाहर निकलता रहा। मोहल्ले के लोगों में अपार खुशी हुई। सीईओ से कहकर बिजली कनेक्शन लिया और युवा समाजसेवी नवीन सैनी ने 3 हजार लीटर की टंकी भेंट कर दी। इस तरह से मुझे लगता है ईश्वरीय रूप में कमल की आत्मा ने चमत्कार दिखाया और हमें पानी की सौगात दे दी। आज भी चना गोदाम क्षेत्र में जहां नलकूप बेकार पड़े हैं या इक्के दुक्के नलकूपों में कुछ माह पानी रहता है वहां बगीचे में लगा नलकूप पूरे साल पानी देता है और मोहल्ले के संकट का समाधान करता है। यह कमल खण्डेलवाल की आत्मा से उपजा चमत्कार नहीं तो और क्या है?

वो मुझे मारने के लिये 6 माह तक ढूंढता रहा

कोई मेरी जान का प्यासा हो और वो साथ रहकर भी एक दूसरे को अनभिज्ञ हो, ऐसा बिरला अनुभव मुझे एक दिन हुआ। बात उन दिनों की है जब मैं 'दैनिक भास्कर' का महू संवाददाता था। उन दिनों महू इन्दौर के बीच रोडवेज की खटारा और अव्यवस्थित बसें चला करती थी। एक बार इन्दौर जाने के लिये मैं एक रोडवेज बस में सवार हुआ। सीट पर एक नौजवान से हाय हलो हुई। उसने बताया कि वह भी किसी समय रोडवेज में बस कंडक्टर था। लेकिन अचानक नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। मैंने उत्सुकता से पूछा ऐसा क्यों और कब हुआ तो उसने बताया कि "एक रात वह यात्रियों से भरी पूरी बस लेकर इन्दौर से महू आ रहा था। उसने यात्रियों से पैसे तो वसूले थे लेकिन टिकट किसी को नहीं दिया था। दूसरे दिन ही यह समाचार दैनिक भास्कर में प्रकाशित हो गया और रोडवेज विभाग ने मुझे नौकरी से बेदखल कर दिया। नौकरी छूटने से मैं इतना परेशान हुआ कि भास्कर के इस रिपोर्टर की तलाश में मैं उसे चाकू से मारने के लिये 6 माह तक तलाशता रहा, मगर वह रिपोर्टर मुझे मिल नहीं पाया।" युवक बातें सुनकर मैं चौंक गया। मुझे याद आया

ऐसा समाचार तो मैंने ही प्रकाशित किया था। तो क्या ये पास बैठा युवक मेरी ही जान लेने के लिये मुझे तलाशता रहा था। मैंने उससे पूछा कि ''फिर क्या तुम्हें वो मिला?'' उसने कहा ''मैंने उसकी सूरत भी नहीं देखी आज तक।'' मैंने सवाल किया कि ''वो तुम्हें जानता है या उससे तुम्हारी कोई दुश्मनी रही थी..!'' उसने कहा ''नहीं ऐसा तो नहीं था''। फिर मैंने उसे समझाया कि ''तुम्हारी बगैर टिकट बस लाने के मामले में उसे किसी यात्री ने जरूर लिखित शिकायत की होगी, और ऐसे में यदि यह न्यूज छपी होगी तो उससे तुम पर कार्रवाई हुई होगी, ऐसे में उस रिपोर्टर का क्या कसूर रहा होगा?'' मेरी बात सुनकर वह शांत हुआ और कहा कि ''हां कसूर तो मेरा ही था, पर उस समय नौकरी से हाथ धोने पर खुन्नस भर गई थी।'' मैंने कहा ''अच्छा यह बताओ अब यदि वो रिपोर्टर मिल जाए तो क्या करोगे?'' वह हंसकर बोला ''अब मेरा गुस्सा उतर गया है और मैं प्राइवेट नौकरी कर रहा हूं।'' मैंने तपाक से उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा ''तो फिर उसे आज से अपना दोस्त बना लो।'' वह चौंका और आंखें फाड़कर असमंजस्य से मुझे आंखे ताकने लगा। मैंने मुस्कराते हुए कहा– ''मैं ही वो रिपोर्टर हूं यार।'' एक पल के लिये वह घूरा और अगले ही पल जोर से हंसा–''क्या यार मिले भी तो इस मोड़ पर..।''

अनलकी बने मेरे ही बोल

20 साल पहले मैंने इन्दौर की एक नई निर्माणाधीन कालोनी में एक प्लाट लिया था जिसमें कालोनाईजर द्वारा हर माह लकी ड्रा निकाला जाता था। ड्रा में फ्री डीनर के साथ एक वेन ईनाम में दी जाती थी। उस दिन हम पति पत्नी तीसरे ड्रा पर भाग लेने इन्दौर पहुंचे। मैंने आयोजन स्थल पर पहुंचते ही पत्नी को विश्वास जताया– देखना आज हमारा ही नम्बर खुलेगा टू वन टू (212)...! सुनकर वह आंख दिखाकर बोली– टू वन टू नहीं, हमारा लकी नम्बर वन टू वन है। हमें जिन्दगी का सबसे बड़ा अफसोस हुआ जब ड्रा खुला तो सचमुच लकी नंबर पुकारा गया 'टू वन टू' ड्रा खुलते ही हमारी पत्नी का पारा सातवें आसमान पर था और हम अपनी जुबान को दांतों से काटे जा रहे थे।

ये हाथ हमें दे दे ठाकुर..!

कॉलेज समय में एक राष्ट्रीय शिविर मैंने अपने मित्र योगेश, राबर्ट और बहन अनु (जोधपुर) के साथ शिकोहाबाद के पास बटेश्वर गांव में अटेन्ड किया था। यह शिविर एन. सुब्बाराव के मार्गदर्शन में था जिसमें 1973 में आत्मसमर्पित किए गए डाकू भी हमारे साथ समाजसेवा और सुरक्षा की दृष्टि से जुड़े थे। शिविर में हम रोज एक

डाकू को घेरकर उनसे बड़े चाव से यह पूछा करते थे कि आप निजी जीवन में डाकू क्यों बने (काश मैं उस समय पत्रकार होता तो एक से बढ़कर एक स्टोरी लिखने में मजा आता)? एक दिन हमने हमारी उम्र से छोटे युवक से पूछा कि तू कैसे डाकू बना। वो बोला डाकूओं ने मेरे बाप को मार डाला था इसलिये बदला लेने के लिये मैं भी डाकू बना। हमने पूछा तुमने कितनों को जान से मारा, सुनकर वो हमारी तरफ देखकर बोला तुमने रोटियां कितनी खाई आज तक..? फिर बोला– मुझे भी नहीं पता, मैंने कितने मारे। उसके उत्तर को सुनकर हम सब की ऑखे फटना स्वाभाविक थी।

शिविर के दौरान एक बार हमें एक ऐसी जगह ले जाया जा रहा था जो इलाका मौजूदा डाकूओं का था, इसलिये सभी शिविरार्थियों को आगाह किया गया था कि वे सब साथ में रहे और उनकी हिफाजत के लिये समर्पणकारी डाकू साथ रहेंगे। यह चेतावनी जब दी जा रही थी तब हम तीनों इस यात्रा और चेतावनी से बेखबर होकर जमुना नदी में नहा कर मस्ती ले रहे थे। नहाकर लौटे तो शिविर सूना था, हमने रसोईया से पूछा तो उसने बताया कि फंलाने मंदिर की ओर गए हैं जो यहां से तीन किमी दूरी पर है। हमने रास्ता पूछा और हम चल दिये गांव से बाहर उस सूने रोड पर। बीहड़ इलाके में हम इस बात से भी बेखबर थे कि यहां असली डाकू भी हो सकते है, और रास्ते में जोर जोर से गाने गा रहे थे। इतना सूनसान रोड और कटीली झांड़ियां हमने पहले कभी नहीं देखी। हमें दूर से जाते हुए शिविरार्थी भाईयों का रैला नजर आ गया। हमारी जोर जोर से आवाजें सुनकर वे सब भी ठहर गए। जब हम पास तक पहुंचे तो हम तीनों को अकेला पाकर शिविरार्थी और सुरक्षा में लगे डाकू आश्चर्य से हमें ताकने लगे। श्री सुब्बाराव से हमें खूब डांट पड़ी, यह बताकर कि तुम जिस इलाके से गुजरकर आए हो, वो सचमुच के डाकूओं का इलाका था। सुनकर हम एक दूसरे की शक्ल ताक रहे थे, हमारे कानों में गब्बर की खौफनाक आवाजें गूंज रही थी...''ये हाथ हमें दे दे ठाकुर'' ।

घर आए माथे पर मेहमान

फिल्म 'अतिथि तुम कब जाओगे' ये डायलॉग और हालात से हम कड़वे अनुभव के साथ गुजरे। हम अपने रिश्तेदार अतिथि से तो कभी तंग नहीं हुए बल्कि नासमझी में बनाए गए एक परिवार को अतिथि बनाकर जीवन की सबसे बड़ी भूल की।

घटना लगभग 13 साल पुरानी है। एक दिन पिगडम्बर स्थित मशाल होटल (अब रेड मेपल) में ही कार्यरत हमारे पुराने मित्र नवीन मिश्रा घर आए, उनके साथ एक अपरिचित फैमिली थी। नवीन ने हमें मिलवाया तथा बताया कि ये मेरे मित्र देबू भट्टाचार्य, उनकी पत्नी शीला और बालिका हैं जो मेरे साथ होटल मे रहने आए हैं देबू अभी नए नए काम करने आए हैं। इनकी बेटी की तबीयत खराब रहती है और

आपके घर के पास स्थित गेटवेल अस्पताल में ये बेटी का इलाज करा रहे हैं। हो सके तो आप लोग मदद करना। नवीन की बात हम कैसे टाल सकते थे सो हमने देबू को चाय पानी पूछते हुए उससे दोस्ताना अंदाज में संबंध बढ़ाए। उनकी बेटी ठीक हो गई मगर देबू और उसकी पत्नी से हमारे परिवार से दोस्ताना संबंध बढ़ गए। देबू सिगरेट का बहुत आदी था वह 555 ब्रान्ड की सिगरेट पीता था। वह जबरदस्त शराब का भी आदी था। सो कभी हमारे घर तो कभी देबू के होटल स्थित कमरे में डिनर कम शराब पार्टी हो जाया करती थी। धीरे धीरे देबू ने हमें बताया कि उसने अपनी पत्नी से लव मैरेज किया है और वो ईमानदारी से होटल में काम करता है मगर होटल वालों से उसे भय है कि वे उसे झूठा लांछन लगाकर भगाना चाहते हैं। ये पूछने पर कि कौन लोग आपके पीछे पड़े हैं? प्रतिउत्तर में ये सुनकर झटका लगा कि उसने कुछ नाम गिनाए जिसमें हमारे मित्र नवीन का नाम भी शामिल था। हमें आश्चर्य हुआ, लेकिन देबू ने हमें विश्वास जमाते हुए कहा कि नवीन ठीक नहीं है और वह दो नम्बर के काम करके पैसा कमा रहा है। उसकी बातें सुनकर हम दोनों पति पत्नी अपने ही दोस्त नवीन के आचरण पर शंका करने लगे।

देबू की बातों को हमने नवीन के सामने नहीं बताया। उन्ही दिनों हम अपने मित्र नरेन्द्र सिंह के परिवार से मिलने सपरिवार मद्रास गए वहां से लौटे तो देबू ने हमें बताया कि होटल वाले किसी भी क्षण उसे निकालने वाले हैं। इसलिये उसे आज ही नौकरी छोड़कर घर भी खाली करना होगा। दोस्त बन चुके देबू पर हमें तरस आया और हमने उसे हमारे मकान में दो कमरे दिये और कहा कि तुम नई नौकरी तलाश करो और दो चार दिन में नया मकान किराये पर लेकर रहना शुरू करो। उसने हमारी परोपकारिता पर धन्यवाद दिया। वो, उसकी पत्नी, बच्ची और अपने तीन कुत्तों के साथ हमारे घर में रहने लगा। पहले ही दिन से उसने जमकर नशा किया और खूब सिगरेट पी। मना करने पर कहता था कि सीने में बहुत दुःख भरे हैं, जिन्हें वो भुलाना चाहता है। खैर।

देबू और उसके परिवार ने मय सामान व कुत्तों के हमारे घर में दो चार दिन नहीं 15–20 दिन रहते हुए गुजार दिये। हम परेशान होने लगे कि ये शख्स न तो नई नौकरी ढूंढ रहा है और न ही घर से जाने का नाम लेता है। अब इसे कैसे निकाले घर से। आखिर हमारा एक दिन धैर्य टूट गया और हमने कहा कि हमारे घर पर दूसरे मेहमान आने वाले है कृपया एक दो दिन में ही घर खाली करो। हमारा रूख देखकर देबू हरकत में आया और भोपाल गया। उसने वहां एक होटल में नौकरी शुरू की, मगर उनकी पत्नी महाशया हमारा घर छोड़ने का नाम ही नहीं ले रही थी। आखिर तंग आकर मैंने अपने मित्र सुनिल यादव से कहकर कोदरिया में एक मकान किराये पर दिलवाया और एक मेटाडोर बुलवाकर उन्हें सामान सहित कोदरिया के

मकान में शिफ्ट करवाया। पूरे एक महिने के दोस्ताना बनाम पागलपन से ऐसे हमने पीछा छुड़वाया। इस घटना को हम कभी नहीं भूलते हैं और जब ''अतिथि तुम कब जाओगे'' फिल्म आई तो हमें हमारे ये ठगोड़े अतिथि फिल्म के टाइटल से खूब याद आए।

कनाडा में फिल्म का सपना

बात उन दिनों की है जब मैं, योगेश और मेरी बहन मीना रंगमंच के दीवाने थे। उन दिनों मेरे मित्र राकेश स्टीफंस के रिश्तेदार लूथर अंकल कनाडा से आए थे। वे डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाते थे। उन्होंने कहा था कि इच्छा है कि वे अपनी नई डाक्यूमेंन्ट्री फिल्म में इंडिया के कलाकार लेना चाहते हैं। राकेश के पिता ने उन्हें बताया कि हमारे महू में भी अच्छे कलाकार है, इसके बाद उन्होंने हम तीनों को मैसेज भेजा कि वे आकर अपनी कला का जौहर बताए। हम खुशी–खुशी श्री स्टीफंस के घर गए और कनाडा वाले अंकल को अपने नाटकों का मंचन बताया। योगेश तो इतना दीवाना हो गया था कि उसने एक के बजाय तीन–तीन बार पात्र अभिनय करके बता दिये। कनाडा वाले अंकल बोले – ठीक है मैं जल्दी ही तुम लोगों को कनाडा बुलाऊंगा। हम तीनों तबसे कनाडा जाने का इंतजार देखने लगे। लेकिन योगेश को तो सचमुच सपने आने लगे कि उसे अंकल बार–बार कह रहे हैं चलो कनाडा चलो। योगेश सपने ही देखता रह गया मगर कनाडा वाले अंकल तो नहीं आएं। इधर मेरा फिल्मों में जाने का अपना विश्वासी सपना एक दिन पूरा हो गया (पढ़ें – मेरा फिल्मी–टीवी सफर)। आज 28 साल बाद योगेश को भी एक फिल्म में काम करने का मौका मिल गया है।

अभिनेता परिक्षित साहनी की जब पेन्ट फट गई...

बात 1990 के दौरान केरल के तिरअनंतपुरम की है जहां मै पहली बार फीचर फिल्म ''सावधान'' की शूटिंग करने आया हुआ था। फिल्म में देवानंद का पुत्र सुनिल आनंद हीरो था तथा अभिनेता परिक्षित साहनी एनसीसी ऑफिसर की भूमिका में थे। इस फिल्म में मैं बुरे छात्र का चरित्र निभा रहा था। अभिनय के साथ साथ शूटिंग में मुझे यूनिफार्म इंचार्ज का जिम्मा भी दिया गया था। उस दिन शूटिंग पहाड़ी इलाके में चल रही थी और तम्बूओं में हमें ठहराया गया था। अचानक अभिनेता परिक्षित साहनी मेरे तम्बू में आए और बोले ''पार्टनर (पार्टनर शब्द उनका तकिया कलाम है) मुसीबत आ गई यार''। कहते हुए उन्होंने मुझे अपनी पेन्ट बताई जो नीचे से फट गई थी। मैने कहा ''फिक्र मत करो आप पतलून उतारो मैं उसे हाथ से सी दूंगा''.

..वो चौंके कहने लगे ''तुम्हें सिलाई भी आती है?'' मैंने कहा ''हां, बचपन में मेरे बड़े भाई (स्व.राजेन्द्रजी) ने कुछ माह मुझे टेलर बनाने के लिये काम पर लगाया था, जिससे मैं काज–बटन और तुरपाई करना सीख गया था''। यह कहते हुए मैंने उनकी पेन्ट तुरन्त सुई–धागे से सी दी। वे बहुत खुश हुए कहने लगे ''यार पार्टनर इस जंगल में तू नहीं होता तो आज मेरी शूटिंग के काम लग गए होते''। वे मुझे ''थैंक्स'' कहते हुए खुशी–खुशी शूटिंग पर चले गए।

अभिनेत्री माधवी और मेरे 'आठ' पेग

मुम्बई में रहते हुए श्री प्रकाश जाजू के साथ मैंने बहुत सी फिल्म पार्टियों में भी भाग लिया था। उस रात प्रकाश के साथ एक बड़ी और भव्य स्टार डस्ट की पार्टी में काला घोड़ा इलाके की होटल में गया था। पार्टी में प्रकाशजी अपने दोस्तों के साथ व्यस्त थे तो मैं पास खड़ी अभिनेत्री माधवी को हैरानी से निहार रहा था। कारण, वो बिंदास होकर शराब के पेग पी रही थी। हांलाकि जाम मेरे हाथ में भी था। मगर माधवी की दिलेरी देखकर मैं भी हरकत में आ गया और एक के बाद एक व्हिस्की के गिलास वेटर को बुला–बुलाकर धड़ाधड़ गटकने लगा। माधवी ने कोई सात–आठ पेग शराब पी होगी, और ताव दिखाकर मैं भी आठ पेग पी गया। बाद में वो शराब मेरे दिमाग पर इस कदर चढ़ी की रात भर उल्टियां करता रहा और सुबह तक मैं माधवी को कोसता रहा।

चार दिन में देखी पांच फिल्में

बचपन से फिल्म देखने का शौक था। ये शौक मेरे बड़े भाई स्व. राजेन्द्रजी ने डलवाया था, जो खुद फिल्मों के दीवाने थे। वे मुझे हर तीसरे–चौथे रोज फिल्म दिखाने ले जाया करते थे। उस समय मेरी उम्र 10–12 के आसपास ही रही होगी। एक दिन मेरे पिता ने भाई को जमकर डांट पिलाई और कहा कि तू खुद तो फिल्में देखकर बिगड़ ही रहा है अपने छोटे भाई को भी बिगाड़ रहा है। उस दिन से मेरा भाई मुझ पर सख्त हो गया। उसने मुझ पर इस कदर सख्ती की कि बस एक माह में एक ही फिल्म देखो। ऐसा लगा जैसे मेरा भाई मेरे लिये दानव बन गया। फिल्म के पोस्टर मुझे बहुत रिझाते थे और मैं माह की वो तारिख का इंतजार करता था जब मुझे फिल्म देखने को मिले। जिस दिन भी मुझे भाई से इजाजत मिलती थी तो एक घण्टा पहले याने शाम 5 बजे से थियेटर के बाहर टिकट खिड़की पर जाकर बैठ जाता था। उस समय महू के चारों सिनेमाघरों में दो दो शो ही चला करते थे।

एक बार मुझे नाना–नानी के घर उज्जैन जाने का मौका मिला। फिल्मों का भूखा मैं जब उज्जैन पहुंचा तो अपने भाई की सख्ती से आजाद महसूस किया। दोनों

मामाओं को खूब पटाया। छोटे मामा के साथ चार और बड़े मामा के साथ एक फिल्म देखी, वह भी सिर्फ चार दिनों में । पांचवे दिन जब महू पहुंचा तो भाई ने आंखें दिखाते गब्बर की तरह प्रश्न किया– कितनी फिल्में देखी? मैंने कालिया की तरह बुदबुदाते हुए कहा– ''सिर्फ एक...दादाजी''। भाई ने यकीन कर लिया। थोड़े ही दिन बाद मेरे छोटे मामा राजेश लश्करी महू आए। आते ही उन्होंने हंस हंसकर भाई को मेरी फिल्मों वाली दीवानागी को बता दिया। बताते समय वे नहीं जानते थे कि उन्होंने मेरे भाई का भीतर का गुस्सा सूनामी बना दिया है। शाम को मेरे भाई ने मेरी जो रेगिंग ली वो कॉलेज में होने में वाली रेगिंग से ज्यादा खतरनाक लगी थी।

अजीब से अनुभव

कभी कभी मुझे लगता है जैसे मैं बाद में होने वाली घटनाओं को महसूस कर रहा हूं। आसमान देखकर बारीश आने, न आने की भविष्यवाणी मैंने अपने दोस्तों में कई बार की, जिसमें अधिकांशतया सत्य हुई। मुझे ऐसा भी अनुभव हुआ कि जिन्होंने मेरे साथ धोखा किया वे खुद ब खुद एक दिन निपट गए। नवभारत छोड़ने की वजह अखबार का मैनेजर नितिन था जो मालिकों के मुंह लगा हुआ था। उसने मेरे साथ शोषणात्मक व्यवहार किया था जिससे व्यथित होकर मुझे सात साल 1996 में बाद न चाहकर भी अखबार छोड़ना पड़ा था। उस अखबार के लिये मेरा तप, समर्पण और त्याग बहुत रहा था। मैं मन ही मन मैनेजर की करतूत पर उबलता रहताा था। सन् 2000 में विदेश में रहते हुए मुझे पता चला था कि उस अखबार के जनरल मैनेजर को मालिक ने दूध में मक्खी की तरह निकाल बाहर कर दिया था। ऐसे में ईश्वर के न्याय के प्रति मुझे और बल मिलता दिखता था। कुछ किस्सों को मैं बता नहीं सकता जिनमें उन लोगा के साथ मैंने बुरा होता देखा है और देख भी रहा हूँ, जिसके लिये वे ही अपनी हरकतों के जिम्मेदार भी हैं। मैं महसूस करता हूं कि जिन्दगी में अपनी मस्ती के लिये मैंने भी कुछ जाने अनजाने में गलत (किन्तु किसी को नुकसान पहुंचाने वाले नहीं) कार्य किये होंगे, जिसकी ईश्वर इसकी भी कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में सजा तो देगा ही ..और वह ईश्वरीय नियमों के हिसाब से जरूरी भी है। वैसे हर इंसान कुछ न कुछ तो गलत करता ही है, ये इंसान की नियती होती है। यदि सभी अच्छा कार्य करने लग जाए तो इंसान और देवता में फर्क ही क्या रह जाएगा।

अचानक कुछ हम सफर हुए बिदा

जिन्दगी की दुनिया में आना जाना चलता रहता है। कुछ समय से पूर्व तो कुछ लम्बे समय तक जीते हैं। हांलाकि समय सबके लिये नियत लिखा होता है मगर इंसान को ईश्वर द्वारा प्रदत्त समय का भान नहीं होता इसलिये वह जिन्दगी का समय अपने आप के अनुभव से निर्धारित करता है। मेरी मां और मेरे बड़े दो भाई के असमय गुजर जाने की यादें आज भी मन को कचोटती हैं। कॉलेज का साथी राजू उर्फ राबर्ट भारती डेढ़ साल पहले अचानक चल बसा। मन में वेदना इसलिये हुई कि हर दिल की बात मैं राजू से ही किया करता था। वह मेरे साथ स्टेज पर हास्य प्रसंग में कई बार अपनी हंसी रोक नहीं पाता था। वह जल्दी बिछड़कर हममित्रों को बुरी तरह रूला गया। 6 अक्टूबर 2010 को विनोद राजोरा अचानक चल बसा। विनोद की मटन की दुकान थी और मैं विनोद से लेने मटन लेने उसके पास अक्सर जाता था। वह मोबाईल करके मुझे मटन लेने की याद दिलाता था। वर्ष 2010 एक दिन सुबह अचानक उसे दर्द उठा और पन्द्रह मिनिट में मौत उसे भगा ले गई। जिसने भी सुना अवाक रह गया। बचपन में स्कूल समय का साथी किशोर खण्डेवाल भी कुछ साल पहले बिदा हो गया। गेहूं का व्यापारी था और मुझसे हमेशा नोंक झोंक चलती रहती थी। इसी प्रकार मेरे रंगमंच के मेकअप और चहेते रहे श्री श्यामलाल मेहरा, मेरे अखबार के लेखक रहे श्री त्रिलोकसिंह भाटिया भी छोड़ चले थे। दो साल पहले मेरा भांजा रिंकू और हालही में नाशिक वाले जीजा चल बसे, यह मेरी बहनों के लिए वज्रपात रहा। हमसफर चाहे दोस्त हो, जीवन साथी हो, संतान हो, माता–पिता हो या स्नेही हो, उसके अचानक बिछुड़ने से दिल तो झटका खाता है। मगर ऊपर वाले की मर्जी के आगे हमें इस दर्द को सहकर आगे बढ़ना ही होता है।

मेरे जन आंदोलन

''कॉलेज के समय से ही अन्याय और शोषण मुझे बर्दाश्त नहीं थे और मैं इनके खिलाफ हमेशा मैदान पकड़ लेता था। छात्र संघ सचिव रहते हुए मैंने सांस्कृतिक आयोजन के प्रभारी डॉ वाय के जोशी से लिखित में हिसाब मांग लिया था। तब सभी शिक्षक चौंक से गए थे। डॉ. जोशी ने बकायदा हिसाब भी दिया था। कॉलेज छोड़ने के बाद मेरे मन में आंदोलनरूपी जनाक्रोश सा पनपने लगा था। पत्रकारिता की शुरूआत से ही मैं जनसेवा के लिये जुट गया था।''

1. बिजली समस्या आंदोलन

उन दिनों मैं कॉलेज में छात्रसंघ सचिव रहा था। तब रोजाना शाम को बिजली

चली जाया करती थी। लोग बहुत परेशान थे और विद्यार्थी पढ़ाई को लेकर चिंतित भी। दैनिक दोपहर के सम्पादक श्री विद्याधर शुक्लाजी (स्वर्गीय) उन दिनों महू आया करते थे और उनके साथ काफी अच्छे संबंध बन गए थे। उन्होंने राय दी थी कि बिजली समस्या को लेकर मशाल आंदोलन करो। मैंने बिजली समस्या को लेकर मशाल आंदोलन की घोषणा कर दी। श्री शुक्ला अपने अखबार में रोजाना आंदोलन की खबरें छापते रहे जिससे आंदोलन की तिथि जैसे जैसे पास आती गई वैसे वैसे लोगों में उत्सुकता बढ़ती गई। योगेश यादव उन दिनों मेरा जूनियर रहा मगर वह इस आंदोलन से कन्नी काट गया था इसलिये मै अलग–थलग पड़ गया था। बावजूद मैंने अकेले ने हिम्मत भरी। नतीजन मेरे साथ कई विद्यार्थी जुटते गए और मेरे छात्र राजनीति में विरोधी रहे लक्ष्मण सैनी और महेश जायसवाल भी अंतिम समय में मेरे साथ जुड़ गए। आंदोलन की तारीख के एक दिन पूर्व बिजली अधिकारी घबरा उठे उन्होंने मेरे साथ बैठक कर वादा किया कि कल से ही कटौत्रि बंद कर दी जाएगी। मैंने विश्वास में आकर आंदोलन समाप्ती की घोषणा कर दी। इसके बावजूद भी नियत तिथि पर आंदोलन के लिये लड़के इकट्ठा हो गए। तब विरोधी कुछ नेताओं ने मुझ पर कटाक्ष किये कि मैंने डरकर आंदोलन स्थगित किया है। लेकिन ईश्वर मेरे साथ थे और उसी रात से महू में बिजली कटौत्री बंद हो गई और विरोधी मन मसोसकर रह गए।

इसी प्रकार दैनिक भास्कर प्रतिनिधि और प्रेस क्लब अध्यक्ष रहते हुए मैंने रोडवेज बसों की अव्यवस्थाओं के खिलाफ भी चक्काजाम आंदोलन की धमकी दी। इस आंदोलन से पहले ही बसों के संचालन में सुधार हो गया था।

2. पार्षद उम्मीदवारों को एक मंच पर

1987 वार्ड चुनावों को लेकर 'बातचीत संस्था' के बैनर तले महू के सात रास्ते पर 'उम्मीदवारों से मिलिये' आयोजन सफलता के साथ किया था। पहली बार सातों वार्डों के सभी प्रत्याशियों को सात रास्ता पर मंच लगाकर उनसे कबूल करवाया था कि यदि वे जीत गए तो क्या करेंगे। इस मंच से वार्ड 3 के उम्मीदवार योगेश यादव और मजीद दरबारी में जमकर वाकयुद्ध हुआ था। अध्यक्षता पत्रकार श्री कमल दीक्षित ने की थी। मुख्य अतिथि थे श्री विद्याधर शुक्ला। इसके बाद महू में कभी किसी ने ऐसा आयोजन नहीं किया।

3. जनमंच कोतवाली चौराहे पर

प्रेस क्लब अध्यक्ष रहते हुए नगर की समस्याओं पर जनमंच लगाया था जिसमें नगर के लोगों ने अपनी समस्या चिट्ठियां भेजकर बताई थी। इस जनमंच आंदोलन

के जरिये पहली बार केन्टोन्मेन्ट बोर्ड के खिलाफ लोगों का आक्रोश चिट्ठियों के साथ मंच से बताया गया था। इसे देखने सुनने लोग बड़ी संख्या में आए थे।

4. खाट बिछाओ आंदोलन

यह मेरे जीवन का अनोखा आंदोलन था। मेरे कॉलेज की दिनों की ही बात है, महू में एसडीएम के रूप में श्री सुनिल कुमार पदस्थ थे। उन दिनों महू में यातायात व्यवस्था गड़बढ़ाने लगी थी। हमने बातचीत संस्था के बैनर तले ''खाट बिछाओ आंदोलन'' किया। इसके तहत कुछ युवा और पत्रकार साथी इकट्ठा हुए। योजना के मुताबिक सुबह 4 बजे घरों से सब अपनी अपनी खाट लेकर पैदल ही मेन स्ट्रीट पहुंचे और खाटें बिछा कर सो गए। सुबह हुई तो लोग हैरान रह गए। पुलिस का सिपाही आया, हमने उससे कहा जाओ अफसरों को बुलाओ तब हटेंगे। धीरे धीरे शहर में कौतुहल हो गया। भीड़ लगने लगी। एसडीएम सुनिल कुमार, एसडीओ कपूर और सीईओ मौके पर आये। तब हमने मांग रखी कि जब तक महू शहर का यातायात नहीं सुधरेगा तब तक हम नहीं हटेंगे। हमारी मांगे सुनकर वे असंमजस्य में आ गए लेकिन आखिर वे माने और सात दिन का अल्टीमेटम देकर हमने आंदोलन खत्म किया। सात दिन के भीतर महू में यातायात को लेकर प्रशासन, छावनी बोर्ड सतर्क हो गया। चालानी कार्रवाई हुई शहर का यातायात झकाझक हो गया। आज महू के हालात देखकर खाट बिछाओ आंदोलन याद आता है मगर शहर का दर्द समझने वाले अब कम दिखाई नहीं देते हैं। सडकों की दयनीय हालत को लेकर भी मौखटा लगाकर एक प्रदर्शन शहर की सड़कों पर किया था। इसमें मोहल्ले के लड़कों ने साथ दिया था।

5. गंदगी पर जिला स्तरीय फोटोग्राफी

नगर में गंदगी के बढ़ते साम्राज्य को लेकर मैंने जिला स्तरीय फोटो स्पर्धा करवाई। इन्दौर के कई फोटोग्राफरों ने भाग लिया। महू का कमेला गंदगी का विशेष आकर्षण रहा। इन्दौर के फोटोग्राफर एम के जैन ने पहला ईनाम जीता। ईनाम की राशि 5 हजार रूपए मैनें अपनी जेब से दी थी। पुरस्कार वितरण के लिये मैंने नईदुनिया के समय के साथी रहे पत्रकार श्री राजेश बादल को महू बुलवाया। जब उन्होंने महू आकर मुझसे आने जाने का खर्चा मांगा तो मैं परेशान हो गया मगर मैंने उन्हें भुगतान किया। मैं भूल गया था श्री बादल अब इंदौर में नहीं रहते थे। उनकी भी मजबूरी थी इतनी दूर से आना, फिर उन्होंने मेरा मान भी रखा, सो मैंने उन्हें मन से धन्यवाद भी दिया। इस आंदोलन में मैंने जेब से 10 हजार रूपए से ज्यादा खर्च किये। अक्सर कोई भी जन–आंदोलन करने को लेकर मुझे बुखार सा चढ़ जाता और

मैं जेब के असर की भी परवाह नहीं करता।

6. विधानसभा चुनाव में जनअदालत

1993 विधानसभा चुनाव को लेकर कोतवाली चौराहे पर विशाल मंच लगाया था। मैं प्रेस क्लब अध्यक्ष था और प्रेस क्लब के बैनर से ही ये आयोजन किया गया था। इसे देखने सुनने के लिये तहसील से 10 हजार श्रोता उपस्थित हुए थे। तत्समय मंच पर भाजपा उम्मीदवार भेरूलाल पाटीदार सहित कई अन्य प्रत्याशी समय पर पहुंचे थे जबकि कांग्रेस प्रत्याशी पी डी अग्रवाल और उसके साथियों ने सभा में देर से पहुंचकर बवाल मचाया था जिसके कारण तनावपूर्ण वातावरण जन्म लेने लगा। इस सभा को लेकर प्रशासन भी परेशानी में था कि दलीय मंच के नेता एक साथ मंच पर बैठ पाएंगे, इसके बावजूद हमारा आयोजन समय पर शुरू हुआ लेकिन कांग्रेस ने सभा में व्यावधान पैदा कर डाला था जिसके कारण फिर कार्यक्रम निरस्त करना पड़ा था। प्रेस क्लब की ओर से कांग्रेस के खिलाफ प्रेस विज्ञप्ति जारी की। चुनाव के रिजल्ट ने भाजपा की जीत ने अंततः कांग्रेस को भारी निराश कर डाला।

7. केन्टोन्मेन्ट बोर्ड के खिलाफ..

लम्बे समय के बाद 2010 मैं एक बार फिर केन्टोन्मेन्ट बोर्ड के कार्यकलापों से असंतुष्ट होकर जनहित में आंदोलन में कूदा। इस बार जोशीले वकील मनीष जायसवाल, रवि आर्य और गोविंद शर्मा का साथ मिला। नगर में अंतिम यात्रा निकालकर बोर्ड कार्यालय में सीईओ रविशंकर का घेराव किया गया। लम्बे समय के बाद हुए इस आंदोलन में जागरूक नागरिक जुड़े यह देखकर अच्छा लगा।

...और कुछ ऐसा भी

बहुत डरपोक था बचपन में

मुझे याद है मैं बचपन में बहुत डरपोक था। डरता था भूत प्रेत से और डरता था हर आपराधिक चरित्र से। मैं स्कूल में बहुत सीधा और भयभीत रहा करता था। यहां तक कि कक्षा 1 ली में नए शिक्षक को देखकर भी रो पड़ा था। मेरा डर सही मायने में कॉलेज पहुंचते ही बाहर हो गया। यहां ऐसे लड़कों की संगति मिली जिनके बीच रहकर मुझे कॉलेज की हवा प्रभावित कर गई। यही कारण था कि मेरा फर्स्ट ईयर का रिजल्ट थर्ड डिविजन बाय ग्रेस आया। मैं सेकन्ड ईयर में पढ़ाई के प्रति गम्भीर और समर्पित हुआ। बावजूद एग्रीगेट सेकन्ड डिविजन नहीं बन पाया। मैं अपने

रिजल्ट को लेकर घबरा गया था इसलिये एम काम में दिल लगाकर पढ़ाई की और फर्स्ट क्लास पास हुआ तो मेरे सहपाठी ही अचरच में पड़ गए। एक दिन लॉण्ड्री पर रहते हुए पिता के कहने पर एक पहचान वाले ने मुझे एकाउन्ट की नौकरी के लिये बुलाया तो वो मेरी स्नातक और स्नातकोत्तर की मार्कशीट देखकर बोला जरूर तुम एम कॉम में चीटिंग करके पास हुए होगे, ये सुनते ही मैं भड़क गया और वापस लौट आया। लॉन्ड्री है अपनी तो फिर नौकरी की क्या जरूरत। सो फिर नौकरी की तलाश नहीं की। इसी बीच सेकन्ड ईयर में कॉलेज में 'एनएसएस समाचार पत्र' को निकालने का अवसर मिला और मेरी हस्तरेखा में पत्रकारिता का दौर शुरू हो गया। कॉलेज में छात्रसंघ सचिव और अध्यक्ष का चुनाव लड़ने के बाद मेरे भीतर साहस का इतना संचार हुआ कि मैं जब दैनिक भास्कर का महू संवाददाता बना तो अपराधियों के खिलाफ जमकर कलम चलाई। कलम हाथ में लेकर मुझे लगा कि मैं शहर का थाना प्रभारी बन गया हूं या फिर न्यायाधीश। बस न्याय करो, अन्याय का खात्मा करो कि तर्ज पर मेरी आक्रामक पत्रकारिता ने मुझे डरपोक से साहसी होने का तमगा दे दिया।

50 के बाद गायकी भी

मेरे कैरियर में अजीब से मोड़ आए। मैं कॉलेज में नेतागिरी को छोड़कर अभिनय के साथ साथ रंगमंच का एक स्थापित कलाकार बन गया। पत्रकारिता के साथ ही फोटोग्राफर बन गया। गीत गाना मुझे अच्छा लगता था इसलिये यदा कदा कॉलेज के एनएसएस शिविरों में गाने गा दिया करता था। लेकिन बाद के 20 सालों से गाना न के बराबर ही गाया। उम्र 50 के बाद दीपक जाजू ने अपने मित्र मंडल में आमंत्रित कर होली मिलन समारोह की शुरूआत की तब मैंने हास्य के साथ साथ गीत गाने भी शुरू किये। हेमन्त ठक्कर के घर एक बार जब गीत गुनगुनाने का मौका मिला तो उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया कि तुम्हारे पास नेचरल प्रतिभाशाली आवाज है, तुम गाया करो। मैं फिर गीतों के प्रति धीरे धीरे उसकी गहराई मैं उतरा। अब मैं पहले से बेहतर गीत गाने लगा हूं। 'मसक कली मसक कली' और 'कोलवारी डी' कठीन गीत होते हुए भी मैने इन्हें गाया है। शिफा अंसारी के साथ हमारे युगल गीत भी बहुत प्रभावी रहे। यह मेरी बहुआयामी प्रतिभा रही है, जिसके लिये मैं ईश्वर का शुक्रवार हूं।

बेटे ने दोहराई 20 साल पहले की मेरी दीवानगी

वर्ष 2009, दिन 12 नवम्बर, मेरा बेटा करन मुम्बई में होटल मैनेजमेन्ट कोर्स के

तहत फाईव स्टार होटल में प्रशिक्षण ले रहा था। एक दिन शनिवार को जब मैं इंदौर में अपना अखबार प्रिंट करवा रहा था अचानक रात 11 बजे करन का फोन आता है कि ''पापा आज मम्मी का बर्थडे है और मैं आपके साथ घर चलूंगा''। मैं चौंका– ''तुम तो मुम्बई में हो न'? उसने कहा– ''नहीं, मैं इन्दौर प्लेन से आ गया हूं''। सुनकर मैं और चौंका– ''प्लेन से?... इतने पैसे क्यों खर्च कर आए?'' उसने कहा– ''मैंने एक माह पहले ही मात्र 2 हजार रूपए में टिकट ले लिया था।'' मैं बेटे की चाहत देखकर खामोश हुआ, वहीं 20 साल पहले की घटना मुझे सहसा याद आ गई कि मैंने भी तो यही किया था। जब करन दो साल का था तब मैं फिल्म सावधान की शूटिंग करने केरल गया हुआ था। शादी के बाद मैं अपनी पत्नी से पहली बार एक माह के लिये दूर हुआ था। वापसी का इंतजार जितना मुझे था उसे भी उतना ही था। मेरी ट्रेन से वापसी की बुकिंग थी। मैं जिस होटल में ठहरा था उसके सामने एयरइंडिया का ऑफिस था। मन ने एक दिन कहा कि क्यों न प्लेन से मुम्बई जाया जाए। मैं एयरइंडिया के ऑफिस पहुंचा। टिकट 3,500 का था। मेरे पास 4,500 रूपए थे। मैंने अपने किसी भी साथी को नहीं बताया और ट्रेन की बुकिंग वाले दिन का एयर टिकट ले लिया। जब मैं प्लेन से जाने लगा तो शूटिंग स्टॉफ को हैरत हुई। ये मेरी पहली एयर यात्रा थी, इसलिये मन बहुत घबरा रहा था, कि कहीं कोई दुर्घटना न हो जाए। वरना लोग कहेंगे कि मौत बहाना ढूंढती है ट्रेन का टिकट था, मगर हवाई जहाज में आना लिखा था, ऐसे बुरे ख्याल मुझे प्रति पल आ रहे थे। त्रिवेंद्रम के हवाई अड्डे से जब प्लेन उड़ा तो दिल जोरों से धड़कने लगा था। एक घण्टा चालीस मिनट की यह यात्रा सुखद भी लगी और मन में कंपकंपी लिये भी रही। जब मात्र डेढ़ घण्टे में मुम्बई पहुंचा तो मारे खुशी के मन उछाले मार रहा था। मैं टैक्सी लेकर सायन गया। उस समय इन्दौर के लिये केवल दो ही प्रायवेट बसें चला करती थी उस वे दोनों फुल थी। मगर मुझे जल्दी पहुंचने का जुनून सवार था। इसलिये सीटों के बीच मोढ़े पर बैठकर यात्रा करने के लिये तैयार हो गया। रात जरा सी जगह में बैठकर गुजारी। मगर दर्द काफूर हो गया जब महू पहुंच गया। उतरते ही अनु के लिये इन्दौर पब्लिक स्कूल फोन लगाया। (वहां अनु शिक्षिका थी) वह जब फोन पर आई तो मैंने उससे बहाने बनाते हुए कहा कि मेरी ट्रेन की बुकिंग नहीं हो पाई अब मैं 15 दिन बाद त्रिवेंद्रम से आऊंगा, इतना सुनते ही वह फोन पर रो पड़ी। मैंने कहा– ''अच्छा रोओ मत, ये बताओ कि घर की चाबी कहां रखी है।''... फिर हंसते हुए मैंने बताया कि मैं आ गया हूं। चौककर पूछा ''कैसे...?'' मैंने कहा–''सड़क और रेल के अलावा एक रास्ता हवा में भी हैं।'' ऐसा सरप्राईज पाकर वह खुशी के मारे पागल सी हो चुकी थी। ठीक 20 साल बाद मेरे बेटे ने मेरी तरह अपनी मां को सरप्राईज दिया। रात 12 बजे वह बेटे को अकस्मात् पाकर बेहद खुश हुई थी।

अफसरों से रहे संबंध

आत्मीय ज्यादा, कड़ुवे कम

यह भी एक अनुभव रहा कि पत्रकारिता के दौरान मेरे कई प्रशासनिक अफसरों से संबंध उतार चढ़ाव जैसे रहे। किसी से बहुत अच्छे तो किसी से बेहद कड़वे। प्रारम्भ कॉलेज लाईफ में एसडीएम श्री सुनिल कुमार से हुआ जिनसे समाजसेवा की शुरूआत हुई। बाद में एसडीएम श्री मनोज श्रीवास्तव, श्री अमरसिंह, श्री आर के स्वाई, श्री मलय श्रीवास्तव, श्री पी. नरहरी, श्री शैलेन्द्र कुमार, तहसीलदार श्री मदनसिंह ठाकुर, संजय चतुर्वेदी, ए के मिश्रा, श्री सुधीर तारे, पुलिस में श्री सुरेन्द्रसिंह ठाकुर, श्री डी डी त्रिपाठी, श्री सूद, श्री राजीव टण्डन, श्री अंशुमनसिंह, श्री ए के पाण्डे, श्री सत्येन्द्र शुक्ला, श्री मनीष खत्री, श्री देवेन्द्र पाटीदार, श्री सुरेश चौहान, श्री राजेन्द्र चौहान, श्री ए के श्रीवास्तव, श्री डी के तिवारी, श्री सीताराम चोपड़ा, श्री अंगदसिंह राठौर, श्री दौलतसिंह गुर्जर, श्री नागेन्द्रसिंह बैस, छावनी अधिशासी अधिकारी श्री रामलाल, श्री आहूजा, श्री माही, श्रीमती विभा शर्मा, ब्रिगे. इन्दरसिंह भाटिया, ए के चोपड़ा, (हो सकता है कुछ के नाम भूल रहा हूं, लिखते वक्त) आदि से संबंध बेहतर रहे। दैनिक भास्कर प्रतिनिधि के समय महू में श्रीराम जयंति पर जब शिवसेना का जोरदार जुलूस निकला तक एक तात्कालीन एसडीओपी श्री अंब मुझ पर आरोप लगाने लगे कि तुम धार्मिक भावना का उन्माद फैला रहे हो, ये सुनते ही मैने उस अफसर को रोड पर ही चैलेन्ज दे दिया कि मुंह सम्हाल कर बात करना, झूठा आरोप लगाकर कुछ भी करने की सोची तो वर्दी उतरवा कर दम लूंगा। उस अफसर ने मेरे खिलाफ साजिश की कोशिश की मगर असफल रहा। इसी प्रकार एक टीआई ने चोरी की वारदातें बार बार अखबार में छापने से तंग आकर एक चोर को यहां तक दिया कि जाओ उस पत्रकार को सबक सिखाओ। जिनके कारण तुम्हें हमें पकड़ना पड़ा है। उस चोर ने जेल से छूटने के बाद मुझे टीआई की खीज बताई थी। इसी टीआई ने पुलिस की गुप्त रिपोर्ट में मेरे खिलाफ अशोभनीय टिप्पणी की, मगर वरिष्ठ अधिकारी श्री सूद ने उस टिप्पणी को खारिज कर दिया। आज भी मुझे मुट्ठी भर निपटाने वालों पर चाहने वालों का सैलाब भारी पड़ता है फिर ईश्वर का आशीर्वाद सदा साथ रहता है।

मैंने की उद्दण्डों की पिटाई

जब मैं किसी गलत चीज को पाता हूं तो बर्दाश्त नहीं करता। ऐसे तत्वों के लिये पहले समझाईश फिर पिटाई जरूरी हो जाती है।

स्कूल के बहुत से ऐसे किशोरों की मैंने पिटाई की है जो कम उम्र में सिगरेट पीते

नजर आ जाते थे। मेरे घर के सामने वाला बगीचा ऐसे बच्चों की शरणस्थली बनती थी तो मैं आपे से बाहर हो जाता था। किशोरों को मैं जवानी सुरक्षित रखने के उपदेश भी देकर उन्हें सिगरेट बंद करने की सलाह देता था। इसी प्रकार कम उम्र के युवाओं में लड़कीबाजी को लेकर भी नाराज होता था। कईयों को समझाता भी था कि अभी उम्र इस लायक नहीं है कि अपनी जवानी को खराब करो।

कुछ लोगों ने तो मुझे अकारण परेशान भी किया। मेरे बंगले के पास रहने वाले जुई को मैने उसके बार बार गिड़गिड़ाने पर नल कनेक्शन मेरे श्वसुर को बिना बताए दे दिया। लेकिन जुई ने उसका नाजायज फायदा उठाते हुए पानी को रोज बहाने का सिलसिला शुरू कर दिया। शुरू में मैंने उसे दो बार समझाया मगर वह समझने वालों में नजर नहीं आया। उस दिन मैं आपे से बाहर हो गया जब उसकी कारस्तानी से मेरे घर में पानी भर आया। मैं घर से बाहर आया और वो मुझे नजर आ गया। फिर क्या था मैंने उसकी पिटाई कर डाली। वह इतना घबराया की पास वाला स्थान छोड़कर भाग खड़ा हुआ। एक ओर महाशय थे जिन्हें संटू कहते हैं, अकारण परेशान करने में इन्हें शायद आनंद आता था, सो आते जाते फब्तियां कसने की आदत थी। हद से आगे गुजर गए और मेरी कार का कांच फोड़ दिया। मैंने तत्काली पुलिस केस करवाया। अखबार में छपी एक खबर को लेकर एक ठेकेदार उत्तेजित हो गए थे सो उनसे भी गुत्थमगुत्था हो गई थी। बात पुलिस थाने से निकलकर कोर्ट कचहरी तक पहुची। मगर बाद में दोस्ती हो गई इसलिये यहां उस नाम का जिक्र करना उचित नहीं समझता।

ईश्वर से एक प्रश्न पूछूंगा...

ईश्वर ही जानते हैं कि उनके मन में क्या होता है। जब आदमी के सामने जीवन–मरण का कोई ऐसा सत्य सामने आता है जिसे वो हजम या बर्दास्त नहीं कर पाता तब उसके मुंह से अनायास यही शब्द निकलते हैं कि ''ईश्वर ही जानता है'', ''उसकी लीला वो ही जाने''।

कुछ ऐसी ही ईश्वर लीला मेरी मां के साथ भी हुई हैं, मन में एक प्रश्न हमेशा कचोटता है जिसका उत्तर भी ईश्वर के पास ही है। सोचता हूं कि कभी ईश्वर से मिलूंगा तो यह प्रश्न जरूर करूंगा कि जिस मां ने जीवन तकलीफों से गुजारा, एक नहीं, दो नहीं, पूरे 11 बच्चों को जन्म देकर उनकी परवरिश की। धोबी धंधे की कड़ी मेहनत जीवन के अंतिम समय तक की, जब तक कि वह अपने पैरों पर खड़ी रही, करती रही। फिर उस मां को उसने मृत्यु को इतनी कठिनता से दर्दिला क्यों बनाया। मेरी मां कोई 70 साल की उम्र में ही मृत्यु को प्राप्त हो गई। लेकिन मृत्यु के सात साल पहले से ही उसे घुटनों में तकलीफ शुरू हुई, फिर आंखों से देखने में तकलीफ

होने लगी। उसकी आंखों में तो लैंस लग गया मगर धीरे–धीरे वो शारीरिक रूप से शिथिल होने लगी। कई बार पैदल चलने में वह गिरने लगी। फिर पूरी तरह से बच्चों के समान हो गई। नहलाना, धुलाना, खिलाना, उठाना, घुमाना सब कुछ दूसरों पर निर्भर हो गया। बीमार नहीं थी कहीं से भी, बस शारीरिक शिथिलता ने उसे पंगु बना दिया था। लेकिन हंसी उसके चेहरे पर हमेशा रहती थी। मैं उसे हमेशा अपने पास रखना चाहता था मगर कुछ दिन रहने के बाद उसे सात रास्ते वाले पुराने घर पर जाने की ही चाह होती थी। उसकी कुछ जिद मुझे अच्छी नहीं लगती थी, जिससे मैं उस पर चिड़ जाता था। मगर शायद दिमाग से वो ये सब करने को मजबूर होती थी। मुझे उसकी हालत देखकर बहुत तरस आता था, पर असहाय था कि आखिर क्या करूं और कितना करूं। वह सूखती सी गई, उसके चेहरे से हंसी गायब होती गई और एक दिन वो मृत्यु को प्राप्त हुई। जैसे कोई सजा काट रही थी और मौत आने का नाम नहीं ले रही थी। क्यों हुआ उसके साथ ऐसा, किसका उसने क्या बिगाड़ा था। मोहल्ले भर के लोग उसे ''भाभी'' कहकर पुकारा करते थे। सब के हाल चाल पूछते हुए वह बाजार को आती जाती थी। फिर उसके साथ ऐसा क्यों हुआ. ..कभी मौका मिला तो ईश्वर से जानना चाहूंगा।

मेरे विचार...

लम्बी उम्र देना ईश्वर के हाथ में भी नहीं

मैं कई बार लोगों के मुख से सुनता हूं ''अरे यार तेरी बड़ी लम्बी उम्र है, तुझे बस याद ही कर रहे थे कि तू आ पड़ा''। ऐसा वाक्य कई मौकों पर सुन चुका हूं। लोगों की दुवाएं कहें या फिर इन शब्दों की सत्यता, ऐसे आदमी की उम्र तो बढ़ती ही होगी, जिसके बारे में आदमी बरबस बोल पड़ता है कि **यार बड़ी लम्बी है उम्र तेरी।** मगर क्या कभी आपने सुना है कि कोई मनुष्य 100 या सवा सौ साल से ज्यादा जी पाया हो? हर्गिज नहीं, फिर लम्बी उम्र के मायने क्या रह जाते हैं? मगर मैं मानता हूं कि ईश्वर चाह कर भी किसी को लम्बी उम्र नहीं दे सकता। क्योंकि लम्बी उम्र जीने वाला व्यक्ति अमर होने की श्रेणी में आ सकता है और अमर होने का अधिकार सिर्फ देवों को हैं प्राणियों को कदापि नहीं। इसलिये ऐसे व्यक्ति को जिसे लम्बी उम्र जीने की दुवाएं मिलती है उसे निश्चित अवधि में प्राण लेने के लिये ईश्वर उसके शरीर में उसकी आदतानुसार कोई बिमारी दे देते हैं या अचानक कोई हादसा, जिससे वह व्यक्ति जिसे लम्बी उम्र जीने की दुवाएं मिलती हैं, वह एक दिन प्राण छोड़ देता है। ऐसे व्यक्ति के बारे में तब ये वाक्य सुनने में आते हैं ''अरे वो तो

अभी और जीता, मगर तमाखू /शराब/नशे/आपराधिक प्रवृति/दुर्घटना आदि के चलते उसकी मौत हो गई।'' क्या ऐसा नहीं लगता कि जिसे लम्बी उम्र की दुवाएं मिलती हो, उसे ईश्वर चाह कर भी जिन्दा नहीं रख पाता और उसे निश्चित अवधि ा में मौत देने के लिये वह भी कोई ताना–बाना बुनता हो, जो उसके विधि अनुसार जरूरी हो, ऐसा मुझे आभास होता है।

ईश्वर के पास है विशाल कम्प्युटर

इंसान ने जिस चमत्कारी चीज की खोज की है वो है कम्प्युटर। जिसमें हम तमाम प्रकार की जानकारियां ले सकते हैं और तमाम जानकारियां उसमें सहेज सकते हैं। हम छोटे से कम्प्युटर से पूरी दुनिया में घूमते हैं और संचार व्यवस्था नेट के जरिये हमें पल भर में दूर बैठे मनचाहे शख्स से मिला देती है। तमाम प्रकार के डाटा, साफ्टवेअर से हम आधुनिक कम्प्युटर के मार्फत लगभग हर चीज को प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन मेरा सोचना है कि मनुष्य ने जिस कम्प्युटर की रचना आज के दौर में की है या आधी शताब्दी में हमने कम्युटर को कितना आधुनिक बना लिया है वही कम्प्युटर ईश्वर के पास तो न जाने कब से है। उसका कम्प्युटर तो इतना विशाल है कि हमारा कम्प्युटर उसके आगे पानी भरता होगा। ईश्वर के कम्प्युटर में दुनिया के हर व्यक्ति का लेखा–जोखा है। जन्मो जन्मात्तर तक का डाटा है। जीवन मरण का डाटा है और पाप–पुण्य का स्टाक है जिसका वह पल भर में पता लगाकर पृथ्वी पर पैदा होने वाले इंसान का मृत्यु तक का बारीक हिसाब आसानी से रख लेता है। इसी कम्प्युटर के जरिये वह पल पल में जानकारी रखता है और हमारा हिसाब किताब कर देता है। उसके पास यह जादुई कम्प्युटर है जो न सिर्फ इंसान, बल्कि जीव जन्तु और पर्यावरण का हिसाब किताब भी वह रखता है। उसके वायरस खुद इंसान ही है.... वे इंसान जो ईश्वर के नियम कानून का बदलने की कोशिश करते हैं वे उसके कम्प्युटर में वायरस बनकर घुस जाते हैं। तब साफ्टवेअर के जरिये इन वायरसों को ईश्वर सबक देते रहते हैं।

'कसम' से जुड़ी 'कसम' की घटना ने तम्बाकू सचमुच छुडा दी...

बात लगभग 9 साल पहले की है। मैंने महू के पास कोदरिया गांव में आयोजित कैंसर निवारण आयोजन में अतिथि की हैसियत से उपस्थित होकर तम्बाकू न खाने की कसम खा ली थी। यह कसम भी महत्वपूर्ण थी जब मैंने मंच पर घोषणा की कि ''मैं अपनी पत्नी की कसम खाकर कहता हूं कि आज से तम्बाकू का सेवन नहीं करूंगा''। उस दिन से मैंने वास्तव में तम्बाकू का त्याग कर दिया था मगर मेरी पत्नी को न जाने क्यों विश्वास नहीं हो रहा था कि मैंने तम्बाकू छोड़ दी है। वह अक्सर मुझ पर शक करके कह उठती थी कि तुम तम्बाकू गुटका खा रहे हो। हर बार मैं कभी मुंह खोलकर, मीठी सुपारी, सौंप या चुइंगम दिखाकर विश्वास दिलाता था, मगर उसे विश्वास नहीं होता था कि मैंने तम्बाकू छोड़ दी है। बार बार शक को लेकर एक दिन मैंने गुस्से में ये सोंचकर कि जिसके लिये कसम खाकर तम्बाकू छोड़ी, उसी को ही विश्वास नहीं हो रहा है, मैंनें फिर से तम्बाकू गुटका खाना शुरू कर दिया। अफसोस तो हुआ कि मैंने कसम तोड़ दी। धीरे धीरे मैं पहले की तरह तम्बाकू खाने का आदी हो गया। पत्नी का अविश्वास और अटूट हो गया कि मैं तम्बाकू कभी नहीं छोड़ सकता।

इस घटना के कुछ साल बाद 25 दिसम्बर 2005 को इसी खाई 'कसम' ने एक नया और अनसोचा मोड़ ले लिया। हुआ यूं कि तात्कालीन कमाण्डेन्ट आर्मी वार कॉलेज ले. जन. मिलनसिंह की सास श्रीमती सुशीला अवस्थी द्वारा लिखी गई किताब ''सुधि की गठरी'' के विमोचन समारोह में मैं शरीक हुआ। लेखिका ने इस किताब में अपने पति कर्नल ब्रम्ह्यनंद अवस्थी 2 राजपूत रेजीमेंट की याद में ''यादों की गठरी'' छोटी–छोटी कहानियों के मार्फत गढ़ी थी। समारोह में इसी किताब में ''कसम'' शीर्षक की एक कहानी सच्ची घटना 1962 के भारत–चीन युद्ध के तारतम्य में इंगित कर लिखी गई थी जिसको मंच से उनकी पुत्री श्रीमती निहारिका नायडू ने पढ़कर सुनाया। सुनकर मेरे होंश उड़ गए। मुझे लगा कि ये कहानी तो मेरे इर्द–गिर्द होकर मेरे लिये सबक है....! लेखिका ने इस कहानी में बताया कि उसकी नई नई शादी हुई थी और उसके पति सेना के जिम्मेदार समय पाबंद अफसर थे जो रोज सुबह समय पर ऑफिस चले जाया करते थे। एक दिन उन्हें रोकने के लिये मैंने उनकी कमर का बेल्ट छुपा दिया। वे तैयार होकर उस बेल्ट को ढूंढने लगे। नहीं मिलने पर जब पत्नी (लेखिका) से पूछा तो उसने उनकी कसम खाते हुए कहा कि ''आपकी कसम मैंने नहीं देखा''। पत्नी के जवाब से संतुष्ट होकर वे बेल्ट पूरे घर में खोजने लगे। पति को ड्युटी जाने के लिये हठी और परेशान देखकर पत्नी ने

छुपाकर रखा बेल्ट उनके हाथ में लाकर दे दिया। ये देखकर कर्नल पति आग बबूला हो उठे कि ''तुमने मेरी कसम खाकर कहा था कि बेल्ट नहीं देखा, फिर तुमने ही बेल्ट छुपाया था..... और मेरी कसम झूठी खाई थी''...। गुस्से में उबलते हुए कर्नल ऑफिस चले गए। उसी दिन भारतीय सेना को खबर मिली कि चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। लेखिका के कर्नल पति को उनकी रेजीमेंन्ट सहित तत्काल युद्ध में भेजने के आदेश हुए। वे उसी दिन युद्ध के लिये रवाना हुए और बाद में अचानक सूचना मिली कि वे शहीद हो गए। लेखिका कहती है अपनी खाई झूठी कसम से व्यथित हुई कि ईश्वर उससे इतना नाराज हो गए कि सचमुच उन्होंने उसके पति का जीवन ही छीन लिया..! उस घटना से सबक लेकर लेखिका ने भविष्य में 'कसम' न खाने की 'कसम' खा ली।

इस कहानी को मंच से सुनकर मैं घबरा उठा। ये सोचकर कि मैंने भी तो अपनी पत्नी की कसम खाई थी कि ''तम्बाकू छोड़ दूंगा''..! और मैंने ही कसम तोड़ दी। मैंने उसी समय तत्काल अपनी जेब से तम्बाकू पाउच निकालकर जमीन पर पटक दिये, ईश्वर को याद कर मन ही मन में क्षमा याचना करते हुए पूर्व की खाई कसम को पुनः संकल्प के साथ पूरा करने का वचन दिया। उस दिन के बाद से मैंने सचमुच तम्बाकू का त्याग कर दिया। अब मुझे तम्बाकू की न तो याद आती है और न ही उसे खाने का मन ललचाता है। अब पत्नी ने भी टोकना बंद कर दिया है। इस दोबारा खाई या जिंदा की गई कसम को आज सात साल होने आ रहे हैं। हां, सादा गुटखा खाता रहा, मगर उसे भी अब त्याग दिया है।

किस्मत ने नहीं चाहा, मैं महू से बाहर रहूं

कुछ लोग मुझे आज भी कहते हैं कि तुम महू के लायक नहीं हो, दिल्ली–भोपाल में बैठो। कुछ इस बात को दिल से कहते थे तो कुछ ईर्ष्या के चलते। मैं हरेक की मनोभावना को ताड़ लेता हूं मगर मुस्कराकर ऐसे लोगों को माफ कर देता हूं जो ईर्ष्यावश कहते आए हैं। जो दिल से चाहते थे कि मैं तरक्की करूं, उनके लिये कहना चाहूंगा कि ऐसा नहीं है मैंने कभी प्रयास नहीं किया। सबसे पहले मैंने दैनिक भास्कर बाद में दैनिक लोकस्वामी इन्दौर में नगर प्रतिनिधि पद पर कार्य किया। 'सहारा' अखबार के लिये दिल्ली जाकर इन्टरव्यू दिया था। श्री (अब स्व.) कमलेश्वरजी ने मेरा इंटरव्यू लिया था। मैं सिलेक्ट हो गया था मगर मुझे जॉब लेटर नहीं मिल पाया था। एक माह तक इन्दौरी पत्रकार मुझे चयनित होने की बधाई देते रहे, मगर मैं जॉब लेटर नहीं मिलने के कारण परेशान था। एक माह बाद मैंने फोन लगाकर पूछा तो पता चला कि उन्होंने मझे जॉब पत्र 'लोकस्वामी' के पते पर भेज दिया था। लेकिन अब देर हो चुकी है मेरे नहीं पहुंचने पर पद भर लिया गया था। सुनकर मुझे

झटका लगा। आखिर लोकस्वामी भेजा पत्र कौन गायब कर गया? खैर मैं किसी को दोष नहीं देना चाहता। इसके अलावा मैंने नईदुनिया में डेस्क पर काम करने के लिए तमाम बार कोशिश की। वे मुझे प्रुफ रीडर के साथ भर्ती करना चाहते थे, जो मुझे पसंद नहीं था। मैं दिल्ली प्रेस का भी विवि प्रतिनिधि रहा और महू रहते हुए एक दर्जन राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में भी लेखन किया। 1981 में रंगमंडल, भारत भवन भोपाल में भी हिस्सा लिया, मगर चयन नहीं हो पाया। 1990 में फिल्मी दुनिया का सफर शुरू हुआ। एक फिल्म में काम करने के बाद मुझे पुनः मौका नहीं मिल पाया तो मैं निराश हो गया। 1995 में श्री प्रकाश जाजू के साथ दोबारा मुम्बई में फिल्म टीवी में भाग्य आजमाया। दो टीवी सीरियल 'सास बड़ी या बहू' और 'जी हारर शो' में काम किया। फिल्म 'गुनाहगार' में भी मौका मिला। मुम्बई में तीन साल रहने के बाद भी प्रगति संतोषजनक नहीं थी। इधर इन्दौर में हमारी फर्म मॉडर्न लॉण्ड्री का मैं भागीदार था और आज भी हूं उसकी जिम्मेदारी के चलते भी और तत्समय नवभारत प्रतिनिधि रहने के कारण भी बार बार महू इन्दौर के चक्कर लग रहे थे। फिल्म कलाकार श्री गिरजा शंकर मुझसे कहते थे कि काम करना है तो मुम्बई में टिककर रहना पड़ेगा, मगर मेरे निजी हालात मुझसे समझौता नहीं कर रहे थे, सो मुम्बई की फिल्मी दुनिया को मैं अंततः अलविदा कह आया।

सन् 2000 में विदेश जाने का अवसर मिला सैशिल्स आयलैन्ड में प्राले

द्वीप पर रहते हुए लिमोरिया रिसोट (फाईव स्टार होटल) में मुझे सुपरवाईजर की नौकरी मिली। मगर यहां भी काम करते समय अड़चने आई। मॉरीसश निवासी जॉन नामक मैनेजर से विवाद हुए और मैं इस्तीफा देकर लौट आया। चूंकि मैं पत्नी के बिहाप पर विदेश गया था इसलिये कहीं ओर नौकरी वर्क परमिट नहीं होने से मिल नहीं मिल पाई। इधर मेरे परिवार से लगातार भारत लौट आने के ऐसे पत्र मिल रहे थे कि मन बहुत दुःखने लगा था। इसलिये हम एक साल पूर्ण करने के बाद इंडिया वापस लौट आए। हांलाकि पत्नी ने जरूर वहां तीन साल काम किया मगर अकेले लम्बे समय तक काम करना उसे भी अच्छा नहीं लगा।

भारत आकर वापस किसी दैनिक अखबार में काम करने की कोशिश की। नवभारत से फिर ऑफर मिला मगर टांग अड़ाने वालों को मेरा फिर से आना नागवार गुजरा। इसलिये अपना अखबार शुरू करने का फैसला लिया। ईश्वर जो करते हैं ठीक करते हैं, अब 'प्रिय पाठक' के रूप में महू के पाठकों को इतना प्यार मिलता है कि कहीं ओर जाने का मन अब नहीं करता। फिर भी दरवाजे खुले हैं ईश्वर ने मौका

दिया तो फिर प्रयास करूंगा।

एक रियल झटका......

प्यार तुमने किया था, मैनें नहीं!

मैने प्रेम विवाह रचाया था, लेकिन मेरी पत्नी ने भी मुझसे प्यार करके शादी की होगी, यह सोचकर मैं कई साल तक मुगालते में रहा। उसने मुझसे कभी प्यार नहीं किया था, ये बात मुझे उसके मुंह से शादी के 25 साल बाद पता चली। जब एक दिन मेरी पत्नी ने मुझसे कहा कि ''प्यार क्या होता है मुझे नहीं मालूम था। मैं बहुत सीधी थी और तुमने मुझे आकर्षित कर लिया था। वास्तव मैं तुमसे प्यार नहीं करती थी।'' सुनकर मन को धक्का जरूर लगा था। बाद में जब मैंने गम्भीरता से मनन किया तो मुझे अहसास हुआ था कि दीवाना तो मैं ही बना था। शादी के लिये भावनाओं का प्रेशर भी मैंने बनाया था, फिर भला मैं दावे के साथ कैसे कह सकता हूं कि हमने प्रेम विवाह किया था। आज शादी के 28 साल हो रहे हैं। भले ही मेरा प्यार एक तरफा ही रहा हो, मगर उसे अनु ने बखूबी निभाया बल्कि मेरी आज वही पथ प्रदर्शक भी है कई मामलों में। आज वह मेरे दो जवान बच्चों की मां है जो उसे खूब प्यार करते हैं।

'लव मैरेज' करने वालों को एक संदेश

प्रेम कोई मामूली वस्तु नहीं है। और प्रेम का अंत शादी से हो यह भी जरूरी नहीं है। भारत में शादी के मायने बहुत पवित्र और दो शरीर का एक ऐसा गठबंधन है जो एक दूसरे के विश्वास और सहयोग के बल पर चलता है। इसलिये शादी के लिये प्रेम भी गम्भीरता लिये होना चाहिये। शादी का निर्णय बच्चों की तरह नहीं लेना चाहिये। शादी करने वालों को बेहतर जीवन के लिये मैं कुछ टिप्स संदेश देना चाहता हूं

1. एक दूसरे को पूर्ण रूप से समझने के बाद ही विवाह करें। अर्थात चंद मुलाकातों को ही पर्याप्त समझ कर आप शीघ्र विवाह न करें।

2. कोशिश करें कि आप अपनी जाति बिरादरी में ही पसंद खोजे। हांलाकि प्यार होने में यह सम्भव नहीं होता क्योंकि प्यार तो हो जाता है।

3. सिर्फ प्यार को ही विवाह का रूप दें यह ठीक नहीं। प्यार कई बार भावनाओं से भी हो जाता है। इसलिये प्यार के बाद शादी के बारे में आपस में बराबरी की सहमति होना आवश्यक है। अर्थात एक पक्षीय प्यार या एक पक्षीय विवाह का दवाब ठीक नहीं।

4. प्रेम विवाह के लिये परिवार में सर्वसम्मति न हो तो पृथक रहने और गुजर बसर करने के लिये पहले से ही तैयारी करें मगर परिवार से दूरी न बढ़ाएं, क्योंकि रिश्ते मिटते नहीं है।

5. कोशिश करें जीवन साथी बराबरी का हो, अर्थात दोनों में से किसी एक का खासकर युवक का कमाऊं होना नितांत जरूरी है। बेरोजगारी की स्थिति में प्रेमविवाह सफल नहीं हो पाते। शिक्षा, स्तर और पारिवारिक स्तर में भिन्नता होने से आपसी कलह बढ़ती है।

6. विवाह उपरांत अपने बच्चों को बचपन से ही दिशा दें और बराबरी का प्यार दें।

7. शादी के बाद आपस में छींटा कशी, ऊंच–नीच या पछतावा करने से बचे। ये अलगाव पैदा करने की निशानी है।

8. पढ़ी लिखी और होनहार लड़की को वर चुनने में सावधानी बरतनी चाहिये। खासकर वो अपने कैरियर का ध्यान रखकर चुनाव करे। प्यार में अंधे होकर वह बेरोजगार या बिना ठौर ठीकाने वाले युवक के पल्ले न पड़े। क्योंकि वैवाहिक जीवन कई वर्षों का साथ होता है। इसी प्रकार लड़के को चाहिये कि वो फैशन, सुन्दरता, और तड़क भड़क में आकर लड़की का चयन न करें। पारिवारिक गुण सम्पन्न लड़की ही ताजिन्दगी का सहारा बनती है।

9. जीवन जीते समय हमेशा याद रखें कि आपने प्यार करके विवाह किया है। इसलिये हर मोड़ पर परिस्थितियों का सामना करते समय प्यार को हमेशा प्राथमिकता दें।

मेरी लिखी पसंदीदा कविता

बेरोजगारी खाट....

मैं लेटा हूं बेरोजगारी की खाट पर
कभी कभी मुझे नींद भी आती है
नींद में मखमली बिस्तर पर
कुलाचे मारता नजर आता हूं
आस पास सुंदरियां जाम थामे होती हैं
मैं वैभव और विलासिता से भरपूर
स्वयं को पाता हूं
आंनद, उल्लास और तृप्तता का
संसार पाकर मैं खुशी से
फूला नहीं समाता हूं

अचानक...
मेरी नींद खुल–खुल सी जाती है
तब–तब मैं घबरा सा जाता हूं
मेरे सपने टूटते बिखरते से नजर आते है
स्वर्ग की अनुभूति नरक दिखाई देती है
मैं सोना चाहता हूं
मगर सो नहीं पाता हूं
क्योंकि इस सुनहरे सपने में
कभी कभी मेरी खाट
नजर आ जाती है
और मैं वास्तविकता को देख
कांप सा जाता हूँ......
कांप सा जाता हूं....।

जीवन में किससे क्या सीखा

यह हर इंसान को याद रखना चाहिये कि वह जिन्दगी में किससे क्या सीख रहा है। अच्छी और उपयोगी सीख देने वाले को सदा याद रखना चाहिये और बुरी सीख या संगत वाले से जितनी जल्दी हो सके, उससे दूर रहने की कोशिश करना चाहिये। मैंने अनुभव हासिल करने के लिये हर उस व्यक्ति की सीख सदा याद रखी जिसने मेरे जीवन को सदा बदलने और दीर्घायु होने का रास्ता दिखाया।

मां से सीखा हंसते रहो, काम करते रहो।

पिता से सीखी ईमानदारी और त्याग, कर्मठता और सीखा ज्यादा संतान नहीं रखने का सबक।

परिवार से दूर रहकर सीखा अपनत्व का सबक।

बड़े भाई स्व. राजेन्द्र सोलंकी ने सिखाई सिलाई और वे कहते थे कि बहुमुखी प्रतिभा वाला गुणी हो सकता है, लेकिन उसके जीवन में एक लक्ष्य तय कर पाना मुश्किल होता है)।

बड़े भाई स्व. चंद्रसेन सोलंकी ने दिया अच्छी लेखनी होने का वरदान।

पत्नी ने सिखाया आत्मविश्वास और मेनर्स।

बच्चों ने सिखाया उम्र का अहसास।

कॉलेज लाईफ के पूर्वाद्ध में मैं जीवन अर्थ से भटका तो इसी कॉलेज लाइफ के उत्तर्राद्ध में राष्ट्रीय सेवा योजना ने सिखाई समाजसेवा और खोले पत्रकारिता के द्वार।

मंच पर माईक का भय दूर किया प्रो. श्रीवास्तव ने।

भीतर की आग ने सिखाई पत्रकारिता।

डॉ सुरेश यादव ने आकाशवाणी में रहते सिखाई अपनी आवाज की कला को पहचानना।

योगेश यादव के साथ रहकर सीखा मंच से प्रभावी बोलने का स्टाईल।

पत्रकारिता की भूख ने सिखाया कर्मवीर बनने का सबक।

मंच की प्यास ने दी अभिनय की गहराई ।

गैरों ने सिखाया दोस्ती का महत्व, और बढ़ाया मेरा आत्मविश्वास।

फेसबुक ने सिखाया बगैर मिले, देखे दोस्ती करने का अनुभव।

'प्रिय पाठक' ने सिखाया पाठकों के के प्यार का अहसास।

क्या खोया

–मां और दो भाइयों को खोने का दर्द।

–घर से अलग होने का दर्द।

–दिल्ली में खोया सहारा अखबार में नौकरी का अवसर।

–सैशिल्स आयलैण्ड में हठधर्मी से खोई नौकरी।

–मित्र अहसास को किशोर खण्डेलवाल और राबर्ट भारती के रूप में खोया।

–सही समय पर आगे बढ़ने वाली उम्र को खोया।

क्या पाया

–हर कदम पर ईश्वर का आशीर्वाद।

–बहनों का अपनत्व, पिता का आशीर्वाद।

–बेहतर पत्नी, मुझे चाहने वाले बच्चे।

–स्नेहियों का प्यार और मार्गदर्शन।

–अभिनय और पत्रकारिता की लोकप्रियता।

–तम्बाकू सेवन छोड़ने पर पत्नी का विश्वास।

–अनुभव से व्यक्तित्व का निखार।

–मुझ पर हुए प्राणघातक हमला और पुत्र चैतन्य के खाई में गिर जाने के बाद जीवन का मोल।

बहुमुखी प्रतिभा

शोहरत और दिशाहीनता

मुझे सब कहते हैं मैं बहुमुखी प्रतिभा का धनी हूं.... मैं हूं भी। अपनी इन प्रतिभाओं को पत्रकारिता, फोटोग्राफी, लेखन, गायकी, कविकार, चित्रकार, कार्टूननिस्ट, खेल, आदि में पाता हूं। सभी विधाओं में कहीं न कहीं स्वयं को पारगंत पाता हूं। इन विधाओं में मुझे प्रशंसा भी मिली है। लेकिन उम्र के 21 साल बीत जाने तक तो मैं कुछ भी नहीं था। सिर्फ मन में तमन्नाएं थी जो बचपन से उबल रही थी। 1977–78 का कॉलेज पीरियड मेरे लिये मेरी प्रतिभा के द्वार खोलता नजर आया। जब एनएसएस सेवा में रहते हुए मैंने हस्तलिखित समाचार पत्र ''एनएसएस समाचार'' के प्रकाशन से ख्याती पाई और और छात्रसंघ चुनाव में मैं सचिव पद पर आसित हुआ। इसी साल से मैंने पहली बार रंगमंच के लिये कदम रखा। भोलाराम का जीव और पराठे वाली गली नाटक से मेरी पहचान बनी। बाद में रंगमंच के साथ रेडियो का सिलसिला लम्बा चला। इस बीच चित्रकारी, पत्रकारिता, लेखन, फोटोग्राफी, कविता पाठ भी चलता रहा। पत्रकारिता के साथ साथ रंगमंच, रेडियो और फिल्मों व टीवी सीरियल में भी अभिनय चलता रहा। कुल मिलाकर अनेक विधाओं में सफर आज भी जारी रहा।

दीपक जाजू के मित्र मंडल में गायक के रूप में बरसों बाद फिर से एन्ट्री 2009 में हुई जिसमें श्री हेमन्त ठक्कर ने भी होंसला बढ़ाया। बीते सालों में लगभग 20–25 आयोजनों में गीत गाने से अब मैं गायक कलाकार के रूप में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगा हूं। बहुमुखी प्रतिभा ने मुझे खूब शोहरत दिलाई मगर वास्तव में सही दिशा नहीं दी। बहुत पहले मेरे दिवंगत भाई श्री राजेन्द्र दादाजी ने कहा था कि ''बहुमुखी प्रतिभा का धनी होना अच्छी बात है मगर यह जीवन में सही दिशा नहीं देती है''। मेरे साथ यही हुआ। कई बार मेरे सामने यह समस्या आई कि बिजनेस करूं, पत्रकारिता करूं या रंगमंच करूं। आज भी मुझे दिक्कत आती है मगर मैं आज लॉण्ड्री बिजनेस के अलावा सिर्फ पत्रकारिता पर प्रमुख ध्यान देता हूं। मौका पाकर अपनी अन्य प्रतिभाओं को उकारने का मौका भी आजमा लेता हूं। शायद किस्मत में ऐसा ही लिखा हो।

फेसबुक ने बनाया फिर डेली रिपोर्टर

कम्प्युटर करना मेरे लिये स्वप्न के समान था। पत्नि ने मुझे कलम घिसते देख कम्प्युटर गिफ्ट देकर कहा कि बचपन की टायपिंग को याद करो और अब न्यूज

इसी पर लिखो। कम्प्युटर पाकर आधुनिक सुविधाओं में प्रवेश किया। फिर बच्चों ने फेसबुक पर एकाउन्ट बना दिया। काला अक्षर भैंस के बराबर की तरह मैं फेसबुक पर कुछ महिने अंजान बनकर देखता रहा मगर फिर उसकी उपयोगिता समझ आते ही मैं फेसबुक पर भी सक्रिय हो गया आज फेसबुक पर मेरे 1600 मित्र हैं और चाहने वालों ने मुझे नाना प्रकार के 70 से अधिक ग्रुप्स से जोड़ रखा है जिनके कारण मेरे डाले गए समाचारों को फेसबुक के हजारों–लाखों लोग दुनिया के कोने कोने में बैठकर भी देख लेते हैं। इन दिनों अपने अखबार के साथ साथ मैं फेसबुक पर भी रिपोर्टिंग कर रहा हूं साथ ही याहू ई–मेल के जरिये अपने अखबार को विदेश मैं बैठे सौ से अधिक मित्रों को भी पीडीएफ भेजकर उन्हें महू के करीब ला खड़ा कर रहा हूं। कई लोग कहते रहे कि मैं पुनः डेली रिपोर्टर की तरह कोई दैनिक अखबार ज्वाइन करूं मगर फेसबुक ने मेरी यह कमी भी पूरी कर मुझे फिर से डेली रिपोर्टर भी बना डाला है।

फेसबुक पर हुई मानहानि वाली दोस्ती

पत्रकारिता में यदि आप जरूरत से ज्यादा सक्रिय रहो तो कई बार मानहानि के न्यायालयीन दौर से भी गुजरना पड़ता है। 'दैनिक भास्कर' में काम करते समय मुझ पर पहली बार मानहानि का प्रकरण महू न्यायालय में लगाया गया था (वैसे आज की तारिख में चार प्रकरण चल रहे हैं)। ये प्रकरण तात्कालीन आरपीएफ इंस्पेक्टर श्री अशोक सक्सेना द्वारा लगाया गया था। मैंने कुछ लोगों द्वारा बताए जाने पर श्री सक्सेना के खिलाफ लाखों रूपए की रेलवे शेड इलाके में कोयला चूरी की चोरी का आरोप लगाकर रिपोर्ट छाप दी थी। श्री सक्सेना ने जब मुझे खबर भिजवाई कि प्रकाशित खबर झूठी है इसलिये खण्डन या मेरी तरफ से स्पष्टीकरण छाप दें, तो मुझे नागवार गुजरा। परेशान होकर श्री सक्सेना ने मेरे खिलाफ मानहानि प्रकरण लगा दिया। उस समय महू के एक विशेष स्नेही समाचार पत्र ने इस प्रकरण को चटखारे लेकर छापा और चाहने वालों ने दैनिक भास्कर को मेरे खिलाफ बहुत भड़काया। लेकिन प्रकरण न्यायालय में चलता रहा। एक साल लगभग हो जाने के बाद जब न्यायालय ने भास्कर के मालिक, सम्पादक के खिलाफ भी सम्मन भेजे तो वे परेशान हो गए और उन्होंने चुपचाप श्री सक्सेना को अपने कार्यालय इंदौर बुलवा लिया। जब अगले दिन भास्कर में इसी प्रकरण संबंधी स्पष्टीकरण प्रकाशित हुआ तो मेरे अस्तित्व को भारी धक्का पहुंचा। मैने तभी से मन ही मन भास्कर छोड़ने का मन बना लिया था। बाद में फिर पुनः गरिमा पर धब्बा लगने से मैंने चिढ़कर भास्कर छोड़ दिया था। हांलाकि बाद में अनुभव मिलते रहने पर मुझे अहसास हुआ कि पत्रकारिता में मुझे एक संवाददाता बतौर अपनी सीमाएं भी याद रखनी चाहिये थी। खैर....मैं बता

रहा था उक्त प्रकरण के बारे में। श्री सक्सेना ने अपने फेवर में स्पष्टीकरण छपने के बाद मानहानि प्रकरण उठा लिया और उसके बाद मेरी उनसे कभी मुलाकात नहीं हुई।

इस घटना के कोई 26 साल बाद फेसबुक पर जब श्री अशोक सक्सेना ने अचानक मुझे मेरे एकाउन्ट पर मैसेज दिया कि ''आओ हम दोस्त बन जाएं'', तो मुझे आश्चर्य लगा कि ये शख्स कौन है और क्यों दोस्ती के लिये आमंत्रण दे रहा है। दिमाग पर जोर देते ही पुरानी यादें ताजा हो गई और मैंने सहर्ष श्री सक्सेना की फ्रेण्ड रिक्वेस्ट एकसेप्ट करते हुए उनसे फोन पर बात कर नई दोस्ती को सलाम किया। उन्होंने भी कहा कि पुरानी बातें छोड़कर हमें नई दोस्ती की मिसाल को कायम करना चाहिये।

उस ज्योतिष ने ठीक ही कहा था

उस समय मैं दैनिक भास्कर से महू प्रतिनिधि था। एक दिन वरिष्ठ अभिभाषक श्री रमेशचंद्र माहेश्वरी की कार से लिफ्ट लेकर इन्दौर के लिये रवाना हुआ। राऊ से उनके परिचित एक सज्जन और कार में बैठे जिनके बारे में श्री माहेश्वरी ने बताया कि ये हस्तविशेषज्ञ भी हैं। मैंने उत्सुकतावश हाथ उनके आगे कर दिया। उन्होंने ध्यान से हाथ देखा और बोले तुम कर्म करते चलो, तुम्हारे रास्ते अपने आप बनेंगे। तुम चाहकर भी भविष्य के बारे में सोच नहीं पाओगे, केवल कर्म ही तुम्हारा रास्ता तय करते रहेंगे। शत्रु तुम पर कभी विजयी नहीं होगा, चाहे वो कितनी भी कोशिश कर ले। आज सोचता हूं कि उस ज्योतिषि की बातों में वाकई दम रहा। मुझ पर 1996 में जानलेवा हमला हुआ। पीठ में गुप्ती घोंपने के बाद भी मैं बच गया। बचपन में स्टेडियम में मची भगदड़ में भी मैं बाल बाल बचा। शत्रु मेरे खिलाफ आज भी षड़यंत्र रचते रहते है, मेरे खिलाफ न्यायालय प्रकरण चलाते हैं मगर उनके इरादों पर ईश्वर हमेशा पानी फेरते हैं। चाहने वालों की दुवाएं हमेशा साथ होती है। मैं किसी से भी शत्रुता नहीं रखना चाहता, पत्रकारिता धर्म निभाते हुए अक्सर वे लोग मुझे अपना शत्रु बना लेते हैं जिनके स्वार्थ पूरे नहीं होते या जो अपने स्वार्थ के लिये निर्दोषों का गला घोंटते हैं। ऐसे लोगों को नंगा करने में या उनको आइना दिखाने में मैं आज भी पीछे नहीं हटता। उस ज्योतिष के अनुसार मैं वास्तव में आज भी चाह कर भी भविष्य की कोई प्लानिंग नहीं कर पाता, हां, रास्ते मेरे सचमुच अपने आप खुलते जाते हैं।

लॉण्ड्री का 60 वां साल....लम्बी और चमत्कारी साझेदारी

इन्दौर में सन् 1952 से मेरे पिता अपने तीन दोस्तों के साथ साझेदार बने थे और चारों ने मिलकर महात्मा गांधी रोड पर रामपुरावाला बिल्डिंग में किरायेदारी में मॉडर्न

लाण्ड्री नाम से साझेदारी में व्यावसाय शुरू किया। आज तक यह लॉण्ड्री साझेदारी में चल रही है। चारों साझेदारों ने अपने अपने हिस्से में परिवाजन को लेकर कई भागीदार जोड़े, हटाए...मगर साझेदारी चलती रही। एक साझेदार ने गुण्डागर्दी करके दो साझेदारों को हटाया भी। गुण्डों का मुकाबला करके साझेदारी पूर्ववत कायम रही। मकान मालिक ने दुकान को भागीदारी फर्म नहीं मानते हुए धोखे से खाली करने का प्रकरण लगाया है। फिर भी साझेदारी चल रही है। वो केस पर केस लगा रहा है फिर भी साझेदारी चल रही है। हमारा एक साझेदार तो चार साल से बड़ौदा में है फिर भी साझेदारी चल रही है। इसके पीछे कारण है क्योंकि यह मेहनत से सींचा हुआ पौधा है जिसके वृक्ष की छाया में सब पल रहे हैं इसलिये इसकी मजबूत नींव को जड़ से कोई हिला नहीं सकता, इसे चमत्कार नहीं तो और क्या कहेंगे कि 40 कामगारों तक जा पहुंची यह लॉण्ड्री आज मात्र 5 कर्मचारियों के रहने के बाद भी उसी मान– सम्मान से चल रही है। भले ही उसकी आय का प्रतिशत बहुत घट गया हो, मगर वह आज भी कायम है और 50 सालों से यहां कायम है बूढ़ा हो चुका रफूगर कायम अली भी। चारों वरिष्ठ भागीदारों में सिर्फ मेरे पिता ही बचे हैं। बाकी तीन श्री हरिश्चंद्र बुन्देला, श्री जियालाल कनोजिया और श्री कुंदनलाल परदेशी ईश्वर को प्यारे हो गए। मेरे पिता तो कुछ साल पहले तक लॉण्ड्री पर जाने की निरंतर इच्छा रखते रहे, मगर मैंने मां के अत्याधिक बीमार रहते हुए उनसे आखरी समय में सेवा की अपील कडुवे शब्दों में कर दी थी, उस दिन से उन्होंने लॉण्ड्री जाना ही बंद कर दिया। मां गुजर गई अब वे अकेले हो गए हैं, लेकिन अब शरीर भी उनका साथ नहीं दे रहा है फिर भी लॉण्ड्री उनके दिलों–दिमाग पर आज भी काबिज है। अब वे दोनों छोटे भाईयों के बच्चों के दादाजी रह गए हैं। दिन गुजर रहे हैं उनके इसी तरह। लॉण्ड्री भी चल रही है अपनी जगह।

मनोरजंक मुगालता

कभी कभी मुगालते की चोट बड़ी गहरी हो जाती है मेरे साथ मुगालते भी बड़े मनोरजंक रहे। उन दिनों जब हम सैशिल्स आयलैन्ड पर पहुंचे तो पत्नी ने बताया कि यहां पर लोग बहुत ही खुले दिल के होते हैं। उसके कहने का आशय मैं समझ गया कि मुझे अपने चंचल दिल को सम्हाल कर रखना होगा। यहां पर गौरे और काले सभी तरह के लोग थे और बेहद सुंदर और गठीले शरीर के भी। कम कपड़े पहनने का रिवाज स्त्री पुरूष दोनों में था। हमें समुद्र से कुछ फासले पर दो मंजिला मकान रहने के लिये दिखाया गया, जो बहुत सुंदर था। हमें दूसरी मंजिल पर रहने को कहा गया। जबकि नीचे मकान मालिक का डिपार्टमेन्टल स्टोर था –सुपर वैल्यु। दूसरे दिन से ही पत्नी शासकीय स्कूल में नौकरी करने चली गई। वापस आकर

बताया कि 9 वीं 10 वीं लड़कियों को जब पता चला कि हमारा बेटा भी स्कूल ज्वाइन करने आने वाला है तो लड़कियां बड़ी खुश हो रही थी। यह जानकर मैं हैरत में रह गया कि मेरा बेटा यहां 10 वीं की पढ़ाई करेगा या लड़कियों के चक्कर में पड़ जाएगा.. खैर। अगले दिन मैंने एक बेहद खूबसूरत लड़की को देखा जो सामने से आते हुए मुझे देखकर मुस्करा रही थी। मैंने सोचा हो सकता है हम नए आये हैं, इसलिये मुस्करा रही हो। मगर वह तो फिर बाद में दो तीन बार आई और हर बार मुस्कराते हुए देखने लगी। मेरी समझ में नहीं आया....कहीं इतने खुले दिल के तो नहीं हैं यहां के लोग कि उम्र से भी कोई वास्ता न हो। धीरे धीरे मैं मुगालते में आने लगा क्योंकि वह दो तीन दिन तक ऐसे ही मुस्कराते देखती रही। मुझसे रहा नहीं गया और मैंने अपनी पत्नी को सारी बात बता दी। उस दिन वो लड़की फिर दूर से आती दिखाई देने लगी तो मैंने तुरन्त वाइफ को चुपके से दिखाया कि ये वहीं लड़की है। उसे देखकर वाईफ जोर से हंसी और बोली वो विशू (बेटा करन) की क्लास में है और उससे दोस्ती करने के चक्कर में आपको मुस्करा रही है ताकि अपने घर आ जा सके। फिर वाईफ ने उसे आवाज दी– वैरोनिका....! सुनते ही वह खिलखिलाई और घर में आ गई। बात करते समय उसकी नजरें बेटे को ढूंढ रही थी तब मेरे मुगालते छंटना स्वाभाविक थे।

किन्नर हत्याकांड पर नाटक नहीं खेल पाया

महू में एक किन्नर हत्या कांड 2011 में हुआ। चश्मदीद गवाह के अनुसार महू के संभ्रान्त परिवार के चार लोग इसकी हत्या के घेरे में आए। पुलिस ने पूछताछ की लेकिन राजनीतिक दवाब से पुलिस इस केस में खामोश हो गई। अब पुलिस केवल एक आरोपी के पीछे नार्को टेस्ट कराने का स्वांग खेल रही है ताकि बाकी आरोपी परदे के पीछे रह जाएं। मैंने इस हत्याकांड पर लगातार कलम चलाई। कुछ बड़े अखबार, पुलिस अधिकारी और बड़े लोगों के खामोश रहने के चलते मैंने इस सम्पूर्ण घटना पर एक व्यंग्य नाटक खेलने का निर्णय लिया। इस नाटक को मैंने लिखकर कम्पलीट भी कर लिया मगर पत्नी ने अंतिम समय में कुछ प्रश्न पूछ लिये और मैंने न चाहकर भी अपना निर्णय बदल लिया। पत्नी के प्रश्न थे किन्नर जिस समाज का था, वो समाज तो चुप है?, किन्नर के परिजन खुलकर मैदान में आना नहीं चाहते, राजनीतिक दल खामोश हैं कई अखबार इस मामले में खामोशी ओढ़े हैं, तो आप अकेले 'अन्ना हजारे' क्यों बनना चाहते हैं? आप अपनी कलम से लिखते रहिये, लेकिन नाटक खेलकर यह क्यों प्रदर्शित करना चाहते हैं कि आपका विशेष लगाव है, हो सकता है कि लोग आपका इसमें स्वार्थ देखें? मेरी पत्नी कभी–कभी उचित समय पर बेहतर राय देती है तो मैं सोच में पड़ जाता हूं। मुझे लगा कि यह नाटक

तब खेलना चाहिये जब जनाक्रोश हत्या के खिलाफ हो या संबंधित समाज मे तों कोई तो चेतना जागे, हांलाकि इसकी उम्मीद कम है। मुझे नाटक न खेलने का हमेशा मलाल रहेगा।

सिम्बा प्रकट हुआ और कालू जुदा...

मोहल्ले में जोजी को काले कुत्ते पालने का शौक रहा है। चार साल पहले एक काला पिल्ला उसने छुटपन से पाला। मैं उसे देखने गया तो वह मुझ पर व्यौं व्यौ करके चिल्ला पड़ा। मैंने आंख दिखाई वह सहम गया। ऐसा रोज होने लगा, वह देखकर मुझ पर गुर्राता और मैं उसे डरा देता। मैं ऐसा करते हुए यह भूल गया कि एक दिन जब वह बड़ा हो जाएगा तो क्या मुझसे डरेगा? वही हुआ कुछ ही महिनों में जब कालू आकार लेना लगा तो वह मुझ पर दुश्मन की तरह अटैक भी करने लगा। अब उसने मुझसे डरना भी छोड़ दिया। मेरा रोज का आना जाना और कालू का रास्ता रोकना, पीछे पड़ना मेरे लिये गले की हड्डी बनने लगा। ऐसे में इज्जत का फालूदा कब बन जाए यह डर सताने लगा। इधर जोजी की पालतू जंगली कुतिया ने बच्चे दे दिये, एक पिल्ला मेरा बेटा किशू घर ले आया। मैंने मना किया कि यह जंगली है और ये घर में रहकर नहीं पलते। मगर वह माना नहीं, कहने लगा पापा मैं रात दिन इसका ख्याल रखूंगा। नाम उसने सिम्बा रखा। दो रात किशू उसके लिये जागा भी, फिर मुझे लगा कि इसे पालना चाहिये और तब से मैं उसे पालने लगा। सफेद काले रंग का सिम्बा बहुत जल्द मोहल्ले में चर्चित होने लगा। हमारी सफेद मारूति कार पर वह बैठने लगा। पास के कर्नल सरूपजी ने मना भी किया इसे कार पर न बैठाए, आदत पड़ जाएगी। मगर सिम्बा से जुड़े लगाव ने इसकी चिंता नहीं करवाईं। इधर जोजी का कुत्ता कालू के अटैक बढ़ते गए, एक दिन उसने मुझे मोटरबाईक से भी गिरा दिया। इस बीच छावनी परिषद के सफाई विभाग को इसकी भनक लग गई, उन्होंने दूसरे आवारा कुत्तों के साथ कालू को भी जहर की टिकिया डाल दी। चंद मिनटों में कालू तड़पकर मौत को प्यारा हो गया, लेकिन कालू की मौत से मुझे भीतर आघात पहुंचा। मैं सोचने लगा कि यदि उसे मैं बचपन से बेवजह नहीं डराता तो शायद उससे मुझे कभी खौफ नहीं होता। कालू के मरने का दुख जोजी के परिवार को भी था। मैंने तय किया कि मैं सिम्बा के रूप में कालू को देखूंगा और कालू की आत्मा को शांति दूंगा। तबसे मैं सिम्बा का ख्याल रखता हूं। उसे नहलाना, खाना देना अब मेरे हिस्से की दिनचर्या बन गए हैं।

ईश्वरीय चमत्कार....

बारीश आकर जब थम गई

20 अप्रेल 2012 मेरी पत्नी द्वारा संचालित संस्कृति नृत्य एकेडमी का नृत्य प्रोग्राम होने वाला था। पिछले तीन दिनों से गर्मी की उमस बादलों की जमघट से बढ़ती जा रही थी। मेरी तीसरी ऑख इशारा कर रही थी कि कहीं 20 को पानी न बरस जाए। छावनी परिषद के तरूछाया मुक्ताकाश मंच में आयोजन होना था। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और दबंग दुनिया के सम्पादक कीर्ति राणा सहित बोर्ड उपाध्यक्ष कैलाशदत्त पाण्डे और सीईओ आलोक गुप्ता प्रमुख अतिथियों में शुमार थे। आयोजन 20 अप्रैल 2012 को ठीक समय शुरू हुआ। अतिथियों ने अपना उद्‌बोधन दिया और आयोजन की शुरूआत नृत्यांगनाओं ने गणेश वंदना से शुरू की। जोरदार नृत्य स्तुति से दर्शक जड़वत हो गए अचानक पानी की बौछार शुरू हो गई मगर नृत्य जारी रहा। नृत्य के समाप्त होते ही तेज पानी शुरू हो गया। खचाखच भरे दर्शक पानी से बचने के लिये इधर उधर वृक्षों की ओट लेने लगे। मंच पर भी हड़कम्प मच गया। इतने अच्छे आयोजन की शुरूआत होने के बाद पानी का आ जाना दर्शकों को बहुत अखर रहा था। इसलिये दर्शक भी वृक्ष की ओट में जमे रहे। मैं और मेरी पत्नी के चेहरे पर ये विश्वास था कि मेहनत से बच्चों ने कार्यक्रम तैयार किया गया है इसलिये वे निराश नहीं होंगे और पानी जरूर थमेगा। आखिर चमत्कार हुआ, पानी थम गया और मौसम खुशगवार हो गया। दर्शक सीटों पर लौट आए। कार्यक्रम पहले की तरह शुरू हो गया। उसके बाद तो फिर रात 12 बजे तक झमाझम नृत्य होते रहे, गीतों की प्रस्तुतियां भी हुई। इस तरह आयोजन की सफलता ने डंका बजाकर ईश्वरीय आशीर्वाद से सब कुछ सम्भव कर दिखाया।

जियो तो बिंदास जियो

आने वाला समय नई पीढ़ी के लिये जोखिमभरा

ब्राम्हाण में पृथ्वी एक बारीक दाने के बराबर है और हम पृथ्वी पर बहुत ही सूक्ष्म कण के बराबर, जो दिखाई भी न दें। यहां इंसान की हस्ती उसके ईरादों, प्रतिभा, बुद्धि और आत्मविश्वास से इतनी विशाल है कि वह ब्राम्हाण को भी नापने का इरादा रखता है तो कहीं इंसान की हस्ती इतनी सस्ती और मच्छर के माफिक है कि वह दुनिया में कब आकर कब चला जाए, पता ही नहीं चलता। पृथ्वी करोड़ों/अरबों सालों से हैं और प्रत्येक इंसान की जिन्दगी ज्यादा से ज्यादा मात्र एक शताब्दी के बराबर होती है। याने हर सौ साल बाद एक नई इंसानी दुनिया जन्म लेती है। इसलिये मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिलता है। मैं कहना चाहता हूं आप सबसे कि ''जियो तो बिंदास जियो'', हो सकता है आपके सद्कर्मो से आपको हर शताब्दी में जीने की मौज मस्ती ईश्वर द्वारा बार बार मिले। ऐसी जिन्दगी जीने से क्या फायदा जो अर्थहीन हो, कर्महीन हो, अस्तित्वहीन हो।

मैं नई पीढ़ी को देखकर सोचता हूं कि यह जितनी तेज तर्रार और बुद्धिमत्ता है वहीं भारतीय संस्कार में बहुत पीछे भी है। पृथ्वी पर बढ़ रहे खतरों से ये अंजान और बेफिक्र भी है। मैं समझता हूं कि आने वाली पीढ़ी का जीवन उतना नहीं होगा, जितना हम और आप आज में जी रहे हैं। तेज संगीत, तेज भागम भाग, भारी प्रतिस्पर्धा, पैसा कमाने की लालसा, बढ़ती आबादी, मिलावटी व दूषित खान–पान, और पर्यावरण खतरों के बीच यह पीढ़ी हर पल खतरों से जूझ रही है। मगर फिर भी ये पीढ़ी भी अपने आप में मस्त है, शायद यह जानते हुए कि कल किसने देखा है।

जीवन की अंतिम इच्छा

'' अभी हिम्मत नहीं हारी है, ईश्वर की इच्छा होगी तो उम्र लम्बी देगा। फिर अंतिम इच्छा क्या सोचना, जो होगा भाग्य में मंजूर होगा। कर्म करते रहेंगे, आखरी दम तक। ईश्वर न करे कभी हमसे कोई अपना, स्नेही और आम परेशान रहे। मैं अपनी लेखनी से आज भी सत्य और निष्पक्ष लिखने का आदी हूं मगर जाने अनजाने में किसी का दिल दुःखा हो तो ह्रदय से क्षमा भी मांगना चाहूंगा। दोस्ती का हाथ मेरा हमेशा आगे रहता है, दुश्मन बनाना मेरी नियती नहीं।''

चलते—चलते

बातें बहुत हैं कहने को, मगर कुछ बातें जीवन को बचाए रखने के लिये हजम भी करना पड़ती है। यह जीवन जीने की मजबूरी होती हैं। हर बातें ऐसी नहीं होती हैं जो किताब के पन्नों की तरह ओपन की जा सके। मेरी किताब पूरी तरह से मेरी आत्मकथा नहीं है, चाहकर भी मैं बहुत सी बातें नहीं लिख पाया, ये मेरी नहीं जीवन जीने की मजबूरी है। ये मजबूरी भी मेरी अकेले की नहीं, समाज में जीने की है, इसलिये ऐसी मजबूरी हर किसी के साथ होती है। मैं इस दुनिया में अकेला तो आया हूं और जाना भी अकेले ही है...... मगर मैंने जहां जन्म लिया, जहां मैं पला बढ़ा हुआ, जहां मैंने जीवन साथी चुना, जहां मैं बच्चों के साथ रहा, जहां मैं दोस्तों, स्नेहियों, सगे संबंधियों के बीच रहा, समाज में रहा, कर्म में रहा, इसलिये उन पलों को, उनका सानिध्य, वर्चस्व भी याद रखना पड़ता है। इनमें से कुछ पल ऐसे भी होते हैं जिनमें खामोश रहना ही पड़ता है, इन्हे कुरेदने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये, क्योंकि इससे किसी का दर्द हल्का नहीं होता, बढ़ता ही है। अच्छी बातों में खुशी जिस बात से बढ़े वो कोई बात छुपाना नहीं चाहिये, क्योंकि यह जीवन की सीख भी होती है जिसका लाभ बांटा जाना चाहिये। जीवन को तनाव में नहीं, मुस्कराते और हंसते जीना चाहिये। तनाव किसी चीज का हल नहीं है। जीवन लोचदार होना चाहिये, कभी नरम, कभी गरम होना चाहिये। लेकिन जो भी हो, बिंदास होना चाहिये। इस पुस्तक के प्रकाशन के पीछे मेरा यही उद्‌देश्य है।

प्रकाशक
साप्ताहिक ''प्रिय पाठक''
71, माल रोड, महू, मध्यप्रदेश से प्रकाशित

अतीत के झरोखे...

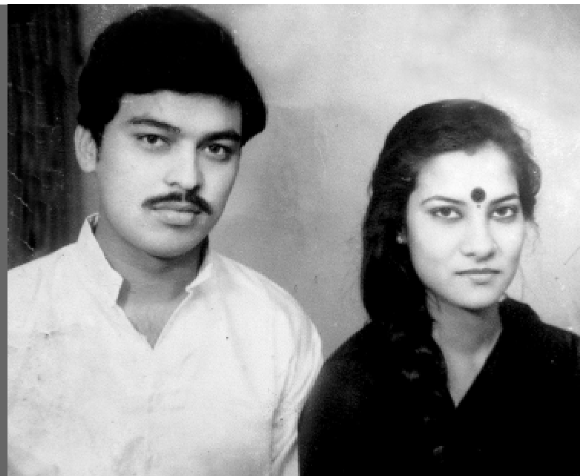

पुस्तक लेखक दिनेश सोलंकी और पत्नी श्रीमति अनुराधा सोलंकी का विवाह 1984 से हुआ तब से हम साथ - साथ हैं।

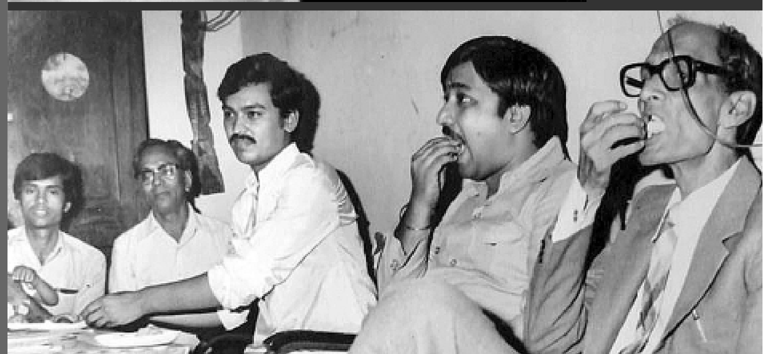

जुलाई 1984 महू में दैनिक भास्कर का कार्यालय मेरे घर पर खुला। भास्कर के श्री मनमोहन अग्रवाल और श्रीराम श्रीवास्तव अतिथि बनकर पहुंचे।

1996 में फिल्म 'गुनाहगार' की शूटिंग ऊटी में हुई। यहां पर मिथुन चक्रवर्ती और गिरिजा शंकर के साथ दिनेश सोलंकी।

अतीत के झरोखे...

1982 में डॉ. सुरेश यादव द्वारा लिखित नाटिका 'सपेरन' का मंचन महू-इंदौर में।

1982 में स्वर संगम संस्था द्वारा नृत्य नाटकों का अभूतपूर्व मंचन।

1991 में पहली फिल्म सावधान में अभिनय। चित्र पूणे में शूटिंग के दौरान का।